BSW – 125

सामाजिक व्यैक्तिक कार्य और सामाजिक समूह कार्य

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक समूह कार्य का परिचय 4

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

– इन्दिरा गाँधी

''स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण'' की चेयर के अन्तर्गत् विकसित कार्यक्रम

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

- Indira Gandhi

खंड

4

सामाजिक समूह कार्य का परिचय

इकाई 1

समाज समूह कार्यः ऐतिहासिक विकास

इकाई 2

समूह कार्य अभ्यास के सिद्धान्त, कौशल और आदर्श

इकाई 3

समूह कार्य प्रक्रिया में समाज कार्यकर्त्ता की भूमिका

विशेषज्ञ समिति

पी.के. गांधी
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. डी.के. दास
आर.ए. कॉलेज ऑफ सोशल वर्क, हैदराबाद

डॉ. पी.डी. मैथ्यू,
भारतीय सामाजिक संस्थान,
नई दिल्ली

डॉ. एलेस वड़वुम्मथला,
सी.बी.सी.आई.सेण्टर, नई दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. ए.पी.बर्नबास (सेवानिृत्त)
आई.आई.पी.ए.
नई दिल्ली

डॉ. रंजना सहगल,
इंदौर स्कूल ऑफ सोशल वर्क, इंदौर

डॉ. रमा वी. बारू
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

डॉ. जेरी थॉमस
डॉन बास्को
गुवाहटी

प्रो. सुरेन्द्र सिंह,
कुलपति
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी

प्रो. ए.बी. बोस (सेवानिवृत्त)
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू नई दिल्ली

प्रो. के.के. मुखोपाध्याय
दिल्ली विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. ए.आर.खान
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आर.पी. सिंह
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. ऋचा चौधरी
डॉ. बी.आर.अम्बेडकर कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. प्रभा चावला,
इग्नू, नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति (संशोधन)

प्रो. सुषमा बत्रा
समाज कार्य विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. आर.आर. पाटिल
समाज कार्य विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

डॉ. बीना एन्थोनी रेजी
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

डॉ. संगीता शर्मा धोर
डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. रोज़ नेम्बियाकिम
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. सौम्या
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. जी. महेश
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

डॉ. सायन्तनी गुइन
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल

इकाई लेखक

इकाई 1	डॉ. हेनरी रोज़ेरिओ, सेकरेड हार्ट कालेज, त्रिपत्तुर
इकाई 2	डॉ. अशोक सरकार, विश्वभारती विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल
इकाई 3	डॉ. अजीत कुमार, एम एस एस इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल वर्क, नागपुर

विषय संपादक

प्रो. एस कोहली
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली

कार्यक्रम संयोजक

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजक

प्रो. ग्रेशियस थॉमस
डॉ. आर.पी. सिंह
डॉ. अन्नु जे. थॉमस

सम्पादक हिन्दी

डॉ. आर. पी. सिंह,
इग्नू, नई दिल्ली

इकाई रूपांतरण

श्री जोसेफ वर्गीस
परामर्शदाता
इग्नू, नई दिल्ली

पुनरीक्षण

कु. ममता सिद्धार्थ
जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

अनुवाद संयोजक (हिन्दी)

डॉ. आर. पी. सिंह, इग्नू, नई दिल्ली

श्री रामकिशन
परामर्शदाता, इग्नू, नई दिल्ली

खण्ड सम्पादक

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
इग्नू, नई दिल्ली

सचिवालयी सहायक

सुश्री. माया कुमारी
श्री बलवन्त सिंह

पाठ्यक्रम निर्माण दल (संशोधन)

इकाई लेखक

इकाई 1	डॉ. हेनरी रोज़ेरिओ, सेकरेड हार्ट कालेज, त्रिपत्तुर
इकाई 2	डॉ. अशोक सरकार, विश्वभारती विद्यालय, पश्चिम बंगाल
इकाई 3	डॉ. अजीत कुमार, एम एस एस इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल वर्क, नागपुर

विषय संपादक

सुश्री स्नेहल दिवेकर
सी.एस.आर.डी.
अहमदनगर,
महाराष्ट्र

खंड संपादक

डॉ. सायन्तनी गुइन,
इग्नू, नई दिल्ली

कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. सायन्तनी गुइन,
इग्नू, नई दिल्ली

संपादक हिंदी

डॉ. नीतू,
शिक्षा विभाग,
नई दिल्ली।

मुद्रण निर्माण

अक्टूबर, 2020

© इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN -81-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, समाज कार्य विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर कम्पोजिंगः

खंड 4 का परिचय

यह **'सामाजिक व्यैक्तिक कार्य और सामाजिक समूह कार्य'** पाठ्यक्रम का चौथा खण्ड '**सामाजिक समूह कार्य का परिचय**' है। यह केस कार्य की तरह है, जिसके बारे में आप खण्ड एक में अध्ययन कर चुके हैं। इनका आप विभिन्न स्थापनों में प्रयोग कर सकते हैं। लोग समूह में रहते और समूह में कार्य करते हैं। तथा इसलिए समूहों के साथ घनिष्ठ संबंध होता है। समूह कार्य समूह और परस्पर संबंधों पर व्यक्ति की निर्भरता पर आधारित है।

पहली इकाई '**समाज समूह कार्यः ऐतिहासिक विकास**' में समाज कार्य की सम्पूर्ण स्वीकृत प्रणाली के रूप में इसके उद्‌गम से लेकर स्वीकार्य तक की समूह कार्य की ऐतिहासिक यात्रा की समीक्षा की गई है। दूसरी इकाई '**समूह कार्य अभ्यास के सिद्धान्त, कौशल और आदर्श**' से संबंधित है। इसमें समाज समूह कार्य के सुसंगत सिद्धान्तों, मूल्यों, कौशलों और दृष्टिकोणों का वर्णन किया है। तीसरी तथा अंतिम इकाई का नाम '**समूह कार्य प्रक्रिया में समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका**' है। इसमें समूह कार्य में समाज कार्यकर्त्ता की भूमिका के बारे में बताया गया है। इस इकाई में विभिन्न स्थापनों में इस प्रणाली की उपयोगिता की भी चर्चा की गई है।

इकाई 1 समाज समूह कार्य : ऐतिहासिक विकास

*डॉ. हेनरी रोज़ेरियो

रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 व्यक्तिगत तथा सामुदायिक परिवर्तन और विकास के लिए समूह की प्रासंगिकता

1.3 समूह कार्य की अवधारणा और परिभाषा

1.4 समूह कार्य का ऐतिहासिक विकास

1.5 समूह प्रक्रिया

1.6 सारांश

1.7 शब्दावली

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको समूह का प्रयोग करते हुए समाज समूह कार्य अभ्यास करने की पद्धति से परिचित कराना है। इस इकाई में समाज कार्य अभ्यास

* डॉ. हेनरी रोज़ेरियो, सेक्रेड हार्ट कॉलेज, त्रिपुत्तुर

की एक पद्धति के रूप में समूह कार्य के उद्–विकास और समूह में होने वाले समूह प्रक्रिया की गतिशीलता पर भी चर्चा की जाएगी।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- समूह के साथ समाज कार्य की अवधारणा की विवेचना और सामाजिक समूह कार्य की परिभाषा कर पाएँगे;
- समाज कार्य की एक पद्धति के रूप में समूह कार्य के ऐतिहासिक विकास की व्याख्या कर सकेंगे; और
- उस समूह प्रक्रिया की गतिशीलता को समझ तथा विश्लेषित कर पाएँगे जो पारस्परिक रूप में व्यक्ति और समूह को प्रभावित करती है।

1.1 प्रस्तावना

समूह कार्य उन कई पद्धतियों में से एक हैं जिनका प्रयोग प्रमुख रूप में मुखोन्मुख समूह के संदर्भ में किया जाता है और जो समूह को एक कार्रवाई माध्यम के रूप में भी इस्तेमाल करता है। यह एक ऐसा अनूठा, रोमांचक और गतिशील तरीका है जिसके माध्यम से लोगों को उनके जीवन में इच्छित बदलाव लाने में मदद की जा सकती है। समूहों का असरदार ढंग से इस्तेमाल करते हुए आज समाज कार्यकर्त्ता सभी आयु–वर्गों और क्षेत्रों के लोगों की इस मामले में मदद करते हैं कि वे अपनी सामाजिक सक्रियता को बढ़ाएँ और अपनी समस्याओं से और अधिक प्रभावी ढंग से निपटें। समाज कार्यकर्त्ताओं की संलिप्तता समाज कार्य व्यवहार के सभी क्षेत्रों में होती हैं और उन्हें मानसिक स्वास्थ्य, परिवार परामर्श, बाल कल्याण, संपत्ति/धन के दुरुपयोग, अपंगता और सुधार के क्षेत्रों में देखा जा सकता है। वे उस चिकित्सा दल के अत्यंत महत्त्वपूर्ण सदस्य होते हैं जो गंभीर किस्म की मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान के प्रयास में लगे होते हैं।

समाज कार्यकर्त्ता उन गैर–चिकित्सकीय क्षेत्रों में भी काम करते हैं जहाँ वे सामाजिक विकास के पोषण और सामाजिक एकीकरण को बढ़ाने का प्रयास करते हैं। वे बच्चों, युवाओं और समुदायों के बीच काम करते हैं और उन समुदाय–आधारित कार्यक्रमों का अभिन्न अंग होते हैं जिनका लक्ष्य सामुदायिक जुड़ाव की स्थितियों को सुलभ बनाना और सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति समुदाय को अधिक उत्तरदायी बनाना होता है। आज छोटे समूह को, विशेषकर कमजोर तबकों और हाशिये पर पड़े लोगों के कल्याण और विकास के लिए सामुदायिक बदलाव और विकास का एक उपयोगी माध्यम माना जाता है। मसलन, आत्म सहायता समूह और लघु ऋण तथा बचत जैसी गतिविधियों ने सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु गरीब तथा हाशिए पर पड़े लोगों के संगठन और स्त्री सशक्तीकरण के क्षेत्र में एक अभिन्न अथवा अनिवार्य कार्यक्रम का रूप ले लिया है।

1.2 व्यक्तिगत तथा सामुदायिक परिवर्तन और विकास के लिए समूह की प्रासंगिकता

समाज में मनुष्यों के बीच अनेक प्रकार के संवाद होते हैं। इनमें सबसे आम हैं दो व्यक्तियों– मेरे और आपके–बीच होने वाला संवाद। यदि हम अपनी दैनिक चर्चा को देखें तो हमें ज्ञात होगा कि पूरे दिन में हमारी जो गतिविधियाँ होती हैं उनमें से अनेक में अंर्तव्यैक्तिक संवाद की आवश्यकता होती है। साथ ही, हम अपने जीवन का काफी समय काम में और घर में छोटे समूह में बिताते हैं।

हम छोटे समूह की चिंता क्यों करें? हमें उनके बारे में क्यों जानना चाहिए? एक सामान्य स्तर पर, हम सभी को छोटे समूह के बारे में जानना जरूरी होता है जिससे हम विभिन्न समूह में एक सदस्य के रूप में अपनी भूमिका को और भी

प्रभावी ढंग से निभा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, व्यक्तिगत तथा सामुदायिक परिवर्तन और कार्रवाई में समूह की एक विशेष प्रासंगिकता होती है।

समाज कार्य के स्थापन (परिवेश) में समूह के साथ काम करने की मुख्य खूबी होती है आपसी मदद। यह माना जाता है कि लोग जब दूसरों के संपर्क में आते और संवाद करते हैं, तो सहायता लेने और देने दोनों ही स्थितियों में वे विकास करते हैं और बदलते भी हैं। इस प्रक्रिया की आंशिक मान्यता यह होती है कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरों से केवल ले ही नहीं सकता बल्कि उन्हें कुछ विशेष दे भी सकता है। नॉर्दन ने इस पारस्परिक सहायता प्रक्रिया से निकलने वाली और व्यक्तिगत विकास तथा परिवर्तनों में सहायता करने वाली शक्तियों का सारांश इस प्रकार प्रस्तुत किया है:

1) **परस्पर संबल अथवा समर्थन:** जब सदस्य एक–दूसरे को संबल प्रदान करते हैं और समूह कार्यकर्त्ता से अतिरिक्त संबल प्राप्त करते हैं, तो एक वातावरण बनता है जिसमें सदस्य अपने भावों को व्यक्त कर सकते हैं और नए–नए विचारों और व्यवहारों को आजमा सकते हैं।

2) **जुड़ाव:** सदस्य एक–दूसरे के साथ जो प्रभावी संबंध बनाते हैं उसके परिणामस्वरूप यह गतिशील स्थिति आती है। समूह तथा एक–दूसरे के लिए प्रतिबद्धता इसी शक्ति का परिणाम होती है।

3) **संबंध:** सदस्यों को बदलाव के लिए मदद देने की इस चरम स्थिति के लिए संबल और चुनौती के मिश्रण की आवश्यकता होती है।

4) **सार्वभौमीकरण:** सदस्यों को यह पता चलता है कि वह एकमात्र व्यक्ति नहीं है जो इस प्रकार से अनुभव अथवा व्यवहार कर रहा/रही है। व्यक्ति को यह जानकर सांत्वना मिलती है कि वह अकेला अथवा अकेली नहीं है।

5) **आशा का संचारः** समूह व्यक्तियों को अन्य व्यक्तियों के संपर्क में आने का अवसर देते हैं। ये अन्य व्यक्ति आशावादी भी हो सकते हैं और यह भी हो सकता है कि उन्होंने कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य किए हों अथवा अत्यंत महत्त्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त किए हों। एक पूर्ण इकाई के रूप में और कार्यकर्त्ता की सहायता से, समूह सदस्यों के लिए कुछ अत्यंत सकारात्मक अपेक्षाएँ प्रदान कर सकता है।

6) **परोपकारः** जब सदस्यों में यह जागरूकता आ जाती है कि उनके पास दूसरों को देने के लिए कुछ विशेष है– चाहे वह सुझाव हों, कोई वर्णन अथवा अनुभव हों, या बस संबल और चिंता हो– तो उसके परिणामस्वरूप उनमें आत्म–सम्मान पैदा होता है।

7) **ज्ञान तथा कौशल–अर्जनः** समूह दूसरों से सीखने, और एक सुरक्षित वातावरण में सोचने तथा व्यवहार करने के नए तरीकों को आजमाने के अवसर प्रदान करता है।

8) **विरंचनः** जब सदस्य ऐसे अन्य व्यक्तियों के आगे अपने मन की बात रखते हैं, अपने विचारों को व्यक्त करते हैं जो उन्हें स्वीकार करने वाले हैं, तो उससे उनको निःशुल्क ऊर्जा प्राप्त होती है और वह वांछित परिवर्तनों की दिशा में अपना काम जारी रख सकते हैं।

9) **सुधारात्मक भावनात्मक अनुभवः** जब व्यक्ति समूह के स्थापन (परिवेश) में आता है तो वह उसे एक प्राथमिक समूह–अनुभव देता है जिसमें वह अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के प्रति अपनी भावना और संबंध के तरीकों को सुधार सकता है और उन्हें नए तरीके से अनुभव कर सकता है; और इस प्रकार समूह पहले के अपक्रियात्मक संबंधों को सुधार देता है। प्रायः इसके लिए कार्यकर्त्ता अथवा अन्य सदस्यों के साथ अंतरण के माध्यम से काम करना होता है। अंतरण की ये स्थितियाँ तब बनती हैं जब सदस्य समूह में किसी

अन्य व्यक्ति को एक महत्त्वपूर्ण अन्य व्यक्ति के रूप में देखता है जिसका अनुभव उसने अपने जीवन में पहले ही किया होता है।

10) **यथार्थ परीक्षणः** समूह ऐसा स्थापन (परिवेश) देते हैं जिसमें सदस्यगण अपने दृष्टिकोणों और भावनाओं का परीक्षण और मिलान कर सकते हैं। इस प्रक्रिया से दृष्टिकोणों की विकृतियों को सुधारने अथवा सही ठहराने को बढ़ावा मिलता है।

11) **समूह सदस्यता का निर्धारक गुण और दबावः** समूह के अनुभव और प्रतिमान सदस्य को निश्चित सीमाओं के भीतर कार्य करने में मदद देते हैं, और प्रायः उसे अधिकारी वर्ग के साथ प्रतिरोध को कम करने, आवश्यक सीमाओं को स्वीकार करने और दूसरों को अच्छा लगने वाला व्यवहार करने का अवसर देते हैं।

भागीदारी शिक्षण दृष्टिकोण शिक्षण तथा कार्रवाई (Participatory Learning and Action - PLA), जैसे विकास के विभिन्न भागीदारी शिक्षण दृष्टिकोण तो सामुदायिक बदलाव के तौर पर अधिकार समूहों की सक्षमता पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार के दृष्टिकोणों में, अज्ञानी, कमजोर और असंगठित लोगों के छोटे समूहों को छोटे समूहों में संगठित किया जाता है। इन समूहों को संगठन, सूचना, शक्ति और संपर्क जगत से युक्त किया जाता है जिससे वे उन शोषक कुलीनों से निपट सकें जिनके पास अधिकांश संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण होता है। सामाजिक बदलाव की इस प्रक्रिया में गरीबों और कमजोरों को सूचना, लामबंदी और संगठन से युक्त किया जाता है जिससे वे अपने साझा हितों की पहचान करके उनके लिए आवाज उठा सकें और संघर्ष कर सकें। ऐसा छोटे समूह वाली स्थिति में सबसे अधिक संभव होता है। सामुदायिक परिवर्तन और विकास के प्रति समूहों की प्रासंगिकता तिहरी है।

1) **छोटे समूह शिक्षण के सशक्त वाहक हैं:** छोटे समूह में हम अपने अनुभवों को आपस में बाँट सकते हैं और उन पर विचार कर सकते हैं। छोटे समूह में अन्य सदस्य मुझे मेरे ही बारे में जानकारी दे सकते हैं। दूसरों के साथ संवाद अथवा मेल–जोल की प्रक्रिया से छोटे समूह में शिक्षण (सिखाने) को प्रोत्साहन मिलता है। यह समूह अंर्तदृष्टि पैदा करने और अनुभवों का विश्लेषण करने के संदर्भ में एक अखाड़े का काम करता है। समूह कार्य की प्रयोगात्मक प्रकृति के कारण यह आवश्यक हो जाता है कि सदस्यगण छोटे समूहों में कार्य करें और सीखें।

2) **छोटे समूह कार्रवाई और बदलाव का आधार हैं:** समूह कार्य में, सीखने की क्रिया को कार्रवाई तथा नई कार्रवाईयों में बदलाव की ओर एक कदम के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार, सदस्यगण समूहों में नई कार्रवाईयों के साथ प्रयोग कर सकते हैं। तब वे उन कार्रवाईयों का प्रयोग समूह कार्य वाली स्थिति के बाहर कर सकते हैं। समूह कार्य की प्रकृति ऐसी है कि यह सामूहिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करता है, और इसलिए समूह इस प्रकार की सामूहिक कार्रवाईयों की योजना बनाने और समझने के लिए संदर्भ बन जाते हैं।

3) **छोटा समूह संगठनों का निर्माण–तत्व होता है:** सभी प्रकार के संगठन छोटे समूहों पर निर्भर करते हैं। जन संगठनों का विकास छोटे समूहों के निर्माण–तत्वों से होता है। जब कार्यकर्त्ता आदिवासियों, स्त्रियों और भूमिहीन श्रमिकों के साथ उनके संगठन बनाने के लिए काम करते हैं, तो वे छोटे समूह से शुरू करते हैं। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण सभाएँ, युवा जागरण और शिविर भी समूह के उदाहरण हैं। इस प्रकार, हम समूह का एक मजबूत आधार तैयार करके जन संगठनों को मजबूत कर सकते हैं। और, बहिरंग क्षेत्र (फील्ड) कार्यकर्त्ता के रूप में हम सारा समय छोटे समूहों के साथ क्षेत्र (फील्ड) में काम करते हैं। क्षेत्र (फील्ड) में हमारी भूमिका अधिकतर छोटे

समूहों को मजबूत करने और उनसे प्रभावी ढंग से काम करवाने की होती है।

इस प्रकार, छोटे समूह फील्ड में हमारे काम के दौरान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। समूह कार्य में सीखने को अनिवार्य संदर्भ देने का काम समूह करते हैं। हम समूहों में और समूहों के माध्यम से सीखते हैं।

बोध प्रश्न I

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) व्यक्तियों की वृद्धि और विकास में समूह किस प्रकार सहायता करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 समूह कार्य की अवधारणा और परिभाषा

समूह कार्य तो परिवेश में अथवा सदस्य के अंतःव्यैक्तिक अथवा अंर्तव्यैक्तिक संबंधों में बदलाव लाने का एक तरीका होता है। गार्विन के अनुसार, (सामाजिक समूह कार्य) सामुदायिक कार्य की सभी गतिविधियों के साझा लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह दृष्टिकोण का उपयोग करता हैः (1) सदस्यों को उनकी स्थिति से निपटने के अपक्रियात्मक तरीके विकसित करने से रोकने के लिएय; (2) कलात्मक, बौद्धिक तथा अन्य उद्यमों का उपयोग और उन में सदस्यों की संलिप्तता बढ़ाने के लिए; और (3) उन सदस्यों का पुनर्वास करने के लिए जिनकी सामाजिक और व्यक्तिगत कार्यप्रणाली में खामियाँ आ गई हैं।

समूह कार्य है क्या, इसे समझने का एक तरीका है यह देखना कि समूह कार्यकर्त्ता करता क्या है। इसे अमेरिकन एसोशिएशन ऑफ ग्रुप वर्कर्स की रिपोर्ट– समूह कार्यकर्त्ता के प्रकार्यों की परिभाषा (1949)–में स्पष्ट समझाया गया है। यहाँ हम इसे उद्धृत कर रहे हैंः

''समूह कार्यकर्त्ता विभिन्न प्रकार के समूह को इस प्रकार से कार्य करने के योग्य बनाता है कि समूह अंर्तक्रिया और कार्यक्रम गतिविधियाँ दोनों ही व्यक्ति की वृद्धि और वांछनीय सामुदायिक लक्ष्य की प्राप्ति में योगदान करते हैं।

समूह कार्यकर्त्ता के उद्देश्यों में व्यक्तिगत क्षमता और आवश्यकता के अनुसार व्यक्तिगत वृद्धि का प्रावधान सम्मिलित रहता है। इसके अतिरिक्त, उनमें सम्मिलित रहता है। अन्य व्यक्तियों, समूहों और समाज के साथ व्यक्ति का समायोजन; समाज के सुधार के प्रति व्यक्ति की प्रेरणा–प्रोत्साहन; और अपनी ही योग्यताओं, अधिकारों और दूसरों की भिन्नताओं को व्यक्ति की मान्यता।

समूह कार्यकर्त्ता अपनी भागीदारी के माध्यम से समूह प्रक्रिया को चालू करने का लक्ष्य बनाता है जिससे निर्णय आए तो वह ज्ञान, और विचारों, अनुभवों तथा ज्ञान की साझेदारी और समावेश के परिणामस्वरूप आए, समूह के भीतर अथवा बाहर से बनने वाले वर्चस्व के परिणामस्वरूप नहीं।

अनुभव के माध्यम से सदस्य अन्य समूह और वृहत्तर समुदाय के साथ उन संबंधों को सृजित करने का लक्ष्य बनाता/बनाती है जिससे उत्तरदायित्वपूर्ण नागरिकता, समुदाय में सांस्कृतिक, धार्मिक, अथवा विशेष समूह के बीच आपसी समझ, और लोकतांत्रिक लक्ष्यों के प्रति हमारे समाज के निरंतर सुधार में भागीदारी का योगदान होता है।

इस प्रकार के नेतृत्व का निर्देशक उद्देश्य एक लोकतांत्रिक समाज की सामान्य मान्यताओं पर निर्भर करता है; अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वतंत्र रहकर अपनी क्षमताओं को पूरा करने, दूसरों को सम्मान और सराहना करने और हमारे लोकतांत्रिक समाजों के निरंतर सुधार और रख–रखाव में अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को अपनाने का अवसर।

समूह कार्य के व्यवहार में निहित होता है व्यक्तिगत तथा सामूहिक व्यवहार का और सामाजिक स्थितियों और सामुदायिक संबंधों का ज्ञान जो आधुनिक समाज विज्ञानों पर आधारित होता है।

इस ज्ञान के आधार पर समूह कार्यकर्त्ता उस समूह को योगदान करता है जिसमें वह नेतृत्व की कुशलता के साथ काम करता है। इससे, सदस्यों को अपनी क्षमताओं का पूरा पूरा उपयोग करने और सामाजिक दृष्टि से रचनात्मक गतिविधियाँ करने का अवसर मिलता है।

सदस्य समूह के भीतर और समूह तथा उसके आसपास के परिवेश के बीच भी कार्यक्रम संबंधी गतिविधियों और व्यक्तियों की पारस्परिक क्रिया के प्रति जागरूक होता है।

प्रत्येक की रुचियों तथा आवश्यकताओं के अनुसार वह उनकी सहायता करता है कि वे समूह के साथ रहकर कार्यक्रम की गतिविधियों से संतुष्टि और सामाजिक संबंधों से उपलब्ध आनंद और व्यक्तिगत विकास, और एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में भागीदार बनने का अवसर प्राप्त कर सकें।

समूह कार्यकर्त्ता समूह के साथ अपने संबंधों, एक साधन के रूप में कार्यक्रम के ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सामूहिक प्रक्रिया की अपनी समझ का विवेकपूर्ण उपयोग करता है – अपने सहकर्मी व्यक्तियों तथा समूहों और उन वृहत्तर सामाजिक मूल्यों को भी पहचानता है जिनका वह प्रतिनिधित्व करता है।

स्टॉब–बर्नस्कोनी (1991) के अनुसार, समूह के साथ समाज कार्य के कम से कम तीन अर्थ होते हैंः (क) समूह के भीतर कार्य क्योंकि अपने सदस्यों के लिए यह समस्या के समाधान और सहायता की प्रगाढ़तम संसाधन व्यवस्था है; (ख) एक समूह के साथ कार्य, जिसकी संरचना और प्रक्रिया मुख्य व्यक्तिनिष्ठ अथवा वस्तुनिष्ठ समस्या क्षेत्र होता है; और (ग) किसी अन्य सामाजिक व्यवस्था में समूह के बाहर लक्ष्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप में समूह के साथ कार्य। इसके अतिरिक्त, समूह कार्य को केवल मुवक्किलों की सहायता तक सीमित नहीं रखा जा सकता, बल्कि व्यक्तिगत समूह कार्यकर्त्ता को मुवक्किलों के साथ अपने काम में और भी प्रभावी बनाने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इसका इस्तेमाल संगठनों को अंतःसांगठनिक और अंतरसांगठनिक टकराव को कम करने, समाप्त करने और संभालने में मदद पहुंचाने के लिए भी किया जा सकता है। इस प्रकार, समूह कार्य पद्धति केवल मुवक्किलों को नहीं बल्कि संगठनों को भी उनके मुवक्किल समूहों को सामाजिक परिवेश को बदलने की दिशा में और भी प्रभावी ढंग से मदद करने योग्य बनाती है। इस प्रकार, अन्य सहायक अभिकरणों अथवा अभिकर्त्ताओं के साथ सहयोग, नियोजन और सामाजिक बदलाव को भी समूह कार्य तकनीक के उपयोग से प्रभावी ढंग से निष्पादित किया जा सकता है।

अब हम यह देखते हैं कि समाज समूह कार्य की परिभाषा विभिन्न लोगों ने किस प्रकार की है।

समाज समूह कार्य समाज कार्य की एक पद्धति है जो उद्देश्यपूर्ण समूह अनुभवों के माध्यम से व्यक्तियों को उनकी सामाजिक कार्यशीलता को बढ़ाने में और उनकी

व्यक्तिगत, समूहगत अथवा समुदायगत समस्याओं से और प्रभावी ढंग से निपटने में मदद करती है (मार्जरी मर्फ़ी, 1959)।

समाज समूह कार्य एक ऐसी पद्धति है जिसके माध्यम से सामाजिक अभिकरण के परिवेश में समूहों में व्यक्तियों की मदद एक कार्यकर्त्ता करता है जो कार्यक्रम संबंधी गतिविधियों में उनकी पारस्परिक क्रिया को निदेशित करता है जिससे वे व्यक्तिगत, समूहगत और समुदायगत विकास के लक्ष्य में अपनी आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुसार विकास के अवसरों का अनुभव कर सकें और दूसरों के साथ स्वयं को संबंधित कर सकें (ट्रेकर, 1955)।

समूह कार्य एक व्यापक व्यावसायिक अभ्यास है जिसका संबंध समूह के परिवेश से होता है। इसमें एक सक्षम व्यावसायिक कर्मकार एक अंतरनिर्भर व्यक्ति समूह को समूह सिद्धान्त और प्रक्रिया के अनुप्रयोग से उनके पारस्परिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद देता है, जो व्यक्तिगत, अंर्तव्यैक्तिक अथवा कार्य–संबंधित प्रकृति के हो सकते हैं (एसोसिएशन फॉर स्पेशलिस्ट्स इन ग्रुप वर्क, 1990)।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज समूह कार्य की अवधारणा की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 समूह कार्य का ऐतिहासिक विकास

समाज कार्य के अभ्यास अथवा व्यवहार में समूहों के संभाव्य प्रयोगों से संबंधित एक व्यापक परिप्रेक्ष्य के विकास के लिए उस विकास को समझना उपयोगी होगा जो वर्षों के दौरान समूह के अध्ययन और समूह कार्य के अभ्यास में हो चुके हैं। इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से आपको एक सुदृढ़ आधार भी मिलेगा जिसपर प्रभावी समूह कार्य अभ्यास के लिए एक ज्ञान–आधार बनाया जा सकता है।

दो प्रकार की पड़तालों ने समूह के प्रति हमारी समझ को बढ़ाया है। पहली प्रकार की पड़ताल उन समाज विज्ञानियों की देन हैं जिन्होंने समूह का अध्ययन करने के लिए प्रयोगशालाओं का अध्ययन किया है अथवा समुदाय के परिवेश में समूह की कार्यप्रणाली का पर्यवेक्षण किया है। दूसरे प्रकार की पड़ताल उन समूह कार्यकर्त्ताओं की देन है जिन्होंने यह जाँच की है कि समाज कार्य, मनोविज्ञान, शिक्षा और मनोरंजन जैसे व्यवहार परिवेशों में समूह किस प्रकार कार्य करते हैं। इन दोनों ही प्रकार की पड़तालों का परिणाम अनेक प्रकार के विभिन्न समूहों के साथ काम करने के तरीकों के सुधार के रूप में हमारे सामने आया है।

समाज विज्ञानियों ने अनुसंधान संबंधी जो एक बुनियादी प्रश्न पूछा है। वह यह था कि एक समूह का अंग होने के नाते किसी व्यक्तिगत समूह सदस्य पर किस हद तक प्रभाव पड़ता है। प्रारंभिक निष्कर्षों से यह पता चलता है कि दूसरों की उपस्थिति एक व्यक्तिगत समूह सदस्य पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव छोड़ती है और ऐसी शक्तियों का निर्माण करती है कि उसे व्यक्तिगत सदस्यों के व्यवहार और निर्णय के

प्रतिमानों के अनुसार स्वयं को ढालना पड़ जाता है। ले बॉन ने 1910 में उन शक्तियों की बात की थी जिनका निर्माण समूह अंतःक्रिया के माध्यम से समूह संक्रमण' और 'समूह मानस' के रूप में हुआ था। इससे यह मान्यता बनी थी कि समूह के अंदर के लोग व्यक्तियों की अपेक्षा अलग प्रकार से प्रतिक्रिया करते हैं।

प्राथमिक समूह की अवधारणा भी समूहों के अध्ययन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण योगदान था। कूली ने 1909 में प्राथमिक समूह को परिवार अथवा मित्रता जैसे एक छोटे अनौपचारिक समूह के रूप में परिभाषित किया था, जिसका सदस्यों के मूल्यों, नैतिक स्तर तथा आदर्शक व्यवहार पर जबरदस्त प्रभाव होता है। इस प्रकार, प्राथमिक समूह को समाजीकरण तथा विकास को समझने की प्रक्रिया में एक अनिवार्य तत्व के रूप में देखा गया। उदाहरण के लिए, ऑलपोर्ट (1924) ने देखा कि दूसरों की उपस्थिति कार्य निष्पादन में सुधार लाने वाली थी।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद, समाज विज्ञानियों ने समुदाय में सक्रिय समूह का भी अध्ययन शुरू कर दिया। इनमें से एक सबसे पहला समाज विज्ञानी फ्रेडरिक ग्रैशर (1927) था जिसने शिकागो क्षेत्र में किशोर अपराधियों के गिरोहों के अध्ययन के लिए गिरोहों के साथ दोस्ताना व्यवहार करते हुए उनके आंतरिक अभियानों का पर्यवेक्षण किया था। थ्रैशर ने देखा कि गिरोह के प्रत्येक सदस्य की समूह के भीतर एक विशेष हैसियत थी और इसका संबंध गिरोह में उस सदस्य की भूमिका से था। थ्रैशर ने गिरोह के भीतर बनने वाली संस्कृति की ओर भी ध्यान खींचा और यह कहा था कि गिरोह की एक साझा संहिता होती थी और इसका पालन समूह के मत, जोर–जबरदस्ती और शारीरिक दंड के बल पर करवाया जाता था। इस अध्ययन तथा अन्य अध्ययनों ने बस्ती के मकानों, पड़ोस के केन्द्रों और युवा संगठनों में युवाओं के साथ समूह कार्य के व्यवहार का तरीका ही बदल दिया है।

बाद में कुछ समूह कार्यकर्त्ताओं ने एक ग्रीष्म शिविर में लड़कों के समूह के प्राकृतिक पर्यवेक्षण पर निर्भर करते हुए यह दिखा दिया कि जुड़ाव और अंर्तसामूहिक शत्रुभाव का निर्माण कैसे होता है। समाज विज्ञानियों ने उद्योग तथा

अमेरिकी सेना में हुए अध्ययनों से समूहों में लोगों के व्यवहार के बारे में और भी सीखा।

फिर 1950 के दशक में, छोटे समूहों से संबंधित ज्ञान के क्षेत्र में विस्फोट हुआ। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में जिन प्रमुख विषयों का विकास हुआ उनमें अनुरूपता, संचार तथा अंतक्रिया के तरीके, नेतृत्व, अंर्तव्यैक्तिक प्राथमिकता और सामाजिक दृष्टिकोण शामिल हैं जो समाज कार्य में समूह प्रक्रिया को निपटाने के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण घटक हैं। यहाँ मनोविश्लेषण सिद्धान्त, शिक्षण सिद्धान्त, क्षेत्र (फील्ड) सिद्धान्त, सामाजिक विनिमय सिद्धान्त और व्यवस्था सिद्धान्त उल्लेखनीय हैं जो समूह की कार्य प्रणाली की व्याख्या करते हैं। इसके विषय में हम कहीं और विस्तार से चर्चा करेंगे।

केस कार्य का प्रारंभ उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में इंग्लैण्ड और अमेरिका के धर्मार्थ संगठनों में हुआ और समूह कार्य अधिकतर इंग्लैण्ड और अमेरिका के मलिन बस्ती के सेवागृहों में हुआ। समूह कार्य का प्रयोग राजकीय मनोचिकित्सा संस्थानों में उपचार के लिए भी किया गया किन्तु समूह कार्य में अधिक रुचि उन लोगों ने दिखाई जिन्होंने मलिन बस्ती के सेवागृहों और युवा सेवा अभिकरणों में समाजीकरण समूहों, प्रौढ़ शिक्षा समूहों और मनोरंजन समूहों का नेतृत्व किया था।

अक्सर यह माना जाता है कि समूह कार्य की उम्र केस कार्य से बहुत कम है, किन्तु वस्तुतः समूह कार्य अभिकरणों की शुरुआत केस अध्ययन अभिकरणों के कुछ ही वर्षों बाद हो गई थी। समूह कार्य का पहला पाठ्यक्रम क्लारा केंसर ने क्लीवलैण्ड के वेस्टर्न रिजर्व विश्वविद्यालय की समाज कार्य विद्यापीठ में शुरू किया जब वह 1935 में न्यूयार्क चली गईं, तो ग्रेस कॉयल ने इस पाठ्यक्रम के विकास को जारी रखा। इसे आंशिक रूप में एक पद्धति और अंशतः एक अभ्यास–क्षेत्र के तौर पर पढ़ाया जाता था। 1937 तक, लगभग दस स्कूल समाज कार्य में विशेष पाठ्यक्रम शुरू कर चुके थे। किन्तु, स्कवाट्रज के अनुसार इन दोनों में वास्तविक ऐतिहासिक अंतर यह है कि केस कार्य को तो जल्दी ही समाज कार्य व्यवसाय के

साथ जोड़कर देखा जाने लगा किन्तु समूह कार्य को व्यवसाय से औपचारिक रूप में जुड़ने के लिए 1935 में संपन्न 'राष्ट्रीय समाज कार्य सम्मेलन' तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। 1936 में समूह कार्य के अभ्यास हेतु अमेरिकी एसोसिएशन का गठन समूह कार्य के दर्शन और व्यवहार दोनों को स्पष्ट और परिष्कृत करने के लक्ष्य के साथ किया गया। 1939 तक समूह कार्य को राष्ट्रीय समाज कार्य सम्मेलन में एक पृथक विषय के रूप में लिया जाने लगा। 1940 के दशक के दौरान समूह कार्य को समाज कार्य व्यवसाय के साथ जोड़कर देखने का चलन और बढ़ गया यद्यपि समूह कार्यकर्त्ताओं ने 1950 के दशक तक मनोरंजन, प्रौढ़ शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य के साथ ढीले–ढाले संबंध जारी रखे। 1950 के दशक में ही, समूह कार्यकर्त्ताओं ने छह अन्य व्यावसायिक समूहों के साथ मिलकर 1955 में 'राष्ट्रीय समस्या कार्यकर्त्ता एसोसिएशन' का गठन कर लिया।

मलिन बस्ती के सेवा–गृहों में समूह कार्य का प्रयोग धर्मार्थ संगठनों में केस कार्य की शुरुआत कोई दुर्योग नहीं था। समूह कार्य और मलिन बस्ती के सेवागृहों ने नागरिकों को शिक्षा, मनोरंजन, समाजीकरण और सामुदायिक संलिप्तता का अवसर दिया था। गरीबों की समस्याओं के निदान और उपचार पर प्रमुख रूप में ध्यान केन्द्रित करने वाले धर्मार्थ संगठनों के विपरीत, मलिन बस्ती सेवागृहों ने समूहों के रूप में नागरिकों को एक अवसर प्रदान किया जिसके माध्यम से वे इकट्ठे होकर अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकते थे, एक–दूसरे को संबल दे सकते थे और सामाजिक बदलाव के लिए अपनी संगति से प्राप्त अधिकार का प्रयोग भी कर सकते थे।

केस कार्य में जहाँ देने वाले और पाने वाले के बीच भारी अंतर होता है, वहीं उसके विपरीत समूह कार्य का विकास आत्म–सहायता के विचार, एक सामूहिक प्रकृति की आत्म–सहायता के विचार से हुआ। जहाँ परोपकार का उद्‌गम मध्यम वर्ग में हुआ वहीं पारस्परिक आत्म सहायता का विकास, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, पारस्परिक सहायता और संबल की आवश्यकता से हुआ। ठोस संसाधनों

के प्रावधान पर और मनोगतिक दृष्टिकोणों से विकसित अंर्तदृष्टि पर निर्भर करने वाले केस अध्ययन कार्यकर्त्ताओं की तुलना में समूह कार्यकर्त्ता सदस्यों को सक्रिय करने के लिए कार्यक्रमगत गतिविधियों पर निर्भर करते थे। सभी प्रकार की कार्यक्रमगत गतिविधियाँ वह माध्यम थीं जिसके जरिए समूह अपने लक्ष्य प्राप्त करते थे। शिविरबंदी, गायन, सामूहिक चर्चा, खेलों और कला तथा शिल्प जैसी गतिविधियों का प्रयोग मनोरंजन, समाजीकरण, शिक्षा, सहारे और पुनर्वास के लिए किया जाता था। जहाँ केस अध्ययन का पूरा ध्यान समस्या के समाधान और पुनर्वास पर होता था, वहीं उसके विपरीत समूह कार्य से संबंधित गतिविधियों का इस्तेमाल समस्याओं के समाधान के साथ–साथ मनोरंजन के लिए भी होता था। इस प्रकार, मलिन बस्ती सेवा–गृह के कार्य से विकसित हुई समूह कार्य पद्धति का केन्द्र तथा लक्ष्य केस कार्य से भिन्न था।

केस कार्य और समूह कार्य के अंतर को सहायक संबंधों में भी स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। केस कार्यकर्त्ता औद्योगीकरण के सबसे अधिक वंचित प्रभावितों को ढूँढ़ते थे और 'योग्य' मुवक्किलों को संसाधन उपलब्ध कराते और गुणवान, मेहनती नागरिकों की मिसाल के तौर पर व्यवहार करते थे। यद्यपि समूह कार्यकर्त्ता उन लोगों के साथ भी काम करते थे जो अपंग और गरीब होते थे, फिर भी वे केवल सबसे अधिक गरीबों अथवा सबसे अधिक समस्याग्रस्तों पर ही अपना ध्यान नहीं केन्द्रित करते थे। वे 'सदस्यों से मुवक्किल' शब्द को अधिक पसंद करते थे। वे सदस्य की कमजोरी की अपेक्षा उसकी मजबूती पर जोर देते थे। सहायता को एक साझा संबंध के रूप में देखा जाता था जिसमें समूह कार्यकर्त्ता और समूह सदस्य अपने समुदाय के लिए अपनी साझा चिंताओं से संबंधित समझ और काम के लिए साथ–साथ काम करते थे। जब इन चिंताओं की पहचान हो जाती थी तो समूह सदस्य एक–दूसरे को सहारा और सहायता देने का काम करते थे और कार्यकर्त्ता समाज की माँगों और समूह सदस्यों की आवश्यकताओं के बीच मध्यस्थ का कार्य करते थे।

साझा अंतःक्रिया, साझा अधिकार और साझा निर्णय के कारण समूह सदस्य के मत्थे वे माँगें आ पड़ती थीं जिनका अनुभव केस कार्यकर्त्ता को नहीं करना होता था। समूह कार्यकर्त्ताओं को प्रायः ही जटिल तथा तेज समूहगत अंतःक्रियाओं के दौरान शीघ्रता से कार्रवाई करनी होती थी और सभी समूह सदस्यों के कल्याण के प्रति भी जागरूक रहना होता था। समूह सदस्यों की संख्या, यह तथ्य कि वे सहायता के लिए एक–दूसरे की ओर मुड़ सकते हैं, और समूहों में प्रोत्साहित लोकतांत्रिक किस्म की निर्णय करने की प्रक्रिया का यह अर्थ होता था कि समूह कार्यकर्त्ताओं को उन कौशलों को विकसित करना होता था जो केस कार्यकर्त्ताओं के कौशलों से भिन्न थे।

वर्ष 1910 और 1920 के बीच, जो लोग प्रौढ़ शिक्षा, मनोरंजन और समुदाय कार्य से संबद्ध थे उन्हें समूह कार्य की पूरी संभावित क्षमता का अहसास होने लगा। वे यह समझने लगे कि समूहों का उपयोग लोगों को उनके समुदायों में भागीदारी करवाने के लिए किया जा सकता है जिससे वे लोगों के जीवन को समृद्ध कर सकते और उन व्यक्तियों को सहारा दे सकते हैं जिनके प्राथमिक संबंध संतोषजनक नहीं हैं। वे सामाजिक कौशल और समस्या का समाधान करने के कौशल सीखने में लोगों की सहायता करने की समूहों की संभावित क्षमता को भी जान गए। उन्होंने समूह का उपयोग किशोर अपराध रोकने और उन लोगों के पुनर्वास के लिए करना शुरू कर दिया जो कुसमायोजित थे। समूह कार्य का आधार बनाने वाले संगठन आत्म–सहायता और अनौपचारिक मनोरंजन से संबद्ध थेः मलिन बस्तियों के सेवा गृह, वाई संगठन, स्काउट, कैम्प फायर गर्ल्स, यहूदी केन्द्र और शिविर। बाद में इन्हें 'समूह कार्य अभिकरण' का नाम दिया गया। इन सेवाओं को एक सूत्र में बांधने वाली अवधारणाएँ हैंः छोटे समूह में भागीदारी, जीवन की लोकतांत्रिक शैली, सामुदायिक उत्तरदायित्व और एक विश्वव्यापी प्रयास में सदस्यता।

वर्ष 1920 के प्रारंभ में मैरी रिचमंड ने समूह के साथ कार्य करने की संभावनाओं को पहचाना और छोटे समूह के मनोविज्ञान के बारे में लिखा। एक राजनीति विज्ञानी मैरी पी. फॉलेट ने 1926 में 'द न्यू स्टेट' पुस्तक में लिखा कि सामाजिक समस्याओं के समाधान प्रतिवेश (पास पड़ोस) में और सामाजिक हित के आसपास समूह के निर्माण से उभरेंगे। प्रगतिशील शिक्षा के विचार को जन्म देने वाले जॉन डेवेडी ने भी 1933 में छोटे समूहों की उपयोगिता को देख लिया था। उसके अनुसार, सामाजिक समूह कार्य पद्धति तो अवकाश के क्षणों में छोटे अनौपचारिक समूह में प्रगतिशील शिक्षा के सिद्धान्तों का अनुप्रयोग है। वास्तव में, समूह कार्य तो समुदाय संगठन पद्धति और नागरिक भागीदारी की इसकी अवधारणा से अत्यंत निकट से संबद्ध था।

समूह कार्यकर्त्ताओं ने समूहों का अधिकाधिक प्रयोग मनोविश्लेषण से तथा अहं मनोविज्ञान से और अंशतः द्वितीय विश्व युद्ध की स्थिति से प्रभावित होकर मानसिक स्वास्थ्य के परिवेश में उपचार तथा सुधार करने के लिए 1940 और 1950 के दशक में शुरू किया था। वस्तुतः, उस दौरान युद्ध के कारण मानसिक रूप में अपंग हुए सैनिकों का उपचार करने के लिए प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं की भारी कमी हो गई थी। इसे 1950 के दशक में मनोचिकित्सकीय परिवेश में समूहों के प्रयोग में जारी रुचि ने और गति दी।

यद्यपि 1940 और 1950 के दशकों में व्यक्तिगत समूह कार्यकर्त्ता की कार्यप्रणाली को सुधारने के लिए समूह का सदुपयोग करने पर जोर बढ़ गया था, फिर भी मनोरंजन तथा शिक्षा के उद्देश्यों के लिए समूह का प्रयोग करने में रुचि बनी रही। ऐसा विशेषकर यहूदी समुदाय केन्द्रों और गर्ल्स स्काउट्स तथा वाइ एम सी ए जैसे युवा संगठनों में हुआ। 1940 और 1950 के दशकों में, समूह का प्रयोग अनेक प्रतिवेश केन्द्रों और समुदाय अभिकरणों में सामुदायिक विकास और समाज कार्य के उद्देश्यों से भी किया जाता था। साथ ही, एक सामाजिक परिघटना के रूप में छोटे समूहों के अध्ययन में भी वृद्धि हुई थी।

युद्ध के बाद के वर्षों में समूह कार्य के साहित्य में अपार वृद्धि हुई। गड विल्सन की 'सोशल ग्रुप वर्क प्रैक्टिस' (1949), हार्ले बी. ट्रेकर की 'सोशल ग्रुप वर्क' (1949), ग्रेस कॉयल की 'ग्रुप वर्क विद अमेरिकन यूथ' (1948), और गिसेला कोनोरका की 'थिरेप्यूटिक ग्रुप वर्क विद चिल्ड्रन' (1949) केवल दो वर्ष की अवधि में प्रकाशित हो गई। इन पुस्तकों में स्वस्थ से अस्वस्थ व्यक्तियों तथा समूहों तक के व्यापक पैमाने पर समाज कार्य के सहायक प्रकार्य के एक अंग के रूप में समाज समूह कार्य की व्यवस्थित प्रक्रिया को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया था।

फिर 1960 के दशक में समूह सेवाओं की लोकप्रियता में गिरावट आई। तब समूह कार्यकर्त्ता के कौशलों को महत्त्वपूर्ण सामाजिक विमर्शों के आसपास प्रौढ़ों तथा युवाओं को संगठित करने में लगे समुदाय संगठन के क्षेत्र में अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया। 1960 के दशक में भी केस कार्य, समूह कार्य और समुदाय संगठनों में विशेष योग्यता रखने की स्थिति से हटकर अभ्यास के एक सामान्य दृष्टिकोण की ओर झुकाव के कारण व्यावसायिक स्कूलों में समूह विशेषज्ञता की स्थिति कमजोर हुई और उन पेशेवरों की संख्या में कमी आई जिनका प्रशिक्षण उनकी प्राथमिक अभ्यास पद्धति के रूप में समूह कार्य में हुआ था।

उसके बाद 1970 के दशक में समूह कार्य में रुचि में आई गिरावट जारी रही। उस दौरान और भी कम व्यावसायिक स्कूलों ने समूह कार्य का पाठ्यक्रम पढ़ाया और कम ही पेशेवरों ने अपने काम में समूह कार्य की पद्धति को अपनाया। समूह की संभावित क्षमता के लाभों के बारे में उन पेशेवरों की जागरूकता बढ़ाने के लिए पूरे अमेरिका और कनाडा के समूह कार्यकर्त्ता एकजुट हो गए और उन्होंने 1979 में समूह कार्य की उन्नति के लिए पहला सम्मेलन आयोजित किया। तबसे प्रत्येक वर्ष समूह कार्य पर वार्षिक संगोष्ठी आयोजित की गई है।

समाज कार्य की एक पद्धति के रूप में समूह कार्य का अवतरण भारत में 1936 में हुआ। इस प्रकार पश्चिम में औपचारिक रूप में मान्यता मिलने के दस वर्ष बाद,

भारत में इसका आगमन व्यावसायिक समाज कार्य शिक्षा के साथ हुआ। यद्यपि धर्मार्थ कार्य, मौखिक परम्परा के माध्यम से शिक्षा देने, अंग्रेजी राज के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम के लिए लोगों को लामबंद करने, समाज सुधार और सर्वोदय तथा भूदान आंदोलन जैसे कल्याण कार्यों में समूह के सिद्धान्त के प्रयोग का प्रमाण मिलता है, फिर भी इस पर आधारित दस्तावेज और सिद्धान्त बहुत कम मिलते हैं। भारत में समाज कार्य के सभी स्कूलों में समाज समूह कार्य में एक पाठ्यक्रम/प्रश्न पत्र पढ़ाया जाता है। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर पढ़ाए जाने वाले इस विषय का वैकल्पिक नाम कभी–कभी 'समूहों के साथ समाज कार्य' दिया जाता है।

एशिया और प्रशान्त हेतु संयुक्त राष्ट्र समाज कल्याण तथा विकास केन्द्र ने 1979 में समूह कार्य के विषय में कुछ देशज सामग्री विकसित करने का प्रयास किया था। केस कार्य और समुदाय संगठन की अपेक्षा समूह कार्य के विषय में देशज सामग्री विकसित करने की दिशा में योगदान आज भी पिछड़ रहा है। बड़ौदा विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग ने 1960 में समूह कार्य अभ्यास के कुछ पहले अभिलेखों का विकास और प्रकाशन किया। 'एसोसिएशन ऑफ स्कूल्स ऑफ सोशल वर्क' ने अमेरिका के 'टेकनीकल कोऑपरेटिव मिशन' के साथ मिलकर समूह कार्य अभ्यास के लिए न्यूनतम मानक निर्धारित किए। मेहता वी.डी. (1987) और हेलन जोजेफ (1997) ऐसे दो समाज कार्यकर्त्ता हैं जिन्होंने भारत में समूह कार्य के ऐतिहासिक विकास की परम्परा का पता लगाने की कोशिश की है, और वे इस बात पर सहमत हैं कि भारत में समाज कार्य के स्कूलों में जो सैद्धान्तिक दृष्टिकोण पढ़ाया जाता है वह और अभ्यास के प्रतिमान दोनों ही प्रमुख रूप में अमेरिकी हैं। और समाज कार्य के विषय में भी यही बात सही है।

परिवर्तन में समाज समूह कार्य का अभ्यास भारत में सामान्यतया सुधारात्मक तथा अन्य आवासीय संस्थागत परिवेश, अस्पतालों तथा शहरी क्षेत्र के ऐसे ही अन्य

स्थानों तक सीमित है। यहाँ सामान्यतया मनोरंजक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक किस्म की गतिविधियाँ चलती थीं।

समूह कार्य पद्धति का अभ्यास भी समुदाय कार्य में होता था, जिसके उदाहरण महिला मंडल और युवक मंडल हैं, किन्तु इसे प्रमुखतः समुदाय कार्य ही माना जाता था। समूह कार्य के अभ्यास पर भी कुछ स्कूलों में बहिरंग कार्य के माध्यम से जोर दिया जाता है। अभिकरणों और मुक्त समुदायों में तैनात विद्यार्थी शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों, युवाओं, प्रौढ़ों तथा बड़े–बूढों के ऐसे समूह के साथ काम करते हैं जो या तो 'रोगी' हैं अथवा स्वस्थ। उदाहरण के लिए, मुक्त समुदायों में तैनात विश्व भारती के विद्यार्थी गरीब प्रतिवेश में बच्चों और प्रौढ़ों के समूह को संगठित करते हैं, और इसमें उनका मिश्रित लक्ष्य समाजीकरण, संरचित मनोरंजन, प्रकार्यात्मक साक्षरता, स्वास्थ्य तथा स्वच्छता, परिवेश तथा सामाजिक दृष्टि से प्रासंगिक अन्य मुद्दों के विषय में जागरूकता पैदा करना होता है। हाल के वर्षों में, गाँवों में किशोर लड़कों तथा लड़कियों को भी उद्देश्य से संगठित किया गया है कि वे गृह प्रबंधन, प्रजनन तथा यौन स्वास्थ्य, यौन, परिवार नियोजन के तरीकों जैसे जीवन कौशल विकास से जुड़े मुद्दों पर कार्य करेंगे। और, उन्हें इस बात को ध्यान में रखकर संगठित किया गया है कि उनमें से अधिकांश कुछ ही समय में अपनी उपयुक्त अवस्था में विवाह करेंगे।

समूह कार्य अभ्यास के क्षेत्र में ऐतिहासिक प्रवृत्तियों की यह समीक्षा हमने इस उद्देश्य से प्रस्तुत की है कि आप समूह कार्य अभ्यास की मौजूदा प्रवृत्तियों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने योग्य हो जाएँ। व्यक्तिगत समूह सदस्य की कार्य क्षमता को बढ़ाने पर केन्द्रित एक सुधारात्मक दृष्टिकोण को अभ्यास के तरीके के रूप में आज भी सबसे अधिक पसंद किया जाता है। अभ्यास का यह प्रतिमान समस्या की पहचान, आंकलन और उपचार पर आधारित है। समूह कार्य पारस्परिक सहायता संबंधी विशेषताओं पर वहाँ आज भी जोर दिया जाता है जहाँ कार्यकर्त्ता की भूमिका समूह के सदस्यों और समाज के बीच मध्यस्थ की है। पारस्परिक सहायता और

साझा, पारस्परिक उत्तरदायित्व भी लघु–प्रवास गृहों तथा नारी निकेतनों जैसे उन परिवेशों में उपयुक्त रहते हैं जिनका निर्माण विपदाग्रस्त महिलाओं की मदद करने के लिए हुआ है कि वे साथ–साथ रहें, एक–दूसरे को सहारा दें और जीवन की विपदाजनक घटनाओं से निपटें। यह महिला मंडल, युवा क्लब और ऐसे ही अन्य समुदाय समूहों में भी उपयोगी होता है जहाँ साझा विमर्शों की पारस्परिक साझेदारी और संबल का आदान–प्रदान केन्द्रीय उद्देश्य होते हैं। व्यावसायिक समाज कार्यकर्त्ता आत्म–सहायता समूहों के सलाहकार अथवा सुविधा दाता (facilitator) के रूप में भी काम करते हैं जिनका जोर समूह की पारस्परिक सहायता संबंधी विशेषताओं पर होता है।

बोध प्रश्न III

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज कार्य की प्रणाली के रूप में समूह कार्य के विकास के मुख्य बिन्दुओं की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 समूह प्रक्रिया

छोटे समूह की प्रक्रिया, अर्थात् समूह जिस प्रकार कार्य करते हैं वह, समूह कार्य की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि छोटे समूह किस प्रकार कार्य करते हैं, इसकी मुख्य गतिकी क्या है और इन्हें किस प्रकार और भी प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए तैयार किया जा सकता है। अतः हमारे लिए यह जानना भी जरूरी है कि छोटे समूह को सुविधाजनक कैसे बनाया जा सकता है। यदि हम किसी समूह को मजबूत करना चाहते हैं अथवा हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि कोई समूह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रभावी ढंग से कार्य करे, तो वहाँ छोटे समूहों के सुविधा सेवा संबंधी कौशल जरूरी हो जाते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए, इस अनुच्छेद में समूह प्रक्रिया पर विचार किया गया है।

समूह कार्य के सहायता प्रक्रिया में, समूह सदस्य और समूचा सदस्य मुवक्किल होता है। यह दोहरा फोकस मनोवैज्ञानिक स्थिति को पूरा का पूरा बदल देता है, और वह एक–के–साथ एक वाला संबंध नहीं रह जाता। एक व्यक्तिगत समूह सदस्य और समूह कार्यकर्त्ता के बीच संबंध तो हो सकता है, किन्तु, साथ ही वह व्यक्ति समान व्यक्तियों अर्थात् ऐसे व्यक्तियों से भी घिरा होता है जो 'एक ही नाव में सवार' हैं। अतः सदस्यों के एक–दूसरे के साथ संबंध का बहुत अर्थ होता है। यह कभी जड़ नहीं होता। और, वे विशिष्ट स्थितियों में और समय बीतने के साथ बदल भी जाते हैं, चाहे समूह कार्यकर्त्ता जैसा कोई सहायक व्यक्ति उपस्थित नहीं भी हो। मार्जरी मर्फी ने इसे 'समूह के जीवन में होने वाली अंतःक्रियाओं, विकासों और बदलावों की समग्रता' के रूप में परिभाषित किया है।

समूह की गतिशीलता उसमें सम्मिलित प्रत्येक व्यक्ति की गतिशीलता के साथ गहराई से जुड़े होते हैं। समूह का चलन – समूह प्रक्रिया उसके सदस्यों के बीच

संबंध में देखा जाता है। यह समय के साथ बदल जाता है, इसका स्तर सदस्यों के स्वास्थ्य और उनकी परिपक्वता की मात्रा पर और समूह के उद्देश्य पर निर्भर करता है। समूह कार्यकर्त्ता के लिए समूह की बनावट को समझना अनिवार्य होता है। उसके लिए अनिवार्य है कि वह नए उपसमूहों की आवश्यकता को समझे और समग्र समूह में उनके स्थान का आंकलन करे। उसे एकल व्यक्तियों, नेताओं, अथवा उपसमूहों के सदस्यों के रूप में सदस्यों की स्थिति को समझना होता है क्योंकि प्रत्येक सदस्य की भूमिका का संबंध समूह की अपेक्षाओं और इसके मूल्यों और लोकाचार से होता है। उसे प्रत्येक समूह के महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में बंधन को पहचानना होता है और यह समझना होता है कि इसकी मात्रा का संबंध आंतरिक रूप में समूह की बनावट तथा लक्ष्य से होता है। अंत में, उसे समूह के विशिष्ट कार्यों के रूप में टकराव समाधान और निर्णय करने को भी समझना ही चाहिए, क्योंकि व्यक्तिगत विकास पर इसका जबरदस्त प्रभाव होता है।

सभी मानवीय अंतःक्रियाओं में दो प्रमुख तत्व होते हैं; विषय–वस्तु और प्रक्रिया। विषय–वस्तु उस कार्य के विषय से संबंध रखता है जिस पर समूह कार्य कर रहा होता है। अधिकांश अंतःक्रियाओं में सभी व्यक्तियों का ध्यान केन्द्र विषय–वस्तु ही होती है। दूसरे तत्व, प्रक्रिया, का संबंध इस बात से होता है कि जिस समय समूह काम कर रहा होता है तब सदस्यों के बीच और उनके साथ क्या हो रहा होता है। छोटे समूहों की कार्यप्रणाली का एक निश्चित गतिक चरित्र होता है। यह जड़ नहीं रहता। यह समय बीतने के साथ चलायमान होता और बदल भी जाता है। छोटे समूहों का यही गतिशील चरित्र है जो उनके बदलाव को संभव बनाता है। समूह प्रक्रिया का संबंध नैतिक बल, अनुभूति गुण, वातावरण, प्रभाव, भागीदारी, प्रभाव–शैली, नेतृत्व संघर्षों, टकरावों, प्रतिस्पर्धा, सहयोग आदि से होता है। अधिकांश अंतःक्रियाओं में, प्रक्रिया पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है, जबकि अप्रभावी समूह कार्रवाई का यह प्रमुख कारण होता है। समूह प्रक्रिया के प्रति संवेदनशीलता व्यक्ति को समूह समस्याओं का जल्दी निदान कर लेने और उनका अधिक प्रभावी ढंग से समाधान करने के योग्य बनाती है। ये प्रक्रिया क्योंकि सभी

समूहों में विद्यमान रहते हैं, इसलिए उनके प्रति जागरूकता समूह में व्यक्ति के महत्त्व को बढ़ा देती है और उसे अधिक प्रभावी समूह भागीदार बनने के योग्य बना देती है (बालगोपाल, 1989)। निम्नलिखित विवरण से आपको समूह प्रक्रिया की गतिशीलता का विश्लेषण करने में मदद मिलेगी जो लगभग प्रत्येक समूह में होती है।

भागीदारीः संलिप्तता का एक लक्षण मौखिक भागीदारी होती है। सदस्यों के बीच भागीदार की मात्रा का अंतर देखिएः

1) भागीदार कौन हैं?

2) निम्न भागीदार कौन हैं? क्या आप भागीदारी में कोई विचलन देखते हैंः क्या आप समूह की अंतःक्रिया में इसका कोई संभव कारण देखते हैं?

3) जिन मौन व्यक्तियों का उपचार हुआ वे कौन हैं? उनके मौन की क्या विवेचना की जाती है? सहमति? असहमति? अरुचि? भय? लज्जा?

4) कौन किससे बात करता है? क्या आपको समूह की अंतःक्रिया में इसका कोई कारण दिखाई देता है? वृहत्तर परिवेशगत संदर्भ में यह किस प्रकार प्रासंगिक होता है?

5) संवाद को कौन चालू रखता है? क्यों? क्या समूह की अंतःक्रिया में इसका कोई कारण देखते हैं?

प्रभावः प्रभाव और भागीदारी एक ही बात नहीं हैं। कुछ लोग थोड़ा बोल सकते हैं, फिर भी वे पूरे समूह का ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं। दूसरे लोग बहुत बोलते हैं फिर भी दूसरे सदस्य उनकी बात नहीं सुनते हैं।

1) वे कौन–से सदस्य हैं जिनका प्रभाव अधिक है? अर्थात, जब वे बोलते हैं तो दूसरे सुनते हैं।

2) वे कौन–से सदस्य हैं जिनका प्रभाव कम है? दूसरे लोग उनकी बात नहीं सुनते, न उनका अनुसरण करते हैं।

3) क्या प्रभाव में कोई विचलन होता है? यह विचलन कौन करता है?

4) क्या आप समूह में कोई स्पर्धा देखते हैं? क्या नेतृत्व के लिए संघर्ष होता है?

5) समूह के अन्य सदस्यों पर इसका क्या प्रभाव होता है?

प्रभाव–शैलीः प्रभाव कई रूपों में सामने आ सकता है। यह सकारात्मक अथवा नकारात्मक हो सकता है। यह दूसरों को संबल अथवा सहयोग पा सकता है, अथवा उन्हें अलग–थलग कर सकता है। कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करने का क्या प्रयास करता है, यह इस बात को निर्धारित करने में एक महत्त्वपूर्ण कारक हो सकता है कि दूसरा व्यक्ति प्रभावित होने की दिशा में कितना मुक्त अथवा संकुचित होगा। यहाँ हम ऐसी चार प्रभाव शैलियों का उल्लेख कर रहे हैं जो प्रायः ही समूहों में उभरती हैं।

1) **एकतंत्रीयः** क्या कोई व्यक्ति समूह के दूसरे सदस्यों पर अपनी इच्छा अथवा अपने मूल्य थोपने का प्रयास करता है? समूह के दूसरे सदस्यों पर कौन निर्णय देता है और कौन उनका मूल्यांकन करता है? क्या कुछ सदस्य तब कार्रवाई को बाधित करते हैं जब वह उनकी मनचाही दिशा में नहीं चल रही होती है? समूह को संगठित करवाने का आग्रह कौन करता है?

2) **शांतिस्थापकः** समूह के दूसरे सदस्यों के निर्णयों का कौन तत्परता से समर्थन करता है? क्या कोई हर समय आग में पानी डालकर यह प्रयास करता है कि टकराव न हो तो अरुचिकर भावनाएँ बाहर न आएँ? क्या कोई सदस्य समूह के अन्य सदस्यों के प्रति सम्मानसूचक व्यवहार करता है –

उन्हें अधिकार देता है? क्या कोई भी सदस्य गलत जानकारी देने से बचने का प्रयास करता है, अर्थात केवल अच्छी जानकारी होने पर ही देता है।

3) **अहस्तक्षेपकारी:** क्या कुछ सदस्य समूह में संलिप्तता न दिखाकर अपनी ओर ध्यान खींच रहे हैं? क्या समूह का कोई सदस्य किसी भी प्रकार की प्रतिबद्धता न दिखाकर समूह के निर्णयों के साथ चलता है? जो अलग और संलिप्त दिखाकर कार्यकलाप में पहल नहीं करता, किन्तु केवल किसी अन्य सदस्य के प्रश्न के जवाब में और यंत्रवत ही भागीदारी करता है।

4) **लोकतांत्रिक:** क्या कोई सदस्य सभी को किसी सामूहिक चर्चा अथवा निर्णय में सम्मिलित करने का प्रयास करता है? कौन अपनी भावनाओं और रायों को खुलकर और प्रत्यक्ष रूप में व्यक्त करता है और इस प्रक्रिया में दूसरों का मूल्यांकन अथवा आंकलन नहीं करता? जब लोग भावावेश में आ जाते हैं और तनाव बढ़ाते हैं, वे कौन से सदस्य हैं जो समस्या का समाधान करने के इरादे से टकराव से निपटते हैं?

निर्णयकारी प्रक्रिया: समूहों में अनेक प्रकार के निर्णय किए जाते हैं और इस प्रक्रिया में दूसरे सदस्यों पर इन निर्णयों के प्रभावों के बारे में नहीं सोचा जाता। कुछ लोग समूह पर अपने ही निर्णय थोपने का प्रयास करते हैं, जबकि अन्य लोग चाहते हैं कि जो निर्णय किए जाते हैं उनमें सभी सदस्यों की भागीदारी अथवा साझेदारी हो।

1) क्या कोई व्यक्ति कोई निर्णय करके उसे लागू भी कर देता है और इस प्रक्रिया में समूह के अन्य सदस्यों की राय भी नहीं लेता? उदाहरण के लिए, वह यह निर्णय कर लेता है कि चर्चा किस विषय पर होगी, और उस पर तुरंत बोलना भी शुरू कर देता है। समूह के दूसरे सदस्यों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

2) क्या समूह एक विषय से दूसरे विषय पर भटक जाता है? नए विषय कौन छेड़ता है? क्या आपको समूह की अंतःक्रिया में इसका कोई कारण दिखाई देता है?

3) दूसरे सदस्यों के सुझावों अथवा निर्णयों का समर्थन कौन करता है? क्या इस समर्थन के परिणामस्वरूप दो सदस्य समूह के लिए कार्यकलाप अथवा विषय का निर्णय करते हैं (हैंडक्लैस्प)? समूह के दूसरे सदस्यों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

4) क्या इस बात का कोई प्रमाण है कि बहुमत के लोग दूसरे सदस्यों की आपत्तियों को नकार कर कोई निर्णय मनवा लेते हैं? क्या वे मतदान (बहुमत समर्थन) की बात करते हैं?

5) क्या ऐसा कोई प्रयास होता है कि सभी सदस्य एक निर्णय में भागीदारी करें (आम सहमति)? समूह पर इसका क्या प्रभाव दिखाई देता है?

6) क्या कोई व्यक्ति ऐसा कोई योगदान करता है जिसकी उसे कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया अथवा मान्यता नहीं मिलती (फ्लॉप)? सदस्य पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

कृत्यकोपयोगी कार्यः ये कार्य उन व्यवहारों को प्रदर्शित करते हैं जिनका संबंध काम करवाने से अथवा उन कार्यों को संपादित करने से होता है जो समूह के सामने होते हैं।

1) क्या कोई व्यक्ति कार्य करने अथवा समस्याओं से निपटने के बारे में पूछता अथवा सुझाव देता है?

2) क्या कोई व्यक्ति समूह में चल रही गतिविधि अथवा उसमें हो चुके कार्यों का सारांश करने का प्रयास करता है?

3) क्या समूह में तथ्य, विचार मत, भावनाएँ और जानकारी रखी जाती हैं अथवा उनके बारे में पूछा जाता है, अथवा विकल्पों की खोज होती हैं?

4) समूह को लक्ष्य पर कौन रखता है? और विषय बदलने या लक्ष्य से हटने को रोकता हैं।

अनुरक्षण कार्यः ये कार्य समूह के नैतिक बल के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। ये सदस्यों के बीच अच्छे और सदभावपूर्ण कार्य संबंध बनाए रखते हैं और एक समूह वातावरण का निर्माण करते हैं जिससे प्रत्येक सदस्य को अधिकतम योगदान करने का अवसर मिल जाता है। ये कार्य समूह के भीतर सुचारू और प्रभावी टीमकार्य को सुनिश्चित करते हैं।

1) कौन दूसरों को चर्चा में सम्मिलित करने में सहायक होता है (गेट ओपनर)?

2) कौन दूसरों को अलग कर देता है अथवा उन्हें रोकता है (गेट क्लोजर)?

3) सदस्य अपने विचारों को व्यक्त करने में कितने अच्छे हैं? क्या कुछ सदस्य अपने में व्यस्त रहते हैं और सुनते नहीं हैं? क्या समूह के सदस्य दूसरे लोगों को उनके विचार स्पष्ट करने में सहायता देते हैं?

4) विचारों को कैसे खारिज किया जाता है? जब सदस्यों के विचारों को स्वीकार नहीं किया जाता है तो उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है? क्या सदस्य उस समय दूसरों को समर्थन देने का प्रयास करते हैं जब वे उनके विचारों को खारिज कर देते हैं?

समूह वातावरणः कभी–कभी समूह के कार्य करने के ढंग से ऐसे वातावरण का निर्माण होता है जो एक सामान्य प्रभाव में सामने आता है। इसके अतिरिक्त, लोगों में इस बात को लेकर मतभेद हो सकता है कि वे समूह में किस प्रकार का वातावरण पसंद करते हैं। किसी समूह के वातावरण की विशेषताओं की आंतरिक

जानकारी उन शब्दों की तलाश से मिल सकती हैं जो समूह के सदस्यों के सामान्य प्रभाव (विचार) को व्यक्त करते हैं।

1) कौन एक दोस्ताना और सौहार्दपूर्ण वातावरण को पसंद करता है? क्या टकराव अथवा अरुचिकर भावनाओं को दबाने का कोई प्रयास होता है?

2) कौन टकराव और असहमति का वातावरण पसंद करता है? क्या कुछ सदस्य दूसरों को भड़काते अथवा अप्रसन्न करते हैं?

3) क्या लोग संलिप्त और रुचिशील दिखते हैं? क्या समूह में काम, खेल, संतोष, पलायन और आलस्य का वातावरण है?

सदस्यता: समूह के सदस्यों के लिए चिंता का एक प्रमुख विषय समूह में स्वीकार्यता अथवा समावेश की मात्रा होती है। समूह में अंतःक्रिया के विभिन्न प्रतिरूप बन सकते हैं, जिससे सदस्यता की मात्रा तथा किस्म का आभास होता है।

1) क्या समूह में उप–समूहन है? कभी–कभी दो या तीन सदस्य लगातार एक–दूसरे से सहमत हो सकते हैं और एक–दूसरे को समर्थन दे सकते हैं अथवा लगातार एक–दूसरे से असहमत हो सकते हैं और एक–दूसरे का विरोध कर सकते हैं।

2) क्या कुछ लोग समूह में 'अजनबी' दिखते हैं? क्या कुछ सदस्य समूह में अत्यंत अंतरंग दिखते हैं?

3) क्या कुछ सदस्य समूह में आते जाते रहते हैं; उदाहरण के लिए, क्या वे कुर्सी में आगे पीछे होते रहते हैं अथवा कुर्सी को ही अंदर–बाहर करते रहते हैं? वे किन स्थितियों में अंदर आते या बाहर जाते हैं?

भावनाएँ: समूह में होने वाली किसी भी चर्चा में, सदस्यों के बीच अंतःक्रिया से बराबर भावनाओं का उदय होता रहता है। किन्तु, इन भावनाओं के बारे में

कभी–कभी ही बात की जाती हैं। पर्यवेक्षकों को आवाज के लहजे, चेहरे के हाव–भावों, शरीर की मुद्राओं तथा अन्य अनेक अमौखिक संकेतों से इन भावनाओं का अनुमान लगाना पड़ सकता है।

1) समूह के सदस्यों में आपको भावनाओं के क्या लक्षण दिखाई देते हैं? क्रोध, चिड़चिड़ाहट, कुंठा, उष्णता, स्नेह, उत्तेजना, ऊब, रक्षात्मकता, प्रतिस्पर्धा आदि।

2) क्या आपको यह दिखाई देता है कि समूह के सदस्य भावनाओं की अभिव्यक्ति को, विशेषकर नकारात्मक भावनाओं की अभिव्यक्ति को रोक रहे हैं? वे इसे किस प्रकार करते हैं? क्या कोई सदस्य लगातार ऐसा करता है?

प्रतिमानः समूह में ऐसे मानक अथवा आधार–नियम बन सकते हैं जो अपने सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। प्रतिमान सामान्यतया समूह के सदस्यों के बहुमत के इन विश्वासों अथवा इच्छाओं को व्यक्त करते हैं कि समूह में कैसा व्यवहार होना चाहिए और कैसा नहीं। ये प्रतिमान सभी सदस्यों के लिए स्पष्ट हो सकते हैं, केवल कुछ ही सदस्यों को ज्ञात अथवा आभासित हो सकते हैं, अथवा समूह के किसी भी सदस्य के जागरूकता स्तर से बिल्कुल नीचे सक्रिय हो सकते हैं। कुछ प्रतिमान तो समूह प्रक्रिया को सुगम बनाते हैं और कुछ इसमें बाधक बनते हैं।

1) क्या कुछ क्षेत्रों की समूह में उपेक्षा की जाती है (जैसे धूम्रपान, धर्म, समूह में मौजूदा भावनाओं आदि)? इस उपेक्षा को कौन बल प्रदान करता है? वे इसे किस प्रकार करते हैं?

2) क्या समूह के सदस्य एक–दूसरे के साथ अत्यधिक भद्रता और विनम्रता का व्यवहार करते हैं? क्या केवल सकारात्मक भावनाओं को व्यक्त किया जाता

है? क्या सदस्य अत्यधिक तत्परता से एक–दूसरे से सहमत होते हैं? जब सदस्य असहमत होते हैं तो क्या होता है?

3) क्या आपको भागीदारी में अथवा जिन्हें पूछने की छूट होती है उन प्रश्नों में प्रतिमान कार्य करते दिखाई देते हैं (जैसे 'यदि मैं बोलता हूँ, तो आपको भी बोलना ही चाहिए'। 'यदि मैं अपनी समस्याएँ बताता हूँ, तो आपको भी अपनी समस्याएँ बतानी चाहिए')? क्या सदस्य एक–दूसरे की भावनाओं के बारे में उन्हें कुरेदने के लिए स्वतंत्र अनुभव करते हैं? क्या सवालों को समूह के बाहर के बौद्धिक विषयों अथवा घटनाओं तक ही सीमित रखा जाता है?

अभ्यास गतिविधि

समूह के साथ अपने बहिरंग क्षेत्र (फील्ड) कार्य अभ्यास के आधार पर, समूह में होने वाले समूह प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 सारांश

इस इकाई में हमने अपनी चर्चा की शुरूआत यह कहकर की कि समूहों में व्यक्ति, समूह तथा समुदाय के बदलाव और विकास के लिए बहुत संभावनाएँ हैं। आज

जब हम समूहों के साथ समाज कार्य की बात करते हैं, तो इसका आशय आवश्यक रूप में व्यक्तिगत सदस्य के जीवन में बदलाव लाने से नहीं होता, अपितु समूह में तथा वृहत्तर समुदाय अथवा समाज में बदलाव से भी होता है। समूह कार्य पद्धति का विकास समाज कार्य में अभ्यास के क्षेत्र में हुए परिवर्तनों और दूसरे विषयों में अभ्यास से हुआ। यद्यपि भारत में समाज समूह कार्य पश्चिम में समाज कार्य की एक पद्धति के रूप में औपचारिक मान्यता प्राप्त करने के दस वर्ष बाद आया, फिर भी भारत में समाज कार्य का अभ्यास करने वालों और शिक्षकों ने सांस्कृतिक दृष्टि से प्रासंगिक सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य और अभ्यास प्रतिमानों का विकास करने में कोई अधिक योगदान नहीं किया।

1.7 शब्दावली

समूह : यह दो से अधिक व्यक्तियों का झुंड होता है जिनका एक साझा उद्देश्य होता है (यद्यपि प्रत्येक सदस्य शायद इसके बारे में नहीं जानता अथवा इससे सहमत नहीं होता), एक स्थिर सदस्यता होती है (अपेक्षाकृत एक निर्धारित संख्या उन लोगों की जो एक लंबे समय तक समूह के सदस्य रहते है), एक स्पष्ट सीमा होती है (भौतिक स्थान और समय के अर्थों में), और जो एक–दूसरे के सापेक्ष विशिष्ट भूमिका और प्रस्थितिगत संबंधों में अव्यवस्थित होते हैं।

पद्धति : यह किसी लक्ष्य को प्राप्त करने की एक सचेत प्रविधि और एक निर्मित साधन है। यह लोगों के साथ काम करने का एक व्यवस्थित, क्रमबद्ध और सुनियोजित तरीका है।

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बालगोपाल पी. आर. (1989), 'व्हॉट टु लुक फॉर इन ग्रुप्स', नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर के समाज कार्य तथा मनोविज्ञान विभाग में प्रस्तुत, पतझर (फाल)।

जोजेफ हेलन (1997), 'सोशल वर्क विद ग्रुप्स : ए लिटरेचर रिव्यू', इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, खंड 58.2।

मेहता, वी.डी. (1987), इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क इन इंडिया में समूह कार्य,खंड 2, समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

ट्रेकर एच.बी. (1955), सोशल ग्रुप वर्क – प्रिंसिपल्स एण्ड प्रैक्टिसेज, एसोसिएशन प्रेस, न्यूयॉर्क।

टोजलैण्ड रोनाल्ड तथा रिवास एफ. रॉबर्ट (1999), इंट्रोडक्शन टु ग्रुप वर्क प्रैक्टिस, ऐलिन तथा बेकन, तृतीय संस्करण (अध्याय 2)।

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) समूह अंर्तव्यैक्तिक अंतःक्रिया के लिए सर्वश्रेष्ठ तरीका प्रदान करते हैं जो व्यक्तिगत सदस्यों की वृद्धि और विकास में सहायक होते हैं। व्यक्तिगत सदस्य समूह में विभिन्न भूमिकाएं निभाते हैं। समूह प्रक्रिया के माध्यम से, वे स्वयं अपनी प्रक्रिया के विषय में और अन्य सदस्यों तथा समूह पर अपने व्यवहार के प्रभावों के बारे में और अधिक सीखते हैं। समूह में बने वातावरण का परिणाम व्यक्तियों के पारस्परिक संबल के रूप में सामने आता है। सदस्य एक–दूसरे को जान पाते हैं और अपनी भावनाओं और अनुभव की आपस में साझेदारी कर सकते हैं जिससे व्यक्ति को अपने तनाव और भय दूर करने में मदद मिलती है। यह दूसरों से सीखने का अवसर भी पैदा करता है जिसके फलस्वरूप नए जीवन कौशलों और ज्ञान की प्राप्ति की

जा सकती है। सदस्य अपने दृष्टिकोणों और भावनाओं की परीक्षा और तुलना करने के योग्य हो जाते हैं जिससे दृष्टिकोण की विकृतियों को ठीक करने या सही ठहराने का प्रोत्साहन मिलता है। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि समूह अपनी संबल, दूसरों के लिए प्रतिबद्धता, संबंधों को बहाल करने के कौशल, व्यक्तिगत समस्याओं अथवा मुद्दों के सार्वभौमीकरण, आशा के संचार, परोपकार की भावना, विरेचन, भावनात्मक अनुभव, सत्य–परीक्षण, प्राधिकार के प्रतिरोध को कम करने, और दूसरों को मान्य व्यवहार करने की गुंजाइश बनाता है।

बोध प्रश्न II

1) समाज समूह कार्य समूह दृष्टिकोण का प्रयोग समाज कार्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए करता है। आज, समाज समूह कार्य में तीन विभिन्न अर्थों की अपेक्षा होती हैः (1) यह समूहों के भीतर कार्य करके समस्या समाधान में अपने सदस्यों की सहायता करता है; (2) यह समूह की संरचना और प्रक्रियाओं (प्रक्रिया) के साथ कार्य करके उसके विकास में सहायता करता है; और (3) यह समूह को एक साधन के रूप में प्रयोग करके बाह्य व्यवस्था में हस्तक्षेप करता है। यह समूह कार्य व्यक्तिगत क्षमता और आवश्यकता के अनुसार व्यक्तिगत वृद्धि के लिए अवसर प्रदान करता है; अन्य व्यक्तियों, समूहों और समाज के साथ समायोजन में व्यक्ति की सहायता करता है, और, समाज के सुधार के लिए व्यक्तियों को प्रेरित करता और उसे अपने अधिकारों, योग्यताओं और दूसरों के साथ मतभेदों को पहचानने में मदद देता है।

समूह कार्य में, एक सी आवश्यकताओं और समस्याओं वाले व्यक्तियों को एक समूह में रखा जाता है, और यह सामान्यतया किसी अभिकरण की पहल पर होता है। समूह कार्यकर्त्ता कहलाने वाला एक पेशेवर सहायक विभिन्न कार्यक्रमों तथा गतिविधियों के माध्यम से आपसी सहमति वाले एक

ऐसे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समूह की अंतःक्रियाओं में मार्गदर्शन और सहायता करेगा जो व्यक्तिगत, अंर्तव्यैक्तिक अथवा कार्य–संबंधित प्रकृति का हो सकता है। समूह प्रक्रिया के दौरान, सदस्यगण स्थापित समूह लक्ष्यों की प्राप्ति और व्यक्तिगत सदस्यों की वृद्धि और विकास के लिए साझेदारी करना, सुझाव देना और साथ–साथ काम करना सीखेंगे। समूह कार्य अन्य सदस्यों, समूह तथा समाज के साथ व्यक्तिगत सदस्य के समायोजन के विकास का लक्ष्य लेकर चलता है। समूह प्रक्रिया में, सदस्यगण एक–दूसरे के साथ साझेदार और अंतःक्रिया करते हैं और अक्सर वृहत्तर समाज व्यवस्था के बारे में अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। यह बुनियादी ज्ञान उन्हें समाज की बेहतरी के लिए मिल–बैठकर योजना बनाने और सामूहिक कार्रवाई करने का अवसर देता है।

बोध प्रश्न III

1) दो अध्ययन–धाराएँ–एक प्रयोगशाला तथा समुदाय के स्थापनों में समूह के अध्ययन पर और दूसरी समूह कार्य के अभ्यासों में – समाज कार्य की पद्धति के रूप में समाज समूह के विकास की ओर ले जाती हैं। समूहों के अध्ययन से यह बात सामने आई है कि समूह व्यक्तिगत समूह सदस्यों पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव रखते हैं और कुछ व्यवहारों तथा आत्म निर्णय की अनुरूपता वाली शक्तियों को पैदा करते हैं। यह समाजीकरण, (तथा समाज विरोधी), अनुरूपता, समूह जुड़ाव, संचार तथा अंतःक्रिया के प्रतिमान, नेतृत्व, अंर्तव्यैक्तिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण, अंतर–समूह शत्रुता और कार्य निष्पादन जैसे विभिन्न समूह प्रक्रियाओं की समझ की ओर भी ले जाता है। इन सभी को समझने के परिणामस्वरूप समूह कार्य अभ्यास को आगे बढ़ाने की स्थिति आई।

समूह कार्य की ऐतिहासिक वृद्धि एक साथ उन पेशेवरों से शुरू हुई जिन्होंने समूहों का नेतृत्व मलिन बस्ती सेवागृहों, प्रतिवेश केन्द्रों, वाई संगठनों,

स्काउट दलों, कैम्प फायर गर्ल्स, यहूदी केन्द्र तथा अन्य युवा सेवा अभिकरणों में समाजीकरण, मनोरंजन, प्रौढ़ शिक्षा, युवा विकास तथा समुदाय कार्य के लिए किया। यद्यपि वेस्टर्न रिजर्व विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ सोशल वर्क में 1935 से ही समाज समूह कार्य पढ़ाया जा रहा था, समाज कार्य व्यवसाय के साथ समूह कार्य का जुड़ाव केवल 1950 के दशक से ही कहा जा सकता है। 1936 में स्थापित अमेरिकन एसोसिएशन फॉर दि स्टडी ऑफ ग्रुप वर्क के समूह कार्य के दर्शन और अभ्यास का स्पष्टीकरण और परिष्कार किया था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, मानव संसाधन में कमी के कारण, मनोविश्लेषण तथा अहं मनोविज्ञान से प्रभावित मानसिक स्वास्थ्य परिवेश में समूहों का प्रयोग किया गया था। 1940–50 के दौरान, समूहों का प्रयोग समुदाय विकास तथा समाज कार्य के लिए भी किया गया। समाज कार्य का पेशेवर अभ्यास करने वालों ने काफी मात्रा में साहित्य का सृजन किया जिससे दर्शन, लक्ष्यों तथा उद्देश्यों और सिद्धान्तों तथा प्रक्रिया को स्पष्ट करने में सहायता मिली, और इससे समाज कार्य के भीतर एक विशिष्ट प्रस्थिति प्राप्त करने में मदद मिली।

भारत में व्यावसायिक समाज कार्य शिक्षा शुरू होने के साथ, समाज कार्य स्कूलों में समूह कार्य पढ़ाया जाने लगा। यद्यपि भारत में समुदाय कार्य में समूह दृष्टिकोण के प्रयोग का प्रमाण था, फिर भी समूह कार्य को भारतीय रंग देने के लिए कोई अधिक अभिलेख उपलब्ध नहीं हैं। इस प्रकार की सहमति है कि भारत में सैद्धान्तिक दृष्टिकोण तथा अभ्यास प्रतिमान प्राथमिक रूप में अमेरिकी हैं, जैसा कि स्वयं समाज कार्य के मामले में है। भारत में आवश्यकता–आधारित समूह कार्य अभ्यास को विकसित करने और उसे सांस्कृतिक दृष्टि से प्रासंगिक बनाने की दिशा में बहुत कम प्रयास हो रहे हैं।

इकाई 2 समूह कार्य अभ्यास के सिद्धान्त, कौशल और आदर्श

*डॉ. अशोक सरकार

रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 समाज समूह कार्य में मूल्य

2.3 समाज समूह कार्य के सिद्धान्त

2.4 समाज समूह कार्य में कार्यक्रम नियोजन

2.5 समाज समूह कार्य के कौशल

2.6 समाज समूह कार्य की अन्तर्निहित मान्यताएँ

2.7 समाज समूह कार्य के आदर्श

2.8 सारांश

2.9 शब्दावली

2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

* डॉ. अशोक सरकार, विश्वभारती विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का बुनियादी उद्देश्य विद्यार्थियों को इस दिशा में जागरूक करना है कि वे अपने समूह सदस्यों के व्यक्तित्व की विशेषताओं के समाधान हेतु उनकी शक्ति, क्षमता और योग्यताओं को किस प्रकार सक्रिय करें और एक निश्चित दिशा दें। इस इकाई का अध्ययन और विश्लेषण करने के बाद आपः

- समाज समूह कार्य को निर्देशित करने वाले मूल्यों को समझ सकेंगे;
- समाज कार्य अन्तःक्षेप में समूह कार्य के स्थान को समझ सकेंगे;
- परिवर्तन के साधन के रूप में समूह को जान सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के समूह के साथ काम करने के कौशलों की व्याख्या कर सकेंगे;
- समूह सदस्यों के लाभार्थ विभिन्न प्रकार के समूह कार्य आदर्शों के उपयोग, और समूह गठन को स्पष्ट कर सकेंगे; और
- उन बुनियादी मान्यताओं की व्याख्या कर सकेंगे जिन पर समाज समूह कार्य अभ्यास आधारित होते हैं।

2.1 प्रस्तावना

समाज समूह कार्य तो समाज कार्य की एक पद्धति है जो समूह के क्रियाकलाप के माध्यम से व्यक्तियों में रचनात्मक संबंध बनाने की योग्यता का विकास करती है। समूह के अनुभव मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताएँ होती हैं। व्यक्तियों और पर्यावरण के बीच होने वाली पारस्परिक और गतिशील अंतःक्रियाएँ और लेन–देन की क्रियाएँ समाज समूह कार्य आयाम में अंतर्निहित होती हैं। कभी–कभी अपनी ही गलती या कमजोरी के कारण और कभी–कभी प्रतिकूल वातावरण के कारण, व्यक्ति अपने समूह जीवन के क्रियाकलापों को कर नहीं पाता है। यहाँ समूह कार्य व्यक्ति की कमजोरी दूर करने और उसकी आंतरिक शक्ति को प्रबल करने में उसकी सहायता करता है जिससे कि वह अपना काम संतोषजनक ढंग से कर सके।

समाज समूह कार्यकर्त्ता के लिए आवश्यक होता है कि वह समाज समूह कार्य की सैद्धान्तिक जानकारी रखे, और उसके नियमों, कौशलों, आदर्शों और मान्यताओं को जाने जिससे कि वह अपना काम संतोषजनक ढंग से कर सके। इस इकाई में इन्हीं सब बिन्दुओं पर चर्चा की गई है।

2.2 समाज समूह कार्य में मूल्य

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कि समूह मनुष्य की मनोसामाजिक और मनोवैज्ञानिक बुनावट को प्रभावित करता है, समाज समूह कार्य का आधार सैद्धान्तिक और मूल्य–आधारित है, ''सभी पेशों में मूल्य प्राथमिकताएँ होती है जो उसमें कार्य करने वाले लोगों को उद्देश्य, अर्थ और दिशा प्रदान करते हैं..... पेशेगत मूल्य समाजप्रद मूल्यों से अलग और दूर नहीं होत वरन् चुनिंदा समाजप्रद मूल्यों का किसी भी पेशे में स्वीकार और समर्थन किया जाता है।'' (हैपवर्थ और लार्सन, 1922) नार्थन के अनुसार मूल्य इसके आदर्श साध्य हैं कि क्या उचित, वांछनीय और मूल्यवान है। समूह कार्य के मूल्य निर्देशित करते हैं कि अभ्यासकर्त्ता को लोगों, उनके तथ्यों को किस प्रकार देखना और प्रक्रिया के दौरान उन लक्ष्यों को कैसे प्राप्त किया जाना चाहिए। एक व्यवसाय में, को कैसे प्राप्त किया जाना चाहिए। एक व्यवसाय में, मूल्य कार्य–निष्पादन के नैतिक सिद्धांतों में रूपांतरित होते हैं। समाज कार्यकर्त्ताओं के राष्ट्रीय संगठन (NASW) की आचार संहिता के अनुसार, ''वृहद् नैतिक सिद्धान्त समाज कार्य के बुनियादी मूल्यों सेवा, सामाजिक न्याय, व्यक्ति की अस्मिता और सम्मान, मानव सम्बन्धों की महत्ता, ईमानदारी और उपयुक्तता पर आधारित है। ये सिद्धान्त उन आदर्शों की स्थापना करते हैं जिन्हें सभी समाज कार्यकर्त्ताओं को अपनाना चाहिए।''

समूह कार्य के बुनियादी मूल्य मानक मानव सम्बन्धों में व्यवहृत होते हैं। नॉर्थन (2007:77) द्वारा संकल्पित ये बुनियादी मूल्य निम्नलिखित हैं :

अस्मिता और महत्ता

केस कार्य और समुदाय संगठन की भाँति, समाज समूह कार्य का एक महत्त्वपूर्ण मूल्य प्रत्येक व्यक्ति की विरासती महत्ता और अस्मिता में विश्वास है। सभी मनुष्यों को ज्यों को त्यों स्वीकार किया जाना चाहिए और उनकी विशेष शक्तियों की पहचान की जानी चाहिए। उनकी विभिन्नताओं और समानताओं से निरपेक्ष रहकर उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है और पैतृक महत्ता संपन्न है, उनसे अर्न्तक्रिया में स्रोतों और अवसरों को इस प्रकार प्रयुक्त किया जाना चाहिए जिससे उन्हें कोई हानि न पहुँचे वरन् उनकी अस्मिता और व्यैक्तिकता में वृद्धि होनी चाहिए। नकारात्मक कानून के भय के बिना, उन्हें स्वयं को अभिव्यक्त करने की आजादी हो। समूह कार्यकर्त्ता को यह मूल्य सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक सदस्य चाहे उसकी कमियाँ कुछ भी रही हों, मूल्यवान है और उसका सम्मान किया जाना चाहिए और उससे समाज के एक सम्मानित सदस्य की भाँति व्यवहार किया जाना चाहिए।

सामाजिक न्याय

सभी समाज कार्य में पुराना मूल्य, सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करना है ताकि स्रोतों और अवसरों तक सभी को समान पहुँच हो सके। प्रत्येक व्यक्ति को नस्ल, धर्म, सामाजिक वर्ग, लिंग, सेक्स सम्बन्धी विभेद और क्षमताओं के भेदभाव के बिना नागरिक स्वतंत्रता और समान अवसर का अधिकार मिलना चाहिए। अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए : आवश्यक संसाधनों तक उनकी पहुँच होनी चाहिए। उन्हें उनकी संस्कृति और सामाजिक स्थिति द्वारा निर्धारित सीमाओं के अन्तर आत्म–निर्णय करने और समूह बनाने, परिवार अथवा संगठन संबंधी निर्णय करने का अधिकार होना चाहिए। व्यक्ति को कभी उन स्रोतों/संसाधनों की भी आवश्यकता पड़ सकती है जो उपलब्ध नहीं हैं, तब समाज कार्यकर्त्ता को उनके

पक्षकार की भूमिका निभानी चाहिए और उनका पक्ष रखना चाहिए। वह लोगों को उनकी आजीविका की कठिन समस्याओं का सामना करने में सहायता करने के लिए सहयोग समूहों को संगठित कर सकता है।

पारस्परिक उत्तरदायित्व

पारस्परिक उत्तरदायित्व का मूल्य इस विश्वास पर आधारित है कि लोग अपने अस्तित्व और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक–दूसरे पर निर्भर हैं। न तो व्यक्ति और न ही समाज एक दूसरे के बिना अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकते हैं। जब व्यक्ति अर्न्तक्रिया करते हैं तो वे प्रभावित होते हैं और बदले में दूसरों को प्रभावित करते हैं। वे एक दूसरे की सहायता करने सक्षम होते हैं। समूह इस पारस्परिक निर्भरता का निर्माण करता है, जो विकास और परिवर्तन के लिए प्रभावी शक्ति बन सकती है। समाज कार्यकर्त्ता संचार प्रतिमान और व्यवहार के मानक निर्मित करने में सहायता करने के लिए उत्तरदायी होता है जो पारस्परिक सहायता को प्रोत्साहित करना है सदस्यों को प्रजातांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रियतापूर्वक भागीदारी करके समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभाना चाहिए।

नॉर्थन (2007) का मत है कि यद्यपि समाज कार्यकर्त्ता आचार संहिता द्वारा निर्मित नैतिक सिद्धान्तों से बँधे हैं। उन्हें विभिन्न समूहों के साथ कार्य करते हुए इन सिद्धांतों को समझने और विभिन्नतापूर्वक प्रयोग करने की भी आवश्यकता है।

2.3 समाज समूह कार्य के सिद्धान्त

समूह कार्यकर्त्ता को समाज कार्य समूह के बुनियादी सिद्धान्तों की सचेत समझ से लाभ होता है, क्योंकि यह समझ उसे समूह के साथ काम करने की रूपरेखा प्रदान करती है। कभी–कभी 'अवधारणा' और 'सिद्धान्त' शब्दों का प्रयोग अदल–बदल

कर किया जाता है, किन्तु इनमें अंतर है। अवधारणाएँ तो व्यक्तियों, आवश्यकता और समुदायों से संबंधित वे विचार होते हैं जो समाज तथा जीव विज्ञानों से और मानविकी के विषयों से भी उभरते हैं। उदाहरण के लिए, इस प्रकार की अवधारणाएँ सामाजिक दूरी, समस्या, भूमिका, अहं आदि होती हैं। ये सभी समाज कार्य पद्धतियों के मूल में होती हैं। वहीं सिद्धान्त एक मौखिक कथन, सामान्य नियम अथवा कानून, मूलभूत सत्य होता है जिसके सहारे हम एक से दूसरी स्थिति तक पहुँचते हैं। सिद्धान्त को पर्यवेक्षण और प्रयोग से पर्याप्त रूप में परीक्षित एक परिकल्पना समझना चाहिए जिसे कार्रवाई अथवा क्रिया के दिग्दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। समाज समूह कार्य के सिद्धान्त उन कथनों के दिग्दर्शित अभिकथन होते हैं जिनका उद्भव अनुभव और अनुसंधान से हुआ है। समूहों के सदस्यों को विकास और बदलाव की दिशा में मदद देने के लिए उनके साथ कार्य करने के बुनियादी सिद्धान्त भी समाज समूह कार्य के अभ्यास से उभरे हैं। समाज समूह कार्य के उद्देश्यों की पूर्ति केवल सिद्धान्तों के ढाँचे के भीतर ही हो सकती है। इसलिए, यह आवश्यक लगता है कि उन बुनियादी सिद्धान्तों पर विमर्श किया जाए तो समूह कार्य अभ्यास की दिग्दर्शक शक्ति होते हैं। डगलस ने समाज समूह कार्य के चौदह सिद्धान्त बताए हैं:

1) प्रत्येक व्यक्ति के विशिष्ट अंतर के संदर्भ में अभिज्ञान और अनुवर्ती क्रिया।

2) समूह के रूप में समूह के व्यापक प्रकारों के संदर्भ में अभिज्ञान (पहचान) और अनुवर्ती क्रिया।

3) प्रत्येक व्यक्ति की विलक्षण शक्तियों तथा कमजोरियों को मानते हुए उसे निश्चित रूप में स्वीकार करना।

4) समूह कार्यकर्त्ता और समूह सदस्यों के बीच एक उद्देश्यपूर्ण संबंध की स्थापना।

5) सदस्यों के बीच सहायता और सहयोग को संभव और प्रोत्साहित करना।

6) समूह प्रक्रम का उपयुक्त संशोधन।

7) प्रत्येक सदस्य को उसकी क्षमता के स्तर के अनुसार भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना और उसे और अधिक सक्षम बनाने में मदद करना।

8) सदस्यों को समस्या समाधान की प्रक्रिया में सम्मिलित होने के योग्य बनाना।

9) समूह सदस्यों को द्वंद्वों के माध्यम से कार्य करने के अधिकाधिक संतोषजनक रूपों का अनुभव करने के योग्य बनाना।

10) संबंधों और उपलब्धियों में नए और भिन्न अनुभव के अवसर प्रदान करना।

11) प्रत्येक व्यक्ति तथा समग्र स्थिति के नैदानिक आंकलन के संदर्भ में सीमाओं का विवेकपूर्ण उपयोग।

12) सदस्य व्यक्तियों, समूह–उद्देश्य और उपर्युक्त सामाजिक लक्ष्यों के नैदानिक मूल्यांकन के अनुसार कार्यक्रम का उद्देश्यपूर्ण और विभेदक उपयोग।

13) व्यक्ति और समूह की प्रगति का अविरत मूल्यांकन।

14) समूह कार्यकर्त्ता का अपने आपको मानवीय और अनुशासित उपयोग करना।

कनोप्का ने समूह के साथ कार्य करने के संदर्भ में कुछ सिद्धान्तों का उल्लेख किया है। यहाँ हम इन्हें सार रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं:

1) समाज कार्यकर्त्ता का लक्ष्य होता है मुवक्किलों अथवा समूह सदस्यों को समग्र रूप में इस योग्य बनाना कि वे और अधिक आत्मनिर्भरता और सहायता–क्षमता की दिशा में आगे बढ़ें।

2) समाज कार्यकर्त्ता को व्यक्ति, समूह और सामाजिक वातावरण के संदर्भ में क्रिया, तथ्यान्वेषण विश्लेषण और निदान के लिए तैयारी करने में वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग ही करना चाहिए।

3) समाज कार्यकर्त्ता को उद्देश्यपूर्ण संबंध बनाने चाहिए। इसका अर्थ होगा समूह सदस्यों की आवश्यकताओं पर सचेतन रूप में ध्यान केन्द्रित करना और उन्हें पूरा करने का प्रयास करना।

4) समाज कार्यकर्त्ता को अपना उपयोग सचेत होकर करना चाहिए। इसमें आत्म–ज्ञान और संबंध में अनुशासन सम्मिलित होगा, किन्तु इसमें स्नेह और सहजता का क्षय नहीं होना चाहिए।

5) समाज कार्यकर्त्ता को सदस्यों को उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए जैसे वे हैं, और उसे उनके व्यवहार की भर्त्सना नहीं करनी चाहिए। इसमें समूह सदस्यों के बारे में गहरी समझ और उन मूल्यों की जानकारी और पहचान भी सम्मिलित है जिससे मनुष्य नियंत्रित होते हैं।

6) समाज कार्यकर्त्ता को अपनी स्वयं की मूल्य व्यवस्था को समझना चाहिए और इसे दूसरों की मूल्य व्यवस्था के सापेक्ष व्यवहृत करने के योग्य होना चाहिए।

7) उसे सदस्यों को यह अवसर देना चाहिए कि वे अपने व्यवहार का स्वयं विकास करें, और उसे इस प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। उसे सदस्यों पर बाहरी माँगें नहीं थोपते हुए उन्हें अपनी दिशा स्वयं चुनने अथवा बदलने का अवसर देना चाहिए।

कोहन ने भी कुछ सिद्धान्तों की चर्चा की है जो समूह के साथ कार्य करने के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। उनके अनुसारः

1) समूह सदस्यों की इस संबंध में सहायता की जानी चाहिए कि वे अपनी सहायता स्वयं करें, और इस संदर्भ में समाज कार्यकर्त्ता को अपनी युक्ति न चला कर अप्रत्यक्ष अथवा सामर्थ्यदायी भूमिका निभानी चाहिए। इसका अर्थ यह होगा कि समूह सदस्यों को आत्म निर्देशन और आत्म–निर्णय का अधिकार मिलना चाहिए।

2) समूह के साथ कार्य का शुभांरभ समूह सदस्यों के स्तर पर होना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक और अन्य प्रकार की विशेषताओं का सम्यक ज्ञान समूह के साथ कार्य करने के लिए अनिवार्य है। यदि कार्य अथवा कार्यक्रम सदस्यों के मानसिक स्तर से ऊपर होंगे, तो उनकी रुचि समाप्त हो जाएगी।

3) समाज कार्यकर्त्ता को समूह की देखी आसन्न समस्या पर ही नहीं अपितु समग्र स्थिति के सापेक्ष उस पर ध्यान केन्द्रित होना चाहिए।

4) समाज कार्यकर्त्ता को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि समूह में व्यक्तिगत मतभेद होते ही हैं, और उसे समूह सदस्यों के साथ व्यवहार करते समय इन मतभेदों को ध्यान में रखना चाहिए।

5) यह ध्यान में रखना चाहिए कि व्यक्ति का हित समूह के हित के साथ जुड़ा होता है। इसलिए समाज कार्यकर्त्ता को भौतिक, मानवीय तथा सामाजिक संसाधनों से सरोकार रखना चाहिए जिससे कि समूह के सभी सदस्यों की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

फ्रीडलैंडर ने समाज समूह कार्य के निम्नलिखित बुनियादी सिद्धान्त बनाए हैं:

1) समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका सहायक अथवा सामर्थ्यदायक की होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि उसका लक्ष्य समूह के सदस्यों और समग्र

समूह की मदद करना होना चाहिए जिससे कि वे और अधिक आत्म–निर्भरता तथा आत्म–सहायता की क्षमता की ओर बढ़ सकें।

2) अपनी जीवन–शैली का निर्धारण करते समय, समूह कार्यकर्त्ता वैज्ञानिक पद्धति को अपनाता है जिसमें व्यक्तिगत, समूहगत अथवा सामाजिक वातावरण के सापेक्ष तथ्यान्वेषण, विश्लेषण और निदान किया जाता है।

3) समूह कार्य पद्धति में कार्यकर्त्ता के लिए आवश्यक होता है कि वह समूह सदस्यों और समूह के साथ उद्देश्यपूर्ण संबंध बनाए।

4) इस प्रकार के संबंध बनाने के संदर्भ में एक मुख्य साधन होता है स्वयं का सचेत उपयोग।

5) व्यक्ति की कमजोरियों पर ध्यान न देते हुए उसे सम्मान और स्नेह दिया जाए।

6) कार्य का शुभारंभ वहीं से होना चाहिए जहाँ समूह है।

7) सीमाओं का रचनात्मक उपयोग होना चाहिए। समूह सदस्य मुख्य रूप में अपना, कार्यक्रम सामग्री का, समूह की अंतःक्रिया का उपयोग करेगा और समूह सदस्यों में अंर्तदृष्टि जगाने का काम करेगा।

8) समूह के प्रत्येक सदस्य को अलग ढंग से समझा जाना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यैक्तिकरण अनिवार्य है।

9) अंतःक्रिया एक प्रक्रम होता है जिसके माध्यम से समूह सदस्य अपनी शक्तियों और ताकत को विकसित करते हैं। इसलिए, समाज समूह कार्यकर्त्ता को इस प्रक्रम की सही ढंग से निगरानी करनी चाहिए।

10) यह भी आवश्यक है कि गैर–मौखिक गतिविधियों और कार्यक्रमों को मौखिक सामग्री के साथ ही समझा जाए और उसके साथ ही उसका प्रयोग भी किया जाए।

ट्रेकर ने समाज समूह कार्य के निम्नलिखित सिद्धान्तों की व्याख्या की है:

1) नियोजित समूह निर्माण का सिद्धान्त।

2) विशिष्ट उद्देश्यों का सिद्धान्त।

3) उद्देश्यपूर्ण कार्यकर्त्ता समूह संबंध का सिद्धान्त।

4) सतत व्यैक्तिकरण का सिद्धान्त।

5) दिग्दर्शित समूह अंतःक्रिया का सिद्धान्त।

6) लोकतांत्रिक समूह आत्मनिर्णय का सिद्धान्त।

7) लचीला प्रकार्यात्मक संगठन का सिद्धान्त।

8) प्रगतिशील कार्यक्रम अनुभव का सिद्धान्त।

9) संसाधन सदुपयोग का सिद्धान्त।

10) मूल्यांकन का सिद्धान्त।

विभिन्न समाज कार्य लेखकों के बताए विभिन्न सिद्धान्तों के आधार पर, हम सारांश में निम्नलिखित सिद्धान्तों का उल्लेख कर सकते हैं:

1) समूह के नियोजित संगठन का सिद्धान्त।

2) प्रत्येक व्यक्ति को समूह के सदस्य और व्यक्ति के रूप में समझने का सिद्धान्त।

3) समानता का सिद्धान्त।

4) संबंध को समूह की समस्याएँ और व्यक्तिगत समस्याएं हल करने के साधन और समूह के विकास के साधन के रूप में भी समझने का सिद्धान्त।

5) समूह के प्रत्येक सदस्य के प्रोत्साहन का सिद्धान्त।

6) विभिन्न उद्देश्यों वाले विविध समूहों के अभिज्ञान का सिद्धान्त।

7) आत्म–विकास, अर्थात समूह को उसकी आवश्यकताओं के अनुसार उसके कार्यक्रम आयोजित करने का पूरा अवसर देने का सिद्धान्त।

8) स्वयं समस्या हल करने का सिद्धान्त। सदस्यों को स्वयं अपनी समस्याओं को समझने और हल करने के प्रक्रम में लगाना चाहिए।

9) समूह के निदान के अनुसार कार्यक्रम के प्रयोग का सिद्धान्त। समूह की समस्याओं के अनुसार विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है।

10) अनुभव विकास का सिद्धान्त। समूह के प्रत्येक सदस्य को समूह में उसकी भावनाओं को साकार और व्यक्त करने का अवसर मिलना चाहिए।

11) व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व को ढालने और आकार देने में समूह जीवन के महत्त्व को समझने का सिद्धान्त। समूह कार्यकर्त्ता को समूह अनुभव के महत्त्व में विश्वास करना चाहिए।

12) समूह प्रक्रम और उसके विभिन्न तत्वों (जैसे समूह संरचना, भूमिका तथा प्रस्थिति, और उत्तरदायित्व का विभाजन) को समझने का सिद्धान्त।

13) समूह में सहयोग, द्वंद्व, समायोजन, प्रतिरोध और उभयभाविता (ambivalence) के प्रक्रम के साथ अंतरंगता

14) समूह प्रक्रम में संशोधन का सिद्धान्त। समूह कार्यकर्त्ता समूह की गतिविधियों के परिणाम को हमेशा ध्यान में रखता है। यदि यह वैसा नहीं हुआ जैसा कि होना चाहिए, तो वह समूह सदस्यों को सुझाव देता है कि वे अपने कार्यकलापों और कार्यक्रमों में संशोधन करें।

15) नए अवसर प्रदान करने का सिद्धान्त। समूह कार्यकर्त्ता का यह काम होता है कि वह समूह के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य के अवसरों के प्रति और उन अवसरों का लाभ उठाने के तरीकों और साधनों के प्रति भी जागरूक करे।

16) रचनात्मक सीमाओं के उपयोग का सिद्धान्त। कोई भी व्यक्ति अपने आपमें पूर्ण नहीं होता। यह बात समूह सदस्यों पर भी लागू होती है। उनमें जो भी क्षमता और योग्यता है उसका समुचित उपयोग समूह को करना चाहिए, और सीमाएँ चाहे जो भी हों उन्हें पूरे तौर पर समझना चाहिए और उन सीमाओं के भीतर ही काम करने के प्रयास होने चाहिए।

17) स्वयं के सचेत उपयोग का सिद्धान्त। समूह कार्यकर्त्ता का काम होता है। समूह के अंतःक्रिया प्रक्रम को दिशा दिखाना। उसे समूह की गतिविधियों में केवल तभी हस्तक्षेप करना चाहिए जब इसकी आवश्यकता हो और सदस्य उसकी सहायता की माँग करें। समूह के सदस्यों को यह नहीं सोचना चाहिए कि कार्यकर्त्ता उनके मामलों में अनावश्यक रूप में हस्तक्षेप कर रहा है।

18) वैज्ञानिक कार्य योजना का सिद्धान्त। इसका यह अर्थ होता है कि समाज समूह कार्यकर्त्ता पहले समूह की समस्या का पता लगा और बाद में, इकट्ठा किए गए तथ्यों के आधार पर, उसका निदान किया जाए। उसके बाद समस्या के समाधान के लिए और समूह के विकास के लिए कार्य योजना तैयार की जानी चाहिए।

19) स्वीकार्यता का सिद्धान्त। इसका यह अर्थ होता है कि समूह कार्यकर्त्ता को सदस्यों की उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए जैसे कि वे हैं, और इस प्रक्रिया में उसे किसी सदस्य की कमजोरी को लेकर उसकी भर्त्सना नहीं करनी चाहिए। समूह के स्तर पर, उसे समूह कार्यकर्त्ता की सेवाएँ लेनी ही चाहिए।

20) मूल्यों को समझने का सिद्धान्त। मूल्य तो व्यवहार की अभिव्यक्ति की दिग्दर्शक शक्ति होते हैं; समूह की समस्याओं से निपटते समय उन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए।

21) विशिष्ट उद्देश्यों के निर्धारण का सिद्धान्त। उद्देश्यों को समूह के लिए और समूह कार्यकर्त्ता के लिए भी स्पष्ट होना चाहिए।

22) संसाधन के सदुपयोग का सिद्धान्त। समूह की विभिन्न आवश्यकताएँ हो सकती हैं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति एक अभिकरण से नहीं हो सकतीय इसलिए कार्यकर्त्ता को समुदाय के संसाधनों का दोहन करना चाहिए।

23) समूह की गतिविधियों के मूल्यांकन, सतत परीक्षण और आंकलन का सिद्धान्त।

बोध प्रश्न I

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समूह कार्य के सिद्धान्तों की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 समाज समूह कार्य में कार्यक्रम नियोजन

समाज समूह कार्य में कार्यक्रम नियोजन – ट्रेकर

समूह कार्य में यदि किसी कार्यक्रम को अधिकतम मूल्यवान बनना है, तो इसेः

1) व्यक्ति केन्द्रित होना होगा।

2) विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करना होगा।

3) समूह सदस्यों के हितों और आवश्यकताओं से विकसित होना होगा।

4) सदस्यों को उनकी पूरी योग्यता के साथ योजना बनाने के कार्य में संलिप्त करना होगा।

5) एक सहायक व्यक्ति के रूप में कार्यकर्त्ता का सदुपयोग करना होगा। कार्यकर्त्ता की भूमिका कार्यक्रम प्रस्तुत करने की नहीं होती, अपितु वह तो यहाँ सदस्यों की सहायता के लिए होता है कि वे अपना कार्यक्रम स्वयं बनाएँ।

'कार्यक्रम' एक अवधारणा है जो अपने व्यापक अर्थ में सदस्य व्यक्तियों और समूह की उन गतिविधियों, संबंधों, अंतःक्रियाओं और अनुभवों को अपने में समेटे रहती हैं जिनका नियोजन और क्रियान्वयन जानबूझ कर और कार्यकर्त्ता की मदद से किया जाता है; और इसका उद्देश्य व्यक्तियों और समूह की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। इस प्रकार, कार्यक्रम एक प्रक्रम और अभिव्यक्ति का माध्यम होता है जिसका उद्देश्य क्षेत्र विशेष में कार्यक्रम का नियोजन और अनुभव करना होता है। समूह कार्यकर्त्ता सचेत होकर कार्यक्रम के 'क्या' अर्थात् विषयवस्तु का संबंध कार्यक्रम के 'कैसे' अर्थात् माध्यम और 'क्यों' अर्थात् उद्देश्य से जोड़ता है; और इस प्रकार वह एक अत्यंत कौशलपूर्ण कार्य में लगा होता है। कार्यक्रम विकास प्रक्रम को समूह की अपनी संभावनाओं–क्षमताओं का प्रस्फुटन होना चाहिए।

कार्यक्रम विकास में समाज कार्यकर्त्ता का प्राथमिक कार्य समूह के सदस्यों के बीच अंतःक्रिया के प्रक्रम को दिग्दर्शित करना होता है। समाज समूह कार्य में कार्यकर्त्ता के दिग्दर्शन से किसी अभिकरण के परिवेश में कार्यक्रम के परिप्रेक्ष्य में सदस्यों की अंतःक्रिया का सदुपयोग किया जाता है। अंतःक्रिया का संबंध एक पारस्परिक किस्म के भागीदारी व्यवहार से होता है। अंतःक्रिया स्वयं में लक्ष्य नहीं होता अपितु समूह के लक्ष्य की प्राप्ति का एक साधन होता है।

कार्यक्रम नियोजन के सिद्धान्त

1) कार्यक्रम को समूह के सदस्य व्यक्तियों की आवश्यकताओं और उनके हितों से निकलना चाहिए।

2) कार्यक्रम में सदस्यों की आयु, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और आर्थिक अंतर जैसे कारकों को ध्यान में रखना चाहिए।

3) कार्यक्रम से व्यक्तियों को अनुभव और अवसर प्राप्त होने चाहिए, जिनका चयन वे अपनी रुचि और मूल्यों के कारण स्वेच्छा से करते हैं।

4) कार्यक्रमों को लचीला और विविधतापूर्ण होना चाहिए जिससे कि वे विभिन्न आवश्यकताओं और हितों को पूरा कर सकें और भागीदारी के अधिकतम अवसर प्रदान कर सकें।

5) कार्यक्रम को सरल से अधिक जटिल की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। यह विकास योग्यता और तत्परता में समूह वृद्धि के परिणामस्वरूप होना चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि हमारे कार्यक्रम सामाजिक दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण हों तो हमें प्रारंभ में 'व्यक्तिगत' से आगे बढ़ते हुए 'सामाजिक' अथवा 'सामुदायिक' विमर्श को अंतिम लक्ष्य बनाना चाहिए।

2.5 समाज समूह कार्य के कौशल

सामान्य अर्थ में, कौशल का अर्थ होता है कार्यकलाप करने की व्यक्ति की क्षमता। वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार यह "कार्यान्वयन और निष्पादन का ज्ञान और उसमें प्रवीणता'' होनी है। वर्जीनिया रॉबिन्सन इसे ''विशिष्ट सामग्री में बदलाव की प्रक्रिया को गति देने और नियंत्रण करने की ऐसी क्षमता'' बताती हैं ''कि सामग्री में होने वाला बदलाव सामग्री की गुणवत्ता और क्षमता के सदुपयोग और सरोकार की अधिकतम मात्रा से प्रभावित होता है।'' ट्रेकर ने पद्धति और कौशल को इस प्रकार परिभाषित किया है: "पद्धति का अर्थ होता है ज्ञान और सिद्धान्तों पर आधारित अंर्तदृष्टि और समझ का उद्देश्यपूर्ण उपयोग। कौशल एक स्थिति विशेष में ज्ञान और समझ के अनुप्रयोग की क्षमता होती है।''

जेकिन्स ने समूह की स्थिति में समाज समूह कार्यकर्त्ता के और अधिक उत्पादक होने के लिए कुछ कौशलों को अनिवार्य बताया है:

1) सदस्यों के बीच स्वतंत्रतापूर्वक और स्पष्ट रूप में विचारों का ऐसी भाषा में आदान–प्रदान करना जिसे सभी व्यक्ति समझ सकें, और इसमें बहस शुरू होने अथवा भावनाएं आहत होने का कोई भय न हो।

2) वस्तुनिष्ठ स्तर पर यह जाँच करना कि समूह और इसके सदस्य कितनी अच्छे प्रकार से कार्य कर रहे हैं।

3) समूह सदस्यों के बीच नेतृत्व कार्यों में साझेदारी करना और सभी की भावनाओं के प्रति संवेदनशील होना।

4) समूह में नए विचारों और नए सदस्यों को अदम्य द्वंद्व के बिना स्वीकार करना और दूरगामी उद्देश्यों की प्राप्ति के प्रति और असफलताओं से लाभ उठाने के प्रति स्वयं को अनुशासित करना।

5) अपनी समस्याओं के प्रति स्पष्ट रूप में सोचना, समस्याओं के कारण ढूँढ़ना और उनका कोई हल निकालना।

6) सदस्यों की भावनाओं और इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपनी प्रविधियों और योजनाओं को समायोजित करना।

7) आवश्यकतानुसार नए कामों अथवा समितियों का सृजन करना और आवश्यकता पूरी हो जाने पर उन्हें या समूह को भी भंग कर देना।

फिलिप्स ने समाज समूह कार्य के निम्नलिखित कौशल बताए हैं:

I) अभिकरण प्रकार्यों का उपयोग करने का कौशल

समूह कार्यकर्त्ता को अभिकरण के प्रकार्यों को पूरा करने में कौशलपूर्ण होना चाहिए। उसे समुदाय में अभिकरण के कामों का प्रचार करने और समुदाय तथा समाज में योगदान करने का हमेशा प्रयास करना चाहिए। इस संदर्भ में वह निम्नलिखित कार्यकलाप करता है:

1) **प्रवेश प्रक्रम**

जो कार्यकर्त्ता अभिकरण का प्रवेश प्रक्रिया के समय अभ्यर्थियों से मिलता है, उसे उन आवेदकों से यह चर्चा करना होती है कि वे अभिकरण से क्या चाहते हैं, और यह भी कि अभिकरण में उनके विशेषाधिकारों और उत्तरदायित्वों के संदर्भ में उनके लिए क्या संभावनाएं हैं।

2) **समूह को अभिकरण से जोड़ना**

कार्यकर्त्ता समूह को यह समझाने का प्रयास करता है कि अभिकरण का क्या उद्देश्य है और उनकी ओर से तथा अन्य समूहों की ओर से किस प्रकार के जिम्मेदाराना व्यवहार की अपेक्षा की जाती है।

3) **समूह कार्य प्रक्रम के माध्यम से व्यक्ति की सेवा**

अभिकरण का एक कार्य यह भी होता है कि वह समूह इकाइयों को समाज के लिए उपयोगी बनने में मदद पहुंचाएँ और व्यक्तियों की भी सहायता करें। इसलिए, समाज कार्यकर्त्ता का ध्यान एक समूची इकाई के रूप में समूह के विकास पर और प्रत्येक व्यक्ति के समूह के उपयोग पर होना चाहिए।

4) **बैठकों के समूह के बाहर व्यक्ति के साथ कार्य करना**

यद्यपि कार्यकर्त्ता समूह प्रक्रम के भीतर अपनी सेवाएं प्रदान करता है, तथापि वह आवश्यकता होने पर सदस्य के लिए समूह अनुभव के बेहतर उपयोग हेतु व्यक्ति की सहायता भी करता है।

5) **संदर्भ प्रक्रम**

समूह कार्य अभिकरण की सेवा का एक महत्त्वपूर्ण भाग होता है समूह कार्य अभिकरण के भीतर न निपटाई जा सकने वाली समस्याओं के समाधान में मदद के लिए अन्य सामुदायिक सेवाओं के उपयोग पर विचार करने के प्रक्रम में सदस्यों और उनके अभिभावकों (माता–पिता) के साथ कार्य करना।

II) भावनाओं के संचार का कौशल

समाज समूह कार्यकर्त्ता में निम्नलिखित कौशल होने चाहिए।

1) कार्यकर्त्ता की भावनाएँ

समाज समूह कार्यकर्त्ता का एक अनिवार्य गुण होता है दूसरों के साथ महसूस करने की क्षमता।

2) समूह सदस्य की भावनाएँ

कार्यकर्त्ता में यह कौशल होना चाहिए कि वह समूह सदस्यों की भावनाओं को जान, स्वीकार और व्यक्त कर सके और उनकी भावनाओं के प्रति उत्तरदायी हो।

3) समूह की भावनाएँ

प्रत्येक सदस्य की दूसरे सदस्यों के साथ जब अंतःक्रिया होती है, तो उससे समूह भावना का निर्माण होता है।

III) वर्तमान के यथार्थ के उपयोग का कौशल

इसके अंतर्गत समाज कार्यकर्त्ता दो काम करता हैः

1) उद्देश्यपूर्ण कार्यकलापों हेतु समूह के विद्यमान हित का सदुपयोग करना।

2) जिम्मेदाराना निर्णय करने में समूह की मदद करना।

IV) समूह संबंधों को उत्प्रेरित और उपयोग करने का कौशल

1) समाज समूह कार्यकर्त्ता को समूह के प्रत्येक सदस्य को इस योग्य बनाना चाहिए कि वह अन्य सदस्यों के साथ संबंध के संदर्भ में अपनी भूमिका का पता करें और उसे निभाएँ।

2) उसमें समूह के संबंधों को मजबूत बनाने के लिए कार्यक्रमों के उपयोग का कौशल होना चाहिए।

ट्रेकर ने समाज के समूह कार्य के निम्नलिखित बुनियादी कौशलों का उल्लेख किया है:

1) उद्देश्यपूर्ण संबंध स्थापित करने का कौशल

क) समूह कार्यकर्त्ता में समूह की स्वीकृति पाने और स्वयं को एक सकारात्मक व्यावसायिक आधार पर समूह से संबद्ध करने का कौशल होना चाहिए।

ख) समूह कार्यकर्त्ता में समूह के व्यक्तिगत सदस्यों को सहायता देने का कौशल होना चाहिए जिससे वे एक–दूसरे को स्वीकार करें और साझा प्रयासों में समूह के साथ भागीदारी करें।

2) समूह की स्थिति के विश्लेषण का कौशल

क) कार्यकर्त्ता में समूह के विकास स्तर को जानने का कौशल होना चाहिए जिससे वह यह निर्धारित कर सके कि स्तर क्या है, समूह की आवश्यकता क्या है, और समूह से किस प्रकार आगे बढ़ने की अपेक्षा की जा सकती है। इसके लिए विश्लेषण और निर्णय के आधार पर समूहों के प्रत्येक पर्यवेक्षण का कौशल जरूरी होता है।

ख) समूह कार्यकर्त्ता में समूह की इस संदर्भ में सहायता करने का कौशल होना चाहिए कि वे विचारों को व्यक्त कर सकें, उद्देश्य तय कर सकें, तात्कालिक लक्ष्यों को स्पष्ट कर सकें और समूह के रूप में इसकी संभावनाओं और सीमाओं को देख सकें।

3) समूह के साथ भागीदारी का कौशल

क) समूह कार्यकर्त्ता में समूह में स्वयं की भूमिकाओं के निर्धारण, विवेचन, ग्रहण और संशोधन का कौशल होना चाहिए।

ख) समूह कार्यकर्त्ता में समूह सदस्यों की सहायता करने का कौशल होना चाहिए जिससे वे भागीदारी कर सकें, अपने बीच नेतृत्व को तलाश सकें और स्वयं की गतिविधियों की जिम्मेदारी ले सकें।

4) समूह की भावनाओं के आदर का कौशल

क) समूह कार्यकर्त्ता में यह कौशल होना चाहिए कि वह समूह के विषय में स्वयं की भावनाओं को नियंत्रण में रख सकें, और उसमें प्रत्येक नई स्थिति का अत्यधिक वस्तुनिष्ठता के साथ अध्ययन करने का कौशल होना चाहिए।

ख) समूह कार्यकर्त्ता में समूह की इस संदर्भ में सहायता करने का कौशल होना चाहिए कि वे स्वयं की नकारात्मक तथा सकारात्मक (दोनों प्रकार की) भावनाओं को अभिव्यक्ति दें। उसमें समूहों की इस बात के लिए भी सहायता करने का कौशल होना चाहिए कि वे समूह अथवा अंतःसमूह द्वंद्वों के माध्यम से कार्य के एक अंग के रूप में स्थितियों का विश्लेषण कर सकें।

5) कार्यक्रम विकास में कौशल

क) समूह कार्यकर्त्ता में समूह चिंतन के दिग्दर्शन का कौशल होना चाहिए जिससे हितों और आवश्यकताओं को समझा और प्रकट किया जा सके।

ख) समूह कार्यकर्त्ता में यह कौशल होना चाहिए कि वह उन कार्यक्रमों के विकास में समूहों की सहायता कर सके जिन्हें वे एक ऐसे साधन के रूप में चाहते हैं जिससे उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

6) अभिकरण और समुदाय के संसाधनों के उपयोग का कौशल

क) समूह कार्यकर्त्ता में यह कौशल होना चाहिए कि वह ऐसे विभिन्न संसाधनों की खोज करके उनसे समूह को परिचित कराएँ जिनका सदुपयोग सदस्य कार्यक्रम के उद्देश्य के लिए कर सकते हैं।

ख) समूह कार्यकर्त्ता में कुछ सदस्य व्यक्तियों की इस संदर्भ में सहायता करने का कौशल होना चाहिए कि वे उन आवश्यकताओं के लिए विशेषज्ञ सेवाओं का उपयोग कर सकें जिनकी पूर्ति समूह के भीतर संभव नहीं है।

7) मूल्यांकन का कौशल

क) समूह कार्यकर्त्ता में समूह के साथ कार्य करते समय चल रही विकास प्रक्रियाओं को दर्ज करने का कौशल होना चाहिए।

ख) समूह कार्यकर्त्ता में अपने दर्ज अभिलेखों के उपयोग का कौशल होना चाहिए। उसमें यह कौशल होना चाहिए कि वह समूह को सुधार के साधन के रूप में उसके अनुभवों की समीक्षा के लिए मदद दे सके।

उपर्युक्त चर्चा के आधार पर, और समूह कार्य का अभ्यास करने वालों के लिए अनिवार्य विभिन्न प्रकार के कौशलों पर विभिन्न समाज कार्यकर्त्ताओं के विचारों को ध्यान में रखते हुए, हम उन्हें निम्नलिखित रूप में रख सकते हैं:

I) संप्रेषण (संचार) कौशल

संप्रेषण तो समूह कार्य अभ्यास का केन्द्रीय तत्व है। समाज समूह कार्यकर्त्ता मोटे तौर पर दो प्रकार के संप्रेषण कौशलों का प्रयोग करता है:

i) वे संप्रेषण कौशल जिनका प्रयोग अंर्तव्यैक्तिक सहायता क्रिया को सुगम करने के लिए होता है, और

ii) वे संप्रेषण कौशल जिनका प्रयोग समूह कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति को सुगम करने के लिए होता है।

ऐसे अनेक विशिष्ट कौशल हैं जिनकी मदद से समूह कार्यकर्त्ता अपने काम को और भी प्रभावी ढंग से कर सकता है।

1) कार्यक्रम नियोजन का कौशल

यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है कि समूह कार्यकर्त्ता को समूह के लिए कार्यक्रमों की योजना बनाने में कुशल होना चाहिए। यह भी अनिवार्य है कि कार्यकर्त्ता को कुछ प्रश्नों के उत्तर के संदर्भ में संदेश संप्रेषित करने में कुशल होना चाहिए। उसे समूह के सदस्यों को अपनी भावनाओं का संप्रेषण करने में भी कुशल होना चाहिए।

2) स्वयं की भूमिका पहचानने का कौशल

समूह कार्य अभ्यास का यह एक महत्त्वपूर्ण चरण है। कार्यकर्त्ता को यह जानना चाहिए कि वह समूह के मामलों में अपने हस्तक्षेप के प्रति उसे कैसे आश्वस्त करेगा।

3) समूह निर्माण और समूह में संप्रेषण के उद्देश्य को समझाने का कौशल

प्रत्येक व्यक्ति किसी समूह का सदस्य बनने से पहले उसकी सदस्यता से मिलने वाले लाभों के विषय में जानना चाहता है। यदि वह संतुष्ट होता है, तो आगे आता है और उस समूह का सदस्य बन जाता है। इसलिए, समूह कार्यकर्त्ता में यह कौशल होना चाहिए कि वह लोगो को अभिकरण की सुविधाएँ लेने के लिए समूह का सदस्य बनने को आश्वस्त कर सके। फिर कार्यकर्त्ता यह समझता है कि समूह में किस प्रकार संप्रेषण करना चाहिए कि समूह अपने लक्ष्य में आगे बढ़ सके।

4) मौखिक संप्रेषण (संचार) के विवेचन का कौशल

समूह कार्यकर्त्ता का यह काम होता है कि वह समूह के सदस्यों के बीच चलने वाले मौखिक संप्रेषण अथवा संवाद पर नजर रखे क्योंकि यदि यह गलत रास्ते पर जाता है तो उससे समूह का बुनियादी उद्देश्य नष्ट हो सकता है। उसे हमेशा इसे सही दिशा में ले जाने का प्रयास करना चाहिए।

5) प्रश्न का उत्तर देने का कौशल

समूह प्रक्रम के दौरान समूह के सदस्य कुछ प्रश्न और शंकाएँ उठाते हैं। यदि उनका सही प्ररिप्रेक्ष्य में उत्तर नहीं दिया गया, तो सदस्य लोग समूह से अपना नाता तोड़ सकते हैं। इसलिए, यह आवश्यक हो जाता है कि समाज समूह के कार्यकर्त्ता को समाज कार्य और मानव व्यवहार का व्यापक ज्ञान हो।

II) प्रभावी सहायक संबंध का कौशल

यह समाज समूह कार्य का केन्द्रीय तत्व है। समूह कार्यकर्त्ता को समूह सदस्यों की निश्छल भाव से चिंता करनी चाहिए। यह संबंध तब और भी जुड़ावपूर्ण और फलदायक होगा, यदि समाज समूह कार्यकर्त्ता में निम्नलिखित कौशल हों:

1) सहानुभूति का कौशल

इसका संबंध सदस्यों की भावनाओं और व्यक्तिनिष्ठ अनुभवों को सही–सही समझने की कार्यकर्त्ता की क्षमता से है। समूह कार्यकर्त्ता को अपने व्यवहार में यह दिखाना चाहिए और समूह सदस्यों को भी यह लगना चाहिए कि कार्यकर्त्ता उनके कल्याण में सच्ची रुचि ले रहा है। इससे समूह कार्यकर्त्ता और समूह के बीच विश्वास बनने में सहायता मिलेगी।

2) सदस्य की जानकारी को प्रोत्साहित करने का कौशल

इसका संबंध इस कथन से है जो सदस्य को कार्यकर्त्ता के स्पष्टीकरण का जवाब देने को प्रोत्साहित करता है। इससे सदस्यों को प्रश्न पूछने और असहमति के किसी भी मुद्दे को उठाने का अवसर मिलता है।

3) सदस्यों की भूमिका बताने का कौशल

यह एक आम प्रवृत्ति है कि प्रत्येक व्यक्ति सुविधाएँ और अधिकार तो चाहता है, किन्तु अपने कर्तव्य निभाने में उसकी रुचि कम होती है। यह समाज समूह कार्यकर्त्ता का काम होता है कि वह समूह का सदस्य बनने जा रहे सदस्य को समूह में उसकी भूमिका के विषय में बताए। जब वह अपनी भूमिका को लेकर स्पष्ट होगा, तो प्रसन्नतापूर्वक काम करेगा।

4) सक्रिय श्रवण का कौशल

सक्रिय श्रवण में कार्यकर्त्ता सदस्यों को मौखिक तथा गैर–मौखिक (दोनों प्रकार के) संदेश देता है। श्रवण तब सक्रिय श्रवण (सुनना) हो जाता है जब उसके बाद सदस्यों की आवश्यकतानुसार उसका स्पष्टीकरण और व्याख्या की जाती है।

5) सदस्यों के मौन के विषय में पता लगाने का कौशल

कभी–कभी ऐसा होता है कि समूह का एकाध सदस्य मौन रहता है और समूह की गतिविधियों में बहुत कम रुचि लेता है। यह समाज समूह कार्यकर्त्ता का काम होता

है कि वह उस सदस्य के मौन का कारण जाने और उसे सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करे।

6) प्रत्येक सदस्य की खूबियाँ पहचानने का कौशल

इसका संबंध समूह प्रक्रम में किसी विशिष्ट कार्य को करने की सदस्यों की क्षमता में विश्वास व्यक्त करने से है। इससे समूह कार्यकर्त्ता को समूह के सदस्यों की मदद से समूह में विभिन्न प्रकार के कार्यकलापों को करने में मदद मिलेगी, और इस प्रकार समूह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में समृद्ध होगा और विकास करेगा।

7) समस्या के आंशिकीकरण और स्तरीकरण का कौशल

समूह और उसके सदस्यों की सभी समस्याओं का समाधान एक बार में नहीं हो सकता। इसलिए, उनके स्तरीकरण और आंशिकीकरण की जरूरत होती है। इसकी प्राथमिकता समूह कार्यकर्त्ता को तय करनी चाहिए। इससे समूह प्रक्रम को सही दिशा देने में सुगमता होगी।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) प्रवेश प्रक्रिया क्या होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.6 समाज समूह कार्य की अन्तर्निहित मान्यताएँ

यह माना जाता है कि समूह अपने सदस्यों की अंतःक्रिया के माध्यम से अपने लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास करता है। इसलिए, बुनियादी मान्यता यह है कि एक निश्चित उद्देश्य के लिए गठित समूह अपने सदस्यों का यथासंभव सर्वोत्तम उपयोग करके इस उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। ऐसे अनेक कारक हैं जो एक समूह के सदस्यों की अंतःक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं। ये कारक सदस्यों का एक–दूसरे को पसंद करना, दिशा की उपलब्धता, और उपलब्ध संसाधन आदि हो सकते हैं। जिस समूह के सदस्य एक–दूसरे को नापसंद करते हैं वहाँ कार्य उस समूह की अपेक्षा कम कारगर ढंग से होता है जिसके सदस्यों में संबंध मित्रवत होते हैं।

डगलस ने ऐसी कुछ बुनियादी मान्यताओं का उल्लेख किया है जिन पर समूह कार्य अभ्यास आधारित होता है:

1) समूह अनुभव सार्वभौमिक होता है और मानव अस्तित्व का एक अनिवार्य अंग भी।

2) समूह का उपयोग व्यक्तियों की अभिवृत्तियों और व्यवहार में बदलाव लाने के लिए किया जा सकता है।

3) समूह ऐसे अनुभव प्रदान करता है जिनका परिवीक्षण अथवा चयन किसी न किसी प्रकार लाभकारी लक्ष्यों के लिए किया जा सकता है। समूह के बाहर

के जीवन की बिल्कुल उपेक्षा नहीं की जाती, यह तो समूह के भीतर की यथास्थिति पर विचार करने के पक्ष में ध्यान–केन्द्र से हटा दिया जाता है।

4) समूह साझा अनुभव प्रदान करता है जिससे सभी लोग अपनापन और सह–विकास के बोध के साथ किसी साझा स्थिति को प्राप्त करते हैं।

5) समूह ऐसे बदलाव लाते हैं जो अन्य किसी भी पद्धति से प्राप्त बदलावों की अपेक्षा अधिक स्थायी होते हैं और अधिक जल्दी भी प्राप्त किए जाते हैं।

6) समूह सीखने की पूर्ववर्ती प्रक्रिया से पैदा हुई कठिनाइयों और ह्रास को हटाने में मदद करते हैं।

7) दूसरों की सहायता करने के साधन के रूप में समूह अल्प संसाधनों (कुशलकर्मी, समय आदि) के प्रयोग में मितव्ययी हो सकते हैं।

8) समूह स्वयं के व्यवहार की जाँच कर सकता है और इस प्रक्रिया में समूह व्यवहार के सामान्य प्रतिमानों के विषय में सीख सकता है।

सामान्य रूप में, समाज समूह कार्य निम्नलिखित बुनियादी मान्यताओं पर आधारित होता हैः

1) मनुष्य एक समूह प्राणी है।

2) सामाजिक अंतःक्रिया समूह–जीवन का परिणाम होता है।

3) मनुष्य की उपलब्धियों को सामूहिक अनुभवों के माध्यम से बढ़ाया, बदला और विकसित किया जा सकता है।

4) समस्याओं के समाधान की क्षमता को समूह के अनुभवों के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है।

5) समूह के अनुभव व्यक्तिगत आकांक्षाओं और इच्छाओं के स्तर को बदल देते हैं।

6) समूह की मनोरंजन–गतिविधियाँ व्यक्ति और समाज दोनों के लिए लाभकारी होती हैं।

7) समूह अनुभव का व्यक्तियों पर स्थायी प्रभाव होता है।

8) समूह कार्य अपना ध्यान हमेशा दो प्रकार की गतिविधियों पर लगाता है–समूह कार्यकम और सामाजिक संबंध।

9) समूह के साथ काम करने के लिए व्यावसायिक (पेशेवर) ज्ञान और कौशल अनिवार्य होते हैं।

10) समूह के साथ काम करने के लिए समस्या–विज्ञान का ज्ञान अनिवार्य होता है।

2.7 समाज समूह कार्य के आदर्श

ज्ञान और समय के बदलाव और उसके साथ समूह कार्य अभ्यास के बारे में चिंतन के महत्त्वपूर्ण बदलावों में अंतर सुस्पष्ट थे। कार्यकर्त्ता की और समूह सदस्यों की भूमिका और समूह की विषयवस्तु की विविध मान्यताओं के आधार पर समाज कार्यकर्त्ताओं ने तीन स्पष्ट समूह कार्य आदर्शों को प्रस्तावित किया है:

1) उपचारात्मक आदर्श

2) मध्यस्थताकारक आदर्श

3) विकासात्मक आदर्श

4) सामाजिक लक्ष्य आदर्श

उपचारात्मक आदर्श (Remedial Model)

उपचारात्मक आदर्श अपक्रिया करने वाले व्यक्तियों पर ध्यान केन्द्रित करता है और समूह का सदुपयोग विसामान्य व्यवहार को बदलने के लिए एक संदर्भ और साधन के रूप में करता है। समूह कार्य अभ्यास के प्रति यह दृष्टिकोण अपनी उपयोगिता उन व्यक्तियों की प्रतिकूल स्थितियों को बदलने पर जोर देकर प्रकट करता है जिनके व्यवहार को समाज ने अस्वीकृत कर दिया है। इस प्रकार के समाज समूह कार्य अभ्यास के मुवक्किल शारीरिक तथा मानसिक रूप में विकलांग, कानूनी अपराधी, भावनात्मक रूप में परेशान, अलग–थलग और अकेले व्यक्ति होते हैं।

मिशीगन स्कूल ने इस आदर्श में योगदान किया। उपचारात्मक आदर्श के विकास का श्रेय विंटर और उसके सहकर्मियों को जाता है। इस आदर्श के अंतर्गत, सामाजिक कार्यकर्त्ता व्यक्ति में बदलाव लाने का प्रयास कर रहा है। लक्ष्य वही है।

उपचारात्मक आदर्श के अनुसार समूह व्यक्तिगत और सामाजिक सम्बंधों में समायोजन की समस्या के उपचार के प्रयोग कर सकता है। विंटर के अनुसार "इस प्रकार की सावधानी से जिन लोगों को सेवाओं की अत्यंत आवश्यकता है कि वे इसके माध्यम से अपनी समस्याओं को समाधान निकलवा सकते हैं, यह सेवाओं का ऐतिहासिक मिशन की प्रतिबद्धता मानी जाएगी।'' मार्गदर्शित समूह अनुभव के द्वारा समाज कार्य में सुधार किया जा सकता है, यह क्लिनिकल उपचार से अधिक बेहतर है।

इस संदर्भ में, समाज कार्यकर्त्ता एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है; वह निम्नलिखित कार्यकलापों के माध्यम से विशेषज्ञ ज्ञान देता है:

1) समाज कार्यकर्त्ता केन्द्रीय व्यक्ति होता है। वह पहचान और अभियानों का पात्र होता है।

2) वह एक प्रतीक और प्रवक्ता होता है। वह समाज के मानकों (नियमों) और मूल्यों को बनाए रखता है।

3) वह एक उत्प्रेरक और उद्दीपक होता है। वह व्यक्ति और समूह को सहायता देता है कि वे एक समूह सदस्य के रूप में अपने लक्ष्य को समझें।

4) वह एक कार्यपालक होता है। वह समूह की गतिविधियों को सुगम बनाता है जिससे कि निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।

इस आदर्श के अंतर्गत जो भी बदलाव होते हैं, वे स्पष्ट रूप में उन सांगठनिक और संस्थागत तत्वों तक सीमित रहते हैं जो व्यक्ति की विक्रिया के लिए जिम्मेदार होते हैं। यद्यपि इस आदर्श का मुख्य ध्यान उस मुवक्किल व्यक्ति पर होता है जो कठिनाई का अनुभव कर रहा होता है, फिर भी यह आदर्श उन व्यक्तियों के लिए भी सहायक होता है जिनके प्रभावित होने की संभावना होती है। इसका अर्थ यह होता है कि इस आदर्श के अंतर्गत ध्यान रोकथाम के पक्ष पर भी होता है।

मध्यस्थताकारक आदर्श या पारस्परिक आदर्श (Mediating or Reciprocal Model)

इस आदर्श का प्रतिपादन 1961 में स्कवार्ट्ज ने किया था। यह आदर्श युक्त व्यक्ति सिद्धान्त, मानवतावादी मनोविज्ञान और एक अस्तित्वगत परिप्रेक्ष्य पर आधारित है। इस आदर्श की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1) लोग और समाज परस्पर निर्भर होते हैं क्योंकि उनकी आवश्यकताएँ साझा होती हैं, और जब इन साझा प्रयासों में हस्तक्षेप होता है, तो उसके परिणामस्वरूप द्वंद्व की स्थिति बनती है।

2) इस द्वंद्व का समाधान तभी संभव होता है जब रुचिशील पक्ष अपने तमाम संसाधनों के साथ अपनी दुविधाओं को समझने का प्रयास करते हैं और उस क्षण उसका सदुपयोग भी करते हैं।

3) इस आदर्श में समूह के अंदर सदस्यों के परस्पर संबंध की, और कार्यकर्त्ता तथा समूह के साथ समग्र संबंध की ओर ध्यान लगाया जाता है।

4) सदस्यों के बीच विद्यमान संबंध ही समूह की विशेषता को प्रकट करता है।

5) इस आदर्श में सदस्यों के सतत और पारस्परिक लेन–देन और कार्यकर्त्ता तथा सदस्य के साथ उनके लेन–देन पर जोर दिया जाता है।

6) यह आदर्श उन उभरते लक्ष्यों और क्रियाओं को महत्त्व देता है जो समूह की भावनाओं पर आधारित होते हैं। इसमें यह विश्वास रहता है कि यदि पक्षों द्वारा मौजूदा वास्तविकताओं में गहन रूप में संलिप्त हो तो उद्देश्यों और लक्ष्यों पर उद्‌गम होगा।

7) मुवक्किल और कार्यकर्त्ता अलग–अलग और साथ मिलकर भी मौजूदा समस्याओं को अपनी पूरी क्षमता के साथ चुनौती देते हैं।

8) बुनियादी शिक्षात्मक प्रक्रियाओं का सदुपयोग किया जाता है जिसमें समस्या के क्रियात्मक तत्वों और भावनाओं का विशिष्टीकरण, संश्लेषण और सामान्यीकरण शामिल होता है।

9) इस आदर्श में समूह के प्रकारों अथवा किस्मों के आधार पर भेद नहीं किया जाता क्योंकि यह मानकर चला जाता है कि यह आदर्श व्यापक रूप में अनुप्रयोग के योग्य है।

इस आदर्श में व्यक्ति और समूह महत्त्वपूर्ण तत्व होते हैं। कार्यकर्त्ता की भूमिका स्थितियों को सुगम बनाने की होती है, और यह पारस्परिक सहायता व्यवस्था की सामर्थ्य पर निर्भर करता हुआ स्वयं की संभाल करता है।

विकासात्मक आदर्श (Developmental Model)

इस आदर्श का विकास बोस्टन विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों ने बोस्टन के नेतृत्व में 1965 में किया था। लोवी इस आदर्श का मुख्य निर्माता है। इस दृष्टिकोण में, समूह को इस रूप में देखा जाता है कि उनमें एक हद तक स्वाधीनता और स्वायत्तता होती है; किन्तु उनके सदस्यों और उनके बीच तथा उनके सामाजिक परिवेश और उनके बीच जो पारस्परिक प्रवाह होता है, वह उनके अस्तित्व, उपयोगिता और उपलब्धियों के लिए अनिवार्य होता है। इस आदर्श की मुख्य विशेषताएँ हैं:

1) यह मुख्यतः सदस्यों के बीच एक लंबे समय में बनी घनिष्ठता और निकटता पर आधारित होता है।

2) कार्यकर्त्ता के उचित हस्तक्षेप के लिए घनिष्ठता की मात्रा पर विचार किया जाता है।

3) अध्ययन, निदान और उपचार का संप्रत्ययीकरण व्यक्तियों, समूह और परिवेश तीनों के स्तर पर किया जाता है।

4) यह आदर्श एरिक्सन के अहं मनोविज्ञान, समूह गतिकी और द्वंद्व सिद्धान्त से ज्ञान अर्जित करता है।

5) समूह कार्यकर्त्ता अध्ययन, निदान और उपचार में लगता है।

6) कार्यकर्त्ता समुदाय, अभिकरण, समूह, व्यक्तिगत सदस्य, उपकरणों और स्वयं अपने साथ एक कार्यकर्त्ता के रूप में जुड़ता है।

7) समूह को समाज के लघु रूप की तरह देखा जाता है।

8) विचारों, अनुभूतियों, भावनाओं और व्यवहार का लगातार आंकलन किया जाता है और उनमें सुधार के प्रयोग किए जाते हैं।

9) समाज समूह कार्यकर्त्ता सदस्य व्यक्ति, समूह अभिकरण और सामाजिक परिवेश के बीच स्थितियों को सुधारने का प्रयास करता है।

10) संक्षेप में, हम यह कह सकते हैं कि विकासात्मक आदर्श मध्यस्थताकारक, उपचारात्मक और पारंपरिक दृष्टिकोणों के बीच एक समझौता है।

सामाजिक लक्ष्य आदर्श (Social Goals Model)

सामाजिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और सामाजिक परिवर्तन इस आदर्श की बुनियादी अवधारणाएँ हैं। यह कहा गया है कि एक समूह में दूसरों के साथ भागीदारी करके व्यक्ति सामाजिक बदलाव ला सकते हैं। सामाजिक क्रिया एक इच्छित परिणाम होता है, और समूह कार्यकर्त्ता को एक प्रभाव डालने वाले तथा सामर्थ्य देने वाले व्यक्ति के रूप में देखा जाता है; वह सामाजिक उत्तरदायित्व के मूल्यों का प्रतीक होता है और बिना किसी राजनीतिक दृष्टिकोण के एक उद्दीपक तथा आदर्श की भूमिका निभाता है। इस आदर्श में समूह के भीतर उभरने वाला नेता अव्यक्त होता है। इस आदर्श का संबंध लोकतंत्र और सामाजिक संदर्भ में व्यक्तिगत क्रिया के उन्नयन, उन्नत आत्म–सम्मान और सामाजिक शक्ति में वृद्धि से होता है जो एक समूह के रूप में और व्यक्ति के रूप में समूह के सदस्यों के लिए होता है। नेता का कौशल मुख्यतः 'कार्यक्रमण' (programming) में निहित होता है। (वेन्स 1964)(कोनोप्का 1958)।

तीन और हस्तक्षेप होते हैं जिन्हें समाज समूह कार्य में प्रभावी अभ्यास के लिए उपर्युक्त आदर्श माना जाता है।

1) समग्राकृति (Gestalt) उपचार

2) संव्यवहार (Transactional) विश्लेषण

3) व्यवहारपरक (Behavioural) आदर्श

समग्राकृति उपचार

समग्राकृति उपचार में कार्यकर्त्ता को यह सीखने में मदद करता है कि वे परिपक्व होने से स्वयं को कैसे करेंगे। कार्यकर्त्ता का यह लक्ष्य होता है कि वह मुवक्किल की इस दिशा में सहायता करे कि वह उस उत्तरदायित्व को कैसे जानें और स्वीकार करें कि वे स्वयं कैसे बेहतर अनुभव कर सकते हैं।

संव्यवहार विश्लेषण

यह अंतः और अंर्तव्यैक्तिक प्रक्रमों के विश्लेषण और व्याख्या की प्रक्रिया होती है। इस उपचारात्मक आदर्श का विकास बर्न ने किया था। बर्न का कहना था कि व्यक्तिगत बदलाव को समूह मनोपचार के माध्यम से अधिकतम सीमा तक पहुँचाया जा सकता है जहाँ सामाजिक प्रक्रियाएँ व्यक्ति और व्यक्ति के बीच न होकर और अधिक विविधतापूर्ण हो जाती हैं। बर्न के अनुसार, व्यक्ति तो सामाजिक प्रक्रमों की देन होते हैं और वे सामाजिक प्रक्रमों का उपयोग करते हैं। समूह के परिवशों के भीतर, व्यक्तियों को उनके स्वघाती व्यवहार के प्रति सचेत किया जा सकता है। जब वे सचेत हो जाएँगे तो इसे बदलने के लिए कुछ कर सकेंगे।

बर्न के अनुसार संव्यवहार विश्लेषण की चार प्रमुख विशेषताएँ होती हैं:

1) संरचनात्मक विश्लेषणः यह अहं स्थितियों पर आधारित विचारों और अनुभूतियों को विश्लेषित करने की एक पद्धति होती है।

2) संव्यवहार विश्लेषणः इसमें एक व्यक्ति की अहं स्थितियों और दूसरे किसी व्यक्ति की अहं स्थितियों के बीच होने वाली अंतःक्रियात्मक प्रक्रियाएँ आती हैं।

3) खेल (Game) विश्लेषणः इसमें व्यक्तियों के समस्यामूलक अंर्तव्यैक्तिक व्यवहार के पुनरावृत्त प्रतिमानों की जाँच आती है।

4) आलेख (script) विश्लेषणः इसका संबंध उन प्रारंभिक निर्णयों और रुख से होता है जो व्यक्ति अपने बचपन में अपनाता है।

समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका एक अध्यापक और एक नेता की होती है जो सदस्यों को मुख्य अवधारणाओं के विषय में समझाता है और उन्हें उन अलाभकारी स्थितियों के बारे में पता करने में मदद देता है जिनमें उन्होंने अपने प्रारंभिक निर्णय किए थे, जीवन योजनाओं को अपनाया था और लोगों के संबंध स्थापित करने की रणनीतियाँ बनाई थीं।

व्यवहारपरक आदर्श

इस आदर्श के अनुसार विशिष्ट समूह कार्यक्रमों को विक्रियात्मक प्रतिमानों को बदलने और नई शैलियों को सीखने के लिए लागू किया जाता है। व्यवहारपरक समूह उपचारक की विशेषज्ञता तो समूह के संदर्भ के भीतर प्रत्येक सदस्य व्यक्ति के लिए एक उपचार योजना के आंकलन और निर्माण के लिए आवश्यक होती है। समूह कार्यकर्त्ता विघ्नकारी व्यवहार के उन विशिष्ट तत्वों की गणना करता है जिन्हें कम होना चाहिए और वांछित व्यवहार के उन विशिष्ट तत्वों की गणना करता है जिनका विकास होना चाहिए। समूह के अन्य सदस्य पूरी उपचार प्रक्रिया के दौरान सहायता और जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

बोध प्रश्न III

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समाज समूह कार्य के आदर्शों की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.8 सारांश

समाज समूह कार्य तो समाज कार्य का एक प्राथमिक तरीका है जिसका विश्वास है कि व्यक्ति का विकास मुख्यतः समूह के अनुभवों पर निर्भर करता है। ऐसी अनेक सामाजिक मनोवैज्ञानिक समस्याएँ हैं जिनका समाधान समूह की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता। व्यक्तित्व का विकास कुछ हद तक समूह जीवन के उपयोग पर भी निर्भर है। समूह कार्यकर्त्ता को अपने व्यवहार में कुछ सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए। ये मुख्य सिद्धान्त हैंः नियोजित समूह गठन; विशिष्ट उद्देश्यः उद्देश्यपूर्ण संबंध; सतत व्यैक्तिकरण; दिग्दर्शित समूह अंतःक्रियाः लोकतांत्रिक समूह आत्म–निर्धारण; प्रगतिशील कार्यक्रम अनुभव; संसाधन सदुपयोग और सतत मूल्यांकन। समाज समूह कार्यकर्त्ता के कुछ कौशल भी होते हैं जो समूह की समस्याओं के निपटारे के समय उसे प्रभावशील बनाते हैं। ये हैंः उद्देश्यपूर्ण संबंध स्थापित करना; समूह स्थिति का विश्लेषण; आवश्यकता पड़ने पर समूह प्रक्रिया में भागीदारी; समूह की भावनाओं का ध्यान; प्रगतिशील कार्यक्रम विकास अभिकरण संसाधनों का उपयोग इत्यादि। समाज समूह कार्यकर्त्ता समूह के साथ उपचारात्मक आदर्श अथवा मध्यस्थतापरक आदर्श अथवा विकासात्मक आदर्श का अभ्यास करता है।

2.9 शब्दावली

सिद्धान्त : सिद्धान्त एक मौखिक कथन, सामान्य नियम अथवा कानून होता है जो एक से दूसरी स्थिति की ओर बढ़ने का निर्देश प्रस्तुत करता है। यह सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रत्येक सदस्य व्यक्ति की वृद्धि और विकास हेतु समूह कार्य का अभ्यास करने के संदर्भ में दिग्दर्शक शक्ति का काम करता है।

समस्या : समस्या वह स्थिति होती है जिसमें व्यक्ति अपनी ही कमजोरी अथवा सामाजिक परिवेशगत स्थितियों के कारण उसका निपटारा नहीं कर पाता है। इस प्रकार, कई तरह की समस्याएँ होती हैं जिनका समाधान समूह कार्य अभ्यास के माध्यम से किया जाता है। व्यक्तिगत कमजोरियों को समूह अनुभव के माध्यम से किया जाता है, और यदि इनसे सदस्य व्यक्ति की वृद्धि और विकास में बाधा आती है, तो सामाजिक परिवेशगत बदलाव भी किए जाते हैं।

कौशल : कौशल का अर्थ होता है कार्यकलाप करने की क्षमता। यह व्यक्ति का कौशल होता है कि वह स्थिति विशेष में ज्ञान और समझ का अनुप्रयोग करता है। एक समूह कार्यकर्त्ता के लिए कौशल अनिवार्य होते हैं।

2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

कोनोप्का, गिसेला (1963), सोशल ग्रुप वर्कः ए हैल्पिंग प्रोसेस, पेंटिस हाल, इंक, एंगलवुड क्लिफ्स, एन. जे.।

फ्रेटलैंडर, डब्ल्यू. ए. (संपा.) (1958), कन्सेप्ट्स एंड मेथड्स ऑफ सोशल वर्क, पेंटिस हाल, एम.सी., एंगलवुड क्लिफ्स, एन. जे.

ट्रिकर, एच. बी. (1955), सोशल ग्रुप वर्कः प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिसज, ह्वाइटसाइट, न्यूयार्क।

श्वाट्र्ज, डब्ल्यू (1961), द सोशल वर्कर इन दिस ग्रुप', न्यू पर्सपेक्टिव्ज टु ग्रुपः थ्योरी ऑर्गनाइजेशन एंड प्रैक्टिस में, नेशनल एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर्स, न्यू यॉर्क।

रॉबिन्सन, वी.पी. (1941), द मीनिंग ऑफ स्कूल, द यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वेनिया प्रेस, फ़िलाडेल्फिया।

जेनकिन्स, डेविड एच., सम स्किल्स फॉर इम्प्रूविंग ग्रुप डायनमिक्स।

विंटर, आर. डी. (संपा.) (1941), रीडिंग्स इन ग्रुप वर्क प्रैक्टिस, ऐन, आर्बर, एम आई कैम्पस पब्लिशर्स।

फिलिप्स, हेलन, यू., एसेन्शल्स ऑफ सोशल ग्रुप वर्क स्किल, एसोसिएशन प्रेस, न्यू यार्क।

बालगोपाल, पी. आर. और वासिल, टी.वी.(1983), ग्रुप्स इन सोशल वर्कः एन इकोलॉजिकल पर्सपेक्टिव, मैक मिलन पब्लिशिंग क. इन., न्यू यॉर्क।

हर्बर्ट ए. थेलन (1954), डायनमिक्स ऑफ ग्रुप्स सेट वर्क, दि यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

शेफर, बी. डब्ल्यू. (1988), होरेज्सी सी. आर. और होरेन्सीजी. ए. : टेक्नीक्स एंड गाइडलाइन्स फॉर सोशल वर्क प्रैक्टिस, स्लिन और बेकन, लंदन।

ट्रेविथिक, पैमला (2000), सोशल वर्क स्किल्स – ए प्रैक्टिस हैंडबुक, ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस, फिलोडोल्फिया।

वास, ए.ए. (संपा.) (1996), सोशल वर्क कम्पीटेंसेज, सेज पब्लिकेशंस, लंदन।

मिश्रा, पी.डी. (1994), सोशल वर्कः फिलॉसफी एंड मेथडस, इंटर–इंडिया पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

डगलस, टॉम (1976), ग्रुप वर्क प्रैक्टिस, इंटरनेशनल यूनिवर्सिटीज प्रेस, न्यू यॉर्क ।

मिल्सन, फ्रेड (1973), एन इंट्रोडक्शन टु ग्रुप वर्क स्किल, राउलेज और केगन पॉल, लंदन ।

2.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) नियोजित समूह गठन का सिद्धान्त

विशिष्ट उद्देश्यों का सिद्धान्त

उद्देश्यपूर्ण कार्यकर्त्ता–समूह संबंध का सिद्धान्त

सतत् व्यैक्तिककरण का सिद्धान्त

बोध प्रश्न II

1) प्रवेश प्रक्रिया समूह कार्य का एक हिस्सा है जिसमें समूह कार्यकर्त्ता अभिकरण से संबंधित कार्यों का निष्पादन करता है। समूह कार्यकर्त्ता अपने मुवक्किलों से मिलेगा और उन्हें यह बताएगा कि किस प्रकार से अभिकरण

की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करनी है। वह मुवक्किलों को यह बताएगा कि अभिकरण की क्या अपेक्षाएँ हैं और उनको पूरा करने के लिए क्या कर सकते हैं।

बोध प्रश्न III

1) उपचारात्मक आदर्श, मध्यस्थता आदर्श, विकासात्मक आदर्श और सामाजिक लक्ष्य आदर्श।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 समूह कार्य प्रक्रिया में समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका

*डॉ. अजीत कुमार

रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 समाज समूह कार्य में कार्यकर्त्ता की परिभाषा

3.3 समूह प्रक्रिया में समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका

3.4 विभिन्न स्थापनों में समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका

3.5 सारांश

3.6 शब्दावली

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

यह इकाई समूह कार्य में समाज समूह कार्यकर्त्ता की स्थिति को समझने में आपकी सहायता करेगी। यह समूह प्रक्रिया में समूह कार्यकर्त्ता द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को स्पष्ट करेगी। यह विभिन्न स्थापनाओं में समूह कार्यकर्त्ताओं की भूमिका

* डॉ. अजीत कुमार, एम एस एस इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल वर्क, नागपुर

को समझने में भी सहायता करेगी। इस इकाई का उद्देश्य समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका और प्रभावकारी समूह कार्य अभ्यास में आपको स्वयं इसमें समाहित होने के रूप में मार्गदर्शन उपलब्ध कराना है।

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपः

- समाज समूह कार्य में कार्यकर्त्ता की परिभाषा दे सकेंगे;
- समूह कार्य प्रक्रिया में समाज समूह कार्यकर्त्ताओं की भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे; और
- विभिन्न स्थापनाओं में समूह कार्यकर्त्ताओं की विशिष्ट भूमिकाओं को समझ सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

समाज समूह कार्य में कार्यकर्त्ता अद्‌भुत व महत्त्वपूर्ण होता है। यह कहा जाता है और इससे सभी सहमत भी हैं कि प्रभावकारी समूह कार्य में कार्यकर्त्ता ही प्रमुख होता है। कार्यकर्त्ता अपनी सहायता पूर्ण भूमिका में समूह के लिए मार्गदर्शन और सहायता के प्रावधानों के लिए उत्तरदायी होता है। मौजूद समूह में कार्य करने की कहीं भी एक जैसी और सार्वभौमिक रूप से अपनाई गई शैली नहीं है। एक कार्यकर्त्ता समूह की स्थितियों के लिए विशेष सुसंगत अवधारणा और ज्ञान की संरचना के आधार पर स्वयं अपने लिए कार्य निर्धारण करता है।

समूह के साथ कार्य करते समय सभी समाज कार्यकर्त्ताओं के सम्पूर्ण कार्य समूह के उद्देश्य को प्राप्त करने में लगे प्रवीण सदस्यों की सहायता करना होता है। जब समूह कार्यकर्त्ता ऐसा करता है, उस समय वह विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं का निष्पादन करता है। जब वह विभिन्न प्रकार की विशिष्ट भूमिकाओं को निभाता है, समूह की प्रकृति, समूह का लक्ष्य तथा समूह स्थापना के संबंधों को ध्यान में रखते हुए कार्यों का निर्धारण तय करता है। इस इकाई में हम विभिन्न "भूमिकाओं'' की

चर्चा करेंगे जिन्हें विभिन्न क्षेत्र स्थापनाओं में समूह प्रक्रिया के साथ कार्यकर्त्ता कार्य निष्पादन करता है।

3.2 समाज समूह कार्य में कार्यकर्त्ता की परिभाषा

समाज समूह कार्यकर्त्ता वह व्यक्ति होता है जो ज्ञान, कौशल और मूल्यों से परिपूर्ण होता है। समूह कार्यकर्त्ता सबसे पहले 'एक सहायक व्यक्ति' होता है न कि 'समूह नेता'। उसका प्रभाव प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष होता है। वह बॉस नहीं होता है उसे हम एक अध्यापक कह सकते हैं जो और लोगों से अधिक जानता है और वह समूह संबंधी मामलों का विशेषज्ञ होता है। वह समूह के साथ अपनी सुविधानुसार कार्य करता है किन्तु जब समूह को आवश्यकता होती है तो वह प्रणाली विज्ञान संबंधी सहायता उपलब्ध कराता है।

कार्यकर्त्ता समूह का हिस्सा नहीं होता है परन्तु जब कोई समूह का व्यक्ति या समूह अथवा दोनों लोग यानी समूह और व्यक्ति को उसकी आवश्यकता होती है तब वह उन्हें व्यावसायिक सहायता और सहयोग उपलब्ध कराता है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सभी समूहों में समाज समूह कार्यकर्त्ता की आवश्यकता नहीं होती है। अधिकतर समूहों में अनेक लोग अपने कार्यों को स्वयं समुचित रूप में चलाने के लिए समक्ष होते हैं, वे अपने कार्यक्रमों के संचालन में कुशल होते हैं और वे अपना कार्य स्वयं पूरा कर लेते हैं, इसलिए उन्हें किसी व्यावसायिक कार्यकर्त्ता की आवश्यकता नहीं होती है। व्यावसायिक समूह कार्यकर्त्ता एक व्यावसायिक सहायक व्यक्ति होता है, इसलिए उसका प्रयोग उसी समय किया जाएगा, जब उसकी आवश्यकता होगी।

समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका समूह कार्य में विभिन्न समूहों में विभिन्न स्तरों और अवस्थाओं में आरम्भ होती है। वह अपनी भूमिका समूह बनने से पूर्व भी निभा सकता है जबकि समूह अपने समूह के रूप में निर्मित भी नहीं हुआ है। यह भी विशेषकर सच है कि जब एक कार्यकर्त्ता किसी अभिकरण में होता है वह

जानबूझकर भी समूह का निर्माण कर लेता है। एक निर्मित समूह में उसकी भूमिका की आवश्यकता समूह की स्थितियों पर निर्भर करती है और जब किसी विशिष्ट समूह को इसकी आवश्यकता होती है तब उसकी सेवाएँ ली जाती हैं। कार्यकर्त्ता की भूमिका विभिन्न समूहों में विभिन्न प्रकार की होती हैं। यह इसलिए होता है कि समूह किस प्रकार की स्थिति में किस तरह से संचालित होता है। एक समूह कार्यकर्त्ता में अत्यधिक लचीलापन और विभिन्न स्थितियों को स्वीकार करने और उनके अनुसार ही स्वयं को ढालने की क्षमता का होना अत्यंत आवश्यक होता है। यह आवश्यक नहीं है कि एक समूह में जैसा काम है वह दूसरे समूह में भी वैसा ही हो। अतः विभिन्न स्थितियों और अवस्थाओं के अनुसार कार्यकर्त्ता को कार्य निष्पादन का व्यावसायिक अनुभव होना अत्यंत आवश्यक है।

समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका को प्रभावित करने वाले कारक

कार्यकर्त्ता को अपनी भूमिका के विशेष पक्षों को परिभाषित करने से पहले समूह और उसके आस–पास के वातावरण को अच्छी तरह से समझने की आवश्यकता होती है तभी एक कार्यकर्त्ता अपनी भूमिका निश्चित कर सकता है। प्राथमिक निर्धारण करने या कारकों को अपनाने के लिए कार्यकर्त्ता की भूमिका को प्रभावित करने वाले कारक निम्न प्रकार हैं:

1) समुदाय स्थापन

2) अभिकरण की प्रकृति, उसके कार्यक्रम और क्षेत्र

3) अभिकरण के द्वारा दी जाने वाली सुविधाएँ और कार्यक्रम

4) समूह का प्रकार जिसमें वह कार्य कर रहा है

5) व्यक्तिगत सदस्य के हित लाभ, आवश्यकताएँ, योग्यताएँ और सीमाएँ

6) कार्यकर्त्ता का कौशल और उसकी सक्षमता तथा

7) समूह कितनी सहायता चाहता है उसकी मात्रा. और कितनी सहायता लेने की इच्छा है जो उसे एक कार्यकर्त्ता से लेनी है।

उपर्युक्त सभी घटक प्रत्येक समूह की स्थिति में संचालित होते हैं। इसके अतिरिक्त कार्यकर्त्ता अलग से इन घटकों का ध्यानपर्वक अध्ययन करता है और जब वह अपनी भूमिका निर्धारण के बिन्दु पर एक दूसरे के साथ संबंध बनाता है तो उनसे वह प्रभावित होगा।

इसलिए यह बहुत ही कठिन कार्य है और यह संभव नहीं है किसी कार्यकर्त्ता की निश्चित भूमिका का वर्णन किया जा सकें क्योंकि ऐसी कोई निश्चित तकनीकें नहीं हैं जिन्हें बिना पारवर्तन किए सभी समूहों में लागू की जा सकें। कुछ समूह नए–नए निर्मित होने पर हो सकता है कार्यकर्त्ता अपनी जिम्मेदारियों को पूरे ही उत्तरदायित्व से पूरा करें क्योंकि वे एक साथ कार्य करने के तरीकों से अनभिज्ञ होते हैं। हो सकता है कुछ समय के बाद वह अपने कार्यों से मुँह मोड़ने लगें यानी काम करना छोड़ दें जब समूह का पूरा विकास हो जाए। एक समूह के साथ कार्यकर्त्ता हो सकता है पूरी शक्ति से कार्य करे, उसकी सहायता जिसके साथ वह जुड़ा है और दूसरे समूहों के साथ कुछ बड़े कामों को अपने हाथ में ले सकता है और उन्हें पूरा भी कर सकता है। वह सोचता है कि वह इस तरह के कार्य करने के लिए तैयार है और अभिकरण में समूह के मौलिक अनुभवों का प्रयोग करके सहयोग कर सकता है।

कार्यकर्त्ता जिस अभिकरण का प्रतिनिधित्व कर रहा है उसे प्रमुख मूल या स्थायी घटकों के बारे में पूरी तरह से जानकारी प्राप्त करनी चाहिए, उनका गहरा अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। वह समूह का सदस्य नहीं है किन्तु एक कार्यकर्त्ता के नाते यह उसकी जिम्मेदारी है कि वह अभिकरण के माध्यम से समूह की पूरी सहायता अथवा जितनी उनको आवश्यकता है वह सहायता करे। वह अपने कौशल को एक समूह कार्यकर्त्ता के रूप में अभिकरण की स्वीकृत नीतियों और प्रक्रियायों के अंतर्गत उनका भरपूर प्रयोग करे। वह समूह में क्या करता है, यह इस पर निर्भर

करेगा कि जिस अभिकरण के साथ कार्य कर रहा है उसके कार्य करने की मौलिक प्रणाली क्या है और उसकी कार्य करने की प्रक्रिया क्या है। इसके परिणामस्वरूप यह बहुत महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है कि संबंधित समूह से पहले ही अपनी भूमिकाओं के संबंध में स्पष्ट स्थिति का वर्णन कर लें ताकि समूह को पता लग जाएगा कि वे, उनसे किस प्रकार का कार्य या सहायता ले सकते हैं। उन्हें अभिकरण के संबंध में अवगत करा देना चाहिए और समूह को इसकी जानकारी हो जाए कि कार्यकर्त्ता किस प्रकार के विचार रखता है जिस अभिकरण का प्रतिनिधि है उसका कार्य किस प्रकार होगा अथवा उसके क्या विचार होंगे।

बोध प्रश्न I

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) वे कौन से घटक हैं जो समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका को प्रभावित करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 समूह प्रक्रिया में समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका

समूह कार्य की सहायता प्रक्रिया में सदस्यों का परस्पर संवाद आपसी संबंध में बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। वे कभी भी स्थिर नहीं होते हैं। ये विशिष्ट प्रस्थितियों और समयानुसार बदलत हैं। अन्तरक्रिया और आपसी संबंधों में परिवर्तन और समूह में परिघटनाएँ और हान वाल परिवर्तनों को समूह प्रक्रिया के नाम से जानते हैं अथवा इन्हें समूह प्रक्रिया कहते ही सर कार्य प्रक्रिया में समाज कार्यकर्त्ता की भूमिका को 'दाई' (मिडवाइफ) का मामला भांति समझा जा सकता है जो प्रसूति के समय अपनी सहायता उपलब्ध कराता है। यह सुव्यवस्थिति प्रणाली वैज्ञानिक और उत्प्रेरक होता है। वह समूह कार्य प्रक्रिया के दौरान भागीदारी के माध्यम से अपने ज्ञान और अनुभवों को उपलब्ध कराती है। इसका अर्थ युवा समूह, उपचार समूह, प्रौढ़ समूह जहाँ भी आवश्यक होता है ये अपने संबंधों को सुधारते हैं। अपनी समस्याओं को समझते हुए समूह इनसे सहायता लेते हैं। सामुदायिक सेवाओं को सुधारने में समूहों को इनकी आवश्यकता होती है इन्हें व्यावसायिक समूह कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता होती है।

समूह के साथ कार्य करने में समाज कार्यकर्त्ता से यह आशा की जाती है कि वह प्रबुद्ध और कुशल व्यक्ति हो तथा विभिन्न भूमिकाओं को कुशलतापूर्वक निष्पादित करें। विशिष्ट भूमिका के संबंध में उसे स्वयं ही चयन (आदर्श रूप) करना चाहिए तथा उसे निर्णय लेना चाहिए कि दी गई स्थितियों में किस प्रकार से अपनी भूमिका को प्रभावी रूप से निभा सकता है। हम यहाँ पर समूह प्रक्रिया में समाज कार्यकर्त्ताओं को किस रूप और उनकी भूमिकाओं को किस रूप में निष्पादित करना चाहिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

- **समर्थन–कर्त्ता:** इस भूमिका में समूह कार्यकर्त्ता समूह के साथ 'सहायक' अथवा समर्थनकर्त्ता के रूप में उपस्थित रहता है, वह अपना कार्य समूह में,

समूह से बाहर रहकर अथवा समूह के साथ कार्य करता है। उसका प्रभाव प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष होता है। वह व्यैक्तिक या समूहों में उनकी आवश्यकताओं के साथ स्पष्ट रूप से संबद्ध हो जाता है, उनकी समस्याओं को स्पष्ट और पहचान करता है, वह कार्यनीतियों का निर्माणकर्त्ता है, उन्हें चयन करके लागू करता है, तथा उन्हें इस प्रकार से तैयार करता है या उनकी क्षमता को इतना शक्तिशाली व सक्षम बना देता है कि वे अपनी समस्याओं को स्वयं ही हल कर सकें उनको सामना करने में समर्थ हो सकें। एक समर्थन–कर्त्ता के रूप में कार्यकर्त्ता सदस्यों को उत्साहित और संगठित करता है तथा उनकी अपनी शक्ति और संसाधनों को इतना सशक्त बना देता है कि वे अपनी कठिन समस्याओं को स्वयं सुलझाने में समर्थ हो जाएँ।

- **ब्रोकरः** ब्रोकर की भूमिका में, कार्यकर्त्ता सामुदायिक संसाधनों, सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों की पहचान करता है ताकि समूह सदस्यों को उनकी योजनाओं को लागू करने में सहायता मिल सके। प्रायः यह देखा गया है कि विभिन्न समूह सदस्य उपलब्ध विभिन्न संसाधनों और सेवाओं के बारे में अनभिज्ञ रहते हैं अथवा उनको जानकारी नहीं होती है। एक ब्रोकर के रूप में, कार्यकर्त्ता सभी सदस्यों को संसाधनों, अर्हताओं व योग्यताओं का क्षेत्र तथा विशेष सेवाओं का प्रयोग करने के लिए उन्हें जागरूक बनाकर उनकी सेवा करता है।
- **पक्षकार (अधिवक्ता):** यह एक सक्रिय, निर्देशक की भूमिका का पालन करता है जिसमें कार्यकर्त्ता समूह की प्रत्यक्ष वकालत करता है। जब नागरिकों का समूह सहायता की आवश्यकता का अनुभव करता है तथा मौजूदा संस्थाएँ सेवाएँ उपलब्ध कराने की इच्छा रखती हैं या चाहती हैं, तब पक्षाकार की भूमिका समुचित रूप में निष्पादित की जाती हैं। समूह कार्यकर्त्ता संग्रहीत सूचनाएँ. मुवक्किल की आवश्यकता की वास्तविकता के लिए उचित तर्क और आवेदन तथा सेवा उपलब्ध न कराने वाली संस्था के विरुद्ध चुनौती

देने के लिए नेतृत्व प्रदान करके विवादित मामलों को हल कराने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जाता है।

- **कर्मठ कार्यकर्ता/सक्रियतावादी (Activist)** : जब सामाजिक उद्देश्यों को लक्ष्य बनाकर समूह निर्मित किया जाता है तब समूह कार्यकर्त्ता कर्मठ कार्यकर्त्ता/सक्रियतावादी के रूप में अपनी भूमिका निभाता है, सक्रियतावादी परिवर्तन चाहता है, प्रायः उसका उद्देश्य सीधा वंचित समूहों को शक्ति और संसाधनों से लैस करना होता है, सुविधावंचितों को सुविधा देने के लिए संघर्ष करता है। एक कर्मठ कार्यकर्त्ता अथवा सक्रियतावादी समूह कार्यकर्त्ता सामाजिक अन्याय, असमानता तथा शोषक एवं वचितों के संबंध में अपनी चिन्ताओं को व्यक्त करते हुए उनके लिए कार्य करता है। उसका लक्ष्य सामाजिक पर्यावरण को परिवर्तित करना और व्यक्ति को उसकी आवश्यकताओं को पूरी कराने के लिए भरसक प्रयास करना है।
- **मध्यस्थः** समाज समूह कार्यकर्त्ता प्रायः समूह सदस्यों, समूहों, समूह–समुदायों और समूह अभिकरण के बीच कड़ी का काम करता है। एक मध्यस्थ के रूप में कार्यकर्त्ता विवादों, मतभेदों, द्वंद्व, संघर्ष अथवा समूह के अंदर विरोधी विचारों के बिन्दुओं या सदस्य और कुछ अन्य लोग या संगठनों के साथ उपर्युक्त अवसरों पर भरपूर सहायता प्रदान करता है। मध्यस्थ की भूमिका समझौतों की खोज करना, मतभेदों को सुलझाना अथवा आपसी समझौतों में संतोषजनक अनुबंध तैयार करने जैसे कार्यों में शामिल होना और अपना अंतःक्षेप के साथ सहयोग करना है। वह समूह के सदस्यों के माध्यम से काम करता है और रामूह और अभिकरण के बीच संपर्क अधिकारी की स्थिति को प्राप्त कर लेता है। समाज समूह कार्यकर्त्ताओं के मूल्यों का प्रयोग गलत संचार पहचान करने और उसके स्पष्टीकरण करने अपनी नवीन और अनूठी योग्यता का परिचय देता है। उदाहरण के लिए, एक आवासीय केन्द्र में किशोरों के लिए समूह में तथा मनोरंजन गतिविधियों में

भागीदारी के लिए संघर्ष में शामिल दो लोगों की मदद करना है। एक और समूह में बाल देखभाल कार्यकर्त्ताओं के विवादों को हल करना होता है।

- **वार्ताकारः** वार्ताकार उन लोगों को एक साथ ले आता है जो किसी एक या एक से अधिक मुद्दों पर सहमत नहीं होते अथवा उनका कोई विवाद होता है। वह एक दूसरे की सहनति से सौदेबाजी करते हैं तथा एक दूसरे की सहमति से स्वीकार्य शर्तों पर अनुबंध करते हैं। किसी भी तरह मध्यस्था, समझौता इसमें शामिल होता है और सबकी सहमति से विवाद या मुद्दों का हल निकाल लिया जाता है। फिर भी न चाहते हुए भी मध्यस्थता करने वाले व्यक्ति की भूमिका निष्पक्ष होती है। परन्तु फिर भी समझौताकार किसी न किसी एक समूह के साथ जुड़ा होता है। समूह कार्यकर्त्ता अपनी भूमिका उसी समय निभाता है जब समय, स्थान, संसाधनों का स्रोतों के संबंध में समूह सदस्यों अभिकरण या समुदाय से तय हो जाता है।
- **शिक्षकः** सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका कार्यकर्त्ताओं से की जाती है वह सदस्यों के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होती है वह है शिक्षक। शिक्षक की भूमिका समूह सदस्यों को सूचनाएँ उपलब्ध कराना और उन्हें नई–नई तकनीकों और कौशलों की शिक्षा देना है। किसी भी शिक्षक का सफल या प्रभावी होना तभी संभव होता है जब कार्यकर्त्ता अच्छे जानकार और योग्य हों। इसके अलावा, वह स्त्री/पुरुष एक अच्छा संचारक या संप्रेक्षक का होना आवश्यक है जो अपनी सूचना को ठीक से बता दे और उसे उसी रूप में स्रोत से प्राप्त कर समझ सकें।
- **प्रवर्तक/सूत्रधारः** एक प्रवर्तक समस्या की ओर ध्यान दिलाता है। यहाँ तक संभावित समस्या के संबंध में भी आगाह कर देता है। यह महत्त्वपूर्ण है कि कुछ समस्या का पहले से ही पता लगाया जा सकता है। समूह कार्यकर्त्ता अपने अनुभव और ज्ञान आधार पर संभावित क्षेत्रों की घोषणा कर देता है और समूह सदस्यों को सभा समस्या के संबंध में बताते हुए उससे निपटने के लिए भी मार्ग प्रशस्त कर देता है अपनी भूमिका के अनुसार वह समस्या

पर चर्चा करता है और समस्या क्षेत्र के संबंध में कार्यवाही आरंभ कर देता है। प्रायः प्रवर्तक की भूमिका अन्य कार्यों को भी निष्पादित करती है क्योंकि केवल घोषणा करने मात्र से ही समस्या का हल नहीं निकलता है उसके लिए आगे काम करना पड़ता है।

- **शक्तिदाताः** समाज समूह कार्य का प्रमुख लक्ष्य सशक्तिकरण होता है। इस शक्तिदाता की भूमिका में वह समूह कार्यकर्त्ताओं की व्यैक्तिक और समूहों में उनकी व्यक्तिगत अन्तःव्यैक्तिक, सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीति शक्ति और प्रभाव को मजबूत बनाने के लिए उसे शक्ति प्रदान करने के लिए समस्याओं से निपटने के लिए वातावरण तैयार करता है।
- **संयोजकः** संयोजक एक प्रकार से उन घटकों को संगठित रूप में एकत्रित करता है। प्रायः अभिकरण की ओर से समूह कार्यकर्त्ता चाहते हैं कि संयोजक विभिन्न अभिकरणों से समूह सदस्यों को सेवाएँ उपलब्ध करवाएँ। समूह कार्यकर्त्ता समूह सदस्यों के बीच संयोजक का कार्य करता है जब विशेष रूप से समूह गठन करते समय या आरंभिक अवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- **समूह सुविधादाताः** एक समूह सुविधादाता समूह की क्रियाविधियों में नेता का कार्य भी करता है। समूह उपचार समूह, शैक्षिक समूह, स्वःसहायता समूह, संवेदनशीलन समूह, परिवार उपचार समूह अथवा किसी अन्य विषय पर केन्द्रित समूह का स्वरूप भी हो सकता है। सुविधा उपलब्ध करने की चर्चा और सहायक समूह सदस्यों के द्वारा कोई निर्णय निश्चित किया जाता है उस समय समूह कार्यकर्त्ता महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक सुविधादाता के रूप में वह प्रणाली विज्ञान की सुविधा भी उपलब्ध कराता है। वह प्रणालियों पर चर्चा नहीं करता है बल्कि प्रणालियों का प्रयोग करता है जिनका उपयोग समूह प्रक्रिया में किया जाता है। वह कभी भी अपने आपको समूह और उसकी समस्याओं के साथ संबद्ध नहीं करता है। जब उसके अपने मत की आवश्यकता होती है उस समय वह अपना स्पष्ट मत

देता है और जब उसकी समूह के सदस्य के रूप में विचार व्यक्त करने की बारी आती है, वह अपने विचार तुरन्त दे देता है।

- **संचारकर्त्ता और दुभाषियाः** समूह कार्यकर्त्ता लोगों के बीच संचार करने में विशेषज्ञ होता है, वह जानता है कि ''कैसे'' संचार किया जाता है। समूह कार्यकर्त्ता एक संचारकर्त्ता या दुभाषिए का कार्य उस समय करता है जब वह किसी के साथ पारस्परिक अथवा आंतरिक संबंध स्थापित करना चाहेगा। संचारकर्त्ता की भूमिका समूह में संचार सुविधाकर्त्ता से बिल्कुल अलग होती है। इस भूमिका में वह समूह या सदस्यों को वास्तविक सहायता इस रूप में देता है कि वह यह समझता है कि वास्तव में क्या संचारित किया गया है। कभी–कभी उसे दुभाषिया या भाषांतरण का कार्य भी करना पड़ता है या फिर अपने सदस्यों के समक्ष कहीं गई बात व वाक्यांशों को भी स्पष्ट करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, जब एक समूह अलग होना आरंभ कर देता है अथवा दूरी बनाना शुरू कर देता है, समूह उलझन में पड़ जाता है या किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है और यहाँ तक कि वह अपने उद्देश्य के प्रति संशक्ति हो जाने की अवस्था में समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका एक संचारकर्त्ता और दुभाषिया की हो जाती है। इसी प्रकार जब समूह सदस्य समूह में वास्तविक हित लाभ को देखने में असमर्थ हो जाते हैं या सब समूह से अत्यधिक उम्मीदें या लाभ की संभावनाएँ देखने लगते हैं, ऐसी स्थिति में संचारकर्ता वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करता है और उनकी अवधारणाओं को सरल रूप में प्रस्तुत करके उनकी शंकाओं का समाधान करता है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समूह प्रक्रिया में समाज कार्यकर्त्ता की समर्थन भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 विभिन्न स्थापनों में समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका

अब हम विभिन्न क्षेत्र स्थापनों में समूह कार्यकर्त्ताओं की भूमिका निष्पादन पर चर्चा करेंगे। जैसे कि हम जानते हैं कि समाज कार्य अभ्यास के विभिन्न क्षेत्र हैं। भारत में समाज कार्य व्यावसायिक समुदाय, समूहों, परिवारों तथा व्यैक्तिक रूप से जो वृद्ध, अपराधी, बेरोजगार या विकलांग व अक्षम हैं उनके साथ करना पड़ता है। समाज कार्यकर्त्ताओं की सेवाओं का व्यवहार के विभिन्न समूहों में विभाजित किया हुआ है जैसे कि वे जिससे भी संबद्ध हैं, वे विशिष्ट सामाजिक समस्याएँ, मुवक्किल समूहों की आवश्यकताओं को पूरा करने, या विशेष स्थापन समूह में कार्य कर सकते हैं। प्रमुख स्थापनों में परिवार और बाल कल्याण, स्वास्थ्य और पुनर्वास, मानसिक स्वास्थ्य, व्यावसायिक समाज कार्य, सामुदायिक विकास, शिक्षा या स्कूल समाज कार्य, सुधारों में समाज कार्य तथा वृहद या सत्तामूलक को शामिल किए जा सकते हैं। समाज समूह कार्य व्यवहार लगभग सभी स्थापनों में संभव हो सकता है। उसका ढाँचा या प्रकार स्थापन की आवश्यकताओं और प्रकृति के अनुसार अलग–अलग हो सकते हैं। इस तरह से विभिन्न स्थापनों में समाज समूह

कार्यकर्त्ताओं की भूमिका भी विभिन्न प्रकार की होगी। इस भाग में हम समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका को समझने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्र स्थापन क्षेत्रों की चर्चा करेंगे।

I) समुदाय विकास स्थापन में समाज समूह कार्यकर्त्ता

समुदाय स्थापन में समाज समूह कार्यकर्त्ता की कुछ विशेषताएँ हमारे मस्तिष्क में तब होती हैं जब हम समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका को निश्चित करते हैं। समुदाय स्थापन में समाज समूह कार्यकर्त्ता के प्राथमिक उद्देश्यों में शामिल हैंः स्व–सहायता तथा आपसी सहयोग कार्यक्रमों में भागीदारी के माध्यम से स्थानीय आस–पड़ोस के स्तर पर समुदाय को सामाजिक रूप में एकीकृत करना; लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना विशेषकर उन लोगों का जो शारीरिक रूप से प्रभावित और सामाजिक विकास से वंचित हैं, सामुदायिक संसाधनों और स्थानीय प्रोत्साहन के अधिकतम उपयोग पर आर्थिक सुधारमूलक कार्यक्रमों के लिए अवसरों का सृजन करना, उन्हें संगठनात्मक कौशलों और विभिन्न तकनीकी, सामाजिक और कल्याणकारी सेवाओं का पता करना और उनका भरपूर उपाय करने में समर्थ बनाना। जिस समुदाय से संबद्ध हैं उसके विकास के विचार और जानकार पर बल देते हए स्थानीय नेताओं की पहचान तथा विकास करना है। समुदाय स्थान कार्य, स्व–सहायता समूह, मनोरंजन समूह, कार्य व सक्रिय समूह के स्वरूप आदि होते हैं।

समाज समूह कार्यकर्त्ता को संगठनकर्त्ता की भूमिका में अत्यधिक संबद्ध समूहों में एक समुदाय के विभिन्न भागों को संगठित व जुड़ाव करने का उसमें समुचित कौशल होना अत्यंत आवश्यक है। उसे मनोरंजनात्मक, सांस्कृतिक और अन्य गतिविधियों में भागीदारी के माध्यम से समूह सदस्यों के व्यक्तित्व विकास के लिए आयोजन करना, उनको संगठित करना है। उसका इस भूमिका में प्राथमिक कार्य, उस समूह संगठनों से जिम्मेदार नेतृत्व का विकास करना है। कार्यकर्त्ता के लघु स्तर या नीचे के स्तर पर संचालन करने का अनुभव प्राप्त करना प्रमुख कार्य है

जिसे उसने आंतरिक समूह स्तर पर प्रमुख कार्य निष्पादन करना है। इसमें यह निश्चित करना कि आन्तरिक–समूह विरोधी कम से कम स्तर पर हों, आन्तरिक–समूह सहयोग को बढ़ावा देना, प्रत्येक समूहों के उद्देश्यों की तुलना के साथ सम्पूर्ण समुदाय, संचार सुविधाओं आदि के उद्देश्यों की तुलना करना नितांत आवश्यक है। समूह कार्यकर्त्ता के लिए एक और महत्त्वपूर्ण भूमिका है जिसे "स्रोत व्यक्ति'' के नाम से जाना जाता है। इसमें समुदाय के अन्दर और उसके बाहर के विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी आवश्यक है जिसका प्रयोग वह समुदाय सदस्यों के कार्यों के पूरा करने के लिए प्रयोग में ला सकेगा। समूह कार्यकर्त्ता को नागरिक प्रशासन और लोगों के बीच एक बड़ी कड़ी का काम करना है, विशेषकर उसके कार्य की प्रारंभिक अवस्था में महत्त्वपूर्ण है। इसके पश्चात् तथापि 'जनसंपर्क कार्यों' की यह भूमिका समूह सदस्यों के पास स्थानान्तरण हो जाती है।

उपर्युक्त बताई गई भूमिका के निष्पादन में समुदाय स्थापन में समाज समूह कार्यकर्त्ता का 'प्रबंधन विशेषज्ञता' की भूमिका निभानी भी अत्यंत आवश्यक होती है। इस भूमिका में, उसे कार्यालयी प्रबंधन के क्षेत्र में समूह नेताओं और अन्य सदस्यों के साथ अपने कौशल का भागीदार बनाना है जिसमें पत्र लिखना, फाइलों के कार्य की प्रक्रिया, आधारिक लेखा, बैठकों का रिकार्ड लिखना तथा प्रारंभिक जन संपर्क और धन राशि के अर्जन करने के साधनों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देना हैं, उन्हें उपर्युक्त कार्यों में सक्षम बनाना शामिल है।

II) संस्थागत स्थापनों में समाज समूह कार्यकर्त्ता

संस्थागत स्थापन में समाज समूह कार्यकर्त्ता अपने फालतू समय का सकारात्मक प्रयोग करने के लिए अवसर उपलब्ध कराकर अपना सहयोग देता है। इसके अतिरिक्त उसके सहयोग से समूह, संस्थागत जीवन की प्रकृति को समझ सकते हैं और फिर इस योग्यता को संस्थान की सेवाओं के प्रयोग को सकारात्मक बनाते हुए अनेक संस्थागतों को यह सुविधा सुलभ कराने में सहयोग दिया जा सकता है। संस्थागत जीवन समूह जीवन होता है। यह जीवन्त समूह, विद्यालय समूह, कार्य

समूह, फालतू–समय समूह, मित्र मण्डली समूह, सम–आयु समूह और अन्य समूहों के व्यापक विभिन्न लोगों का समूह होता है। समूह कार्यकर्त्ता को संस्थानों की सफलता के लिए इन समूह संबंधों का सकारात्मक प्रयोग में विशेष कौशल की आवश्यकता होती है। कुछ ऐसे संस्थान हैं जोकि समूह कार्यकर्त्ता के कौशलों का दोष–सुधार संस्थाओं, मानसिक रूप से या मन्द बुद्धि, तथा विकलांग व्यक्ति, वृद्ध आश्रम, बालगृहों में उपयोग किया जा सकता है। समूह कार्यकर्त्ता विभिन्न संस्थानों में उनके विभिन्न कार्यों के अनुरूप अपनी भूमिका निभाता है जिसमें उसकी नियुक्ति होती है।

जैसा कि हम बता चुके हैं कि समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका दोष सुधारात्मक संस्थानों तक ही सीमित नहीं है। उसका ज्ञान और कौशल सम्पूर्ण मौजूदा स्थितियों के लिए सहायक है वह समूह व्यवहार के बहु आयामों को समझने में संस्थान की सहायता कर सकता है जैसे कि वह संस्थान को केस कार्य उपलब्ध कराकर व्यक्तिगत के उपचार को समझने में महत्त्वपूर्ण यागदान दे सकता है। समाज समूह कार्यकर्त्ता संस्थागत स्थापना में विशेष सहायता और साथ दे सकता है जिसमें अन्य स्टाफ के लोग जैसे कि घरेल माता–पिता, संस्थान के संरक्षक या परामर्शक जो प्रत्यक्ष रूप से समूह जीवन प्रक्रिया से जुड़े होते हैं।

फिर भी संस्थागत स्थापना में समाज समूह कार्यकर्त्ता की एक और महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है जो समूह के कुछ विशिष्ट समस्या पर ही प्रत्यक्ष कार्य करना होता है, उदाहरण के लिए, किसी को संस्थान से छुट्टी दिलवानी है, किसी को भर्ती करवाना है, किसी के साथ विशेष व्यवहार संबंधी समस्या है, या फिर व्यापक संवेदनात्मक सहायता की आवश्यकता है, इन सब कार्यों को जो दैनिकी होती है संस्था के लोग पूरी नहीं कर सकते हैं। इस संदर्भ में समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका विशेष सेवाओं की निगरानी और संयोजन करना होता है जिन्हें गृह संरक्षक करने में असमर्थ होते हैं किन्तु ये सब समूह जीवन अनुभवों से संबंधित होती है। यह महत्त्वपूर्ण है कि समाज कार्यकर्त्ता सामाजिक संबंधों को व्यक्तिगत रूप के लिए

अच्छे उपचार को ध्यान में रखते हुए इन सेवाओं का संयोजन किया जाता है ताकि संबंधित लोगों के उपचार का ध्यान केन्द्रित किया जा सके।

संस्थागत स्थापन में समूह कार्यकर्त्ता समुदाय में मनोरंजन और समूह संस्था स्रोतों का परामर्श के लिए अपनी भूमिका निभाता है। वह स्वयं सेवाओं के साथ भी सम्पर्क बनाए रखता है यदि उनका संस्थागत आवासीय लोगों के संबंधियों के समूह के कार्य करने का लाभ उठा सकते हैं। इसे और अधिक समझने के लिए कुछ संस्थागत स्थापन में समाज समूह कार्यकर्त्ता के बारे में चर्चा करेंगे।

III) नैदानिक स्थापन में समाज समूह कार्यकर्त्ता

अस्पतालों और क्लिनिकों में समाज समूह कार्यकर्त्ता चिकित्सक, मनश्चिकित्सक, मनोविज्ञानी, थियोरोपिस्ट, नर्स और सामाजिक केस कार्यकर्त्ता से निर्मित टीम का सदस्य बन जाता है। इस प्रकार की उपचार लक्ष्यों को परिभाषित करते हुए सेवा का उद्देश्य समुदाय स्थापन की तुलना में और अधिक महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट हो सकता है। यह सेवा और अधिक केन्द्र बिन्दु पर आधारित है और समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका की प्रणाली भी और अधिक विशिष्ट बना देती है।

चिकित्सा स्थापन में समाज कार्यकर्त्ता समूह कार्य और केस कार्य प्रणाली का प्रयोग करते हुए अपनी प्रत्यक्ष सेवाओं को विस्तार देता है। चिकित्सा स्थापन में समाज कार्यकर्त्ता समूह कार्य और अन्य भूमिकाओं का निष्पादन करता है जैसे कि:

i) समान समस्या वाले रोगी को एक साथ करना और उन्हें अपनी समस्याओं से निपटने के लिए उनका अकेलापन कम करना;

ii) संबंध बनाने की भावना पैदा करना और समुदाय का हिस्सा बनाकर उनमें साहस और विश्वास जगाना तथा समुदाय से बाहर व्यापक संयोजन करना;

iii) आपसी स्वीकार्य और सहमति के वातावरण में समस्याओं के साथ कार्य करना।

iv) आपसी भागीदारी के प्रक्रिया के माध्यम से व्यवहारात्मक परिवर्तन और भावनाओं के विकास के लिए चिकित्सकीय कार्य करना।

IV) विद्यालय स्थापन में समाज समूह कार्यकर्त्ता

विद्यालय स्थापन निश्चित रूप से समूह स्थापन है तथा अध्यापक समूह कार्य है। विद्यालय के कर्मचारी बच्चों की सहायता के रूप में समाज कार्यकर्त्ता हैं जो विद्यालय में समस्याएँ जो बच्चों में सामाजिक और संवेदनात्मक घटकों को जन्म देती हैं तथा परिवार और सामाजिक वातावरण को प्रभावित करती हैं। भारत में अनेक विद्यालय है जो विद्यालय समाज कार्यकर्त्ताओं को केस कार्यकर्त्ता, परामर्शक और समूह कार्यकर्ता के रूप में इनके महत्त्व को मान्यता प्रदान करते हैं। विद्यालय समाज कार्यकर्त्ता चार पक्षों के साथ यानी बच्चा, परिवार, विद्यालय स्टाफ और समुदाय के साथ कार्य करता है। जब उनके साथ यह कार्य करता है उस समय अपने ज्ञान, और केस कार्य तथा समूह कार्य का प्रयोग करता है।

विद्यालय समाज कार्यकर्त्ता शैक्षिक स्थापन में विभिन्न कार्यों को निष्पादित करता है। वह जब भूमिकाओं का पूरा करता है उस समय वह समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका निष्पादित करता है।

समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका में समूह कार्य गतिविधियों के माध्यम से समूह समायोजन को उन्नत करता है। वह मनोरंजन, नाटक, कहानी कहना, समूह व्यवहार या अभ्यास आदि का आयोजन करता है इससे विद्यालय के बच्चों में सामाजिक भागीदारी और सकारात्मक समूह अंतःक्रिया या परस्पर संवाद की क्षमता में वृद्धि होती है। मार्गदर्शित समूह अंतःक्रिया संकाय को संबद्धता आपसी संबंध स्थापित करना और बच्चों में पहचान की भावना पैदा करना होता है। यह उनके सामाजिक समायोजन और उनके व्यक्तित्व विकास के सुधार में भी सहायता करता है।

विशेष विद्यार्थी समूहों के साथ, विद्यालय समाज कार्यकर्त्ता बच्चों और किशोरों के विशेष रूप से निर्मित समूहों के साथ समाज और शैक्षिक समायोजन में कठिनाई अनुभव करता है और अपने कार्य को विस्तारित करता है। वह उन बच्चों पर विशेष ध्यान देता है जो विद्यार्थी कुछ उपलब्धि नहीं कर पाते, अविच्छिन्न तथा विद्यालय छोड़ देते हैं या फिर लाभदायक समाज समूह की भागीदारी से विलग हो जाते हैं। वह यह निश्चित करता है कि एकाकी, अलग–थलग तथा विकलांग बच्चों को विशेष दिलचस्पी या मनोरंजनात्मक समूहों में भागीदारी के लिए अवसर उपलब्ध कराता है।

विद्यालय समाज कार्यकर्त्ता का एक और महत्त्वपूर्ण कार्य शैक्षिक मूल्य कक्षाएँ और नेतृत्व विकास कार्यक्रमों का आयोजन करता है। समूह कार्य गतिविधियों के माध्यम से सहयोग, टीमवर्क, भूमिका निभाना आदि के बारे में नवीनता का सृजन करता है। विद्यालय समाज कार्यकर्त्ता समूह कार्य प्रणाली का प्रयोग करता है जब वह नाटकों, कठपुतली बनाना, अन्य शगल या शौक या समुदाय सेवा परियोजना जैसी गतिविधियों में विशेष दिलचस्पी समूहों के साथ कार्य करता है या फिर उनका नेतृत्व करता है, वह विभिन्न गतिविधियों में विद्यार्थियों को भागीदारी के लिए उत्साहित करता है ताकि समान समूह और युवाओं के साथ व्यापक समस्तर एवं संबंधों के विस्तार दिलाने की भावना पैदा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

V) बच्चों और किशोरों के लिए संस्थानों में समाज समूह कार्यकर्त्ता

हमारे देश में सरकार और स्वैच्छिक संगठन दोनों ही बच्चों और युवाओं के लिए संस्थागत सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं। हमारे यहाँ आवारा बच्चों आदि के लिए प्रेक्षण गृह और अनाथालय हैं। ये संस्थाएँ ऐसे स्थान नहीं हैं जिनमें बच्चों/या युवाओं को केवल भोजन वस्त्र उपलब्ध कराते हैं बल्कि और उन्हें परिवार में पुनः स्थापना के लिए भी तैयार किया जाता है। संस्थागत देखभाल का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा यह है कि ये लोग समूह स्थितियों में सब लोग एक साथ रहते हैं जिसका

समाजीकरण के उद्देश्य को पूरा करने के लिए सकारात्मक प्रयोग किया जाता है और बच्चों को जीवनमूलक कौशलों की शिक्षा प्रदान की जाती है।

बाल आश्रमों या बाल अनाथालयों में समूह कार्यकर्त्ताओं की एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वह बच्चों और किशोरों के समूह में कार्य करता है, यह स्थिति बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती हैं जो संस्थान के बाहर उपलब्ध नहीं हो सकती है। ये बच्चे अपने परिवार की अनुपस्थिति में रहते हैं तथा उन्हें उन सभी सुविधाओं की आवश्यकता होती है जो उन्हें घर पर मिलती हैं तथा इसके साथ ही उन कठिनाइयों जैसे अकेलेपन के समाधानों को सलझाने के लिए भी अनेक सहायताओं की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही संस्थान से जुड़ी उन सुविधाओं को भी देना है जो उन बच्चों के जीवन में आगे की योजना में काम आएंगी। इसलिए शैक्षिक, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य विशेष सुविधाओं को भी देना होता है।

संस्थागत दल में समाज समूह कार्यकर्त्ता के कार्यों के दो पक्ष होते हैं। समूह जीवन स्थिति में सहायता करना तथा विशेष समूहों के साथ संपर्क स्थापित करना होता है। उसके कार्यों में निम्नलिखित शामिल होते हैं:

i) संस्थान के अंदर बच्चों के निर्मित समूह के साथ सीधा समूह कार्य करना

ii) जहाँ संभव हो माता–पिता समूहों के साथ कार्य करना

iii) समूह जीवन के हिस्से के रूप में मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए सहयोग और सहायता करना।

iv) बाल देखभाल करने वालों की निगरानी और संयोजन करना (कभी–कभी गृह–संरक्षक को इस के लिए बुलाते है।

v) संस्थान में रहने वाले बच्चों के समूहों में जो स्वयंसेवक काम करते हैं, उनका पर्यवेक्षण करना।

vi) जब बच्चा संस्थान के अंदर है अथवा यह संस्थान छोड़ने की योजना बना रहा है ऐसी स्थिति में समुदाय के अंदर समूह संस्थाओं के लिए संसाधनों की उपलब्धता के बारे में परामर्श देने की जिम्मेदारी होती है।

vii) व्यक्ति के निदान में भाग लेना, संस्थान में स्थापित करना या उसमें रखना, बच्चों का समूह बनाने, उनके ईलाज की योजना तैयार करने और देखभाल के पश्चात् की योजना में सहयोग देना महत्त्वपूर्ण कर्तव्य होता है।

viii) कभी–कभी समाज समूह कार्यकर्त्ताओं को परिचर्चा का आयोजन करना होता है अथवा वे बच्चे जो नकारात्मक प्रवृत्ति और विचारधारा के होते हैं या फिर युवाओं से संबंधित कठिनाइयों के समाधान के लिए चिकित्सीय व्यवस्था करते हैं, इसमें सक्रिय समूहों की भागीदारी रहती है।

VI) वृद्धों के लिए सेवारत समाज समूह कार्यकर्त्ता

समाज समूह कार्यकर्त्ता वृद्धों के लिए काम करते हैं, इसका आयोजन सामुदायिक और एजेंसी दोनों के द्वारा सम्पन्न किया जाता है। समूह कार्यकर्त्ता प्रायः किसी विशेष समूह से सीधा जुड़ा होता है। इसी समय कार्यकर्त्ता अप्रत्यक्ष रूप से वृद्धों के लिए कार्य करने वाले स्वयंसेवक के साथ भी सहयोग करता है इन दोनों मामलों में यह स्पष्ट हो जाता है कि मौजूदा समूह को सहयोग देने के लिए विशेष समूहों की स्थापना होती है। वृद्ध लोगों की अनेक समस्याएँ संस्थान में प्रवेश के साथ ही तेजी से बढ़ने लगती हैं। सभी लोग जो संस्थाओं से जुड़े होते हैं वे यह जानते हैं कि वृद्ध लोगों की सामान्य सामुदायिक जीवन से लाया जाता है, जिसका केन्द्र उनका परिवार होता है, इससे वृद्धों की समस्याओं में वृद्धि होना स्वभाविक होता है। वे लोग प्रायः अपनी क्षमता को खो चुके होते हैं। उनकी प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान को चुनौतीपूर्ण वातावरण का सामना करना पड़ता है। इसलिए वृद्धों के साथ समूह कार्य का प्रायः उद्देश्य निम्न प्रकार होता हैः

i) इसमें भागीदार लोगों की स्व–प्रतिष्ठा को उन्नत करने में सहयोग देना,

ii) योजना बनाने के लिए अवसर प्रदान करना

iii) उनका अपने छोटे समुदाय का हिस्सा बनाना और यदि संभव हो सके तो व्यापक समुदाय का भागीदार बनाने का प्रयास करना।

vi) समूह से जोड़ने का प्रयास करना ताकि वह पारिवारिक संबंधों में परिवर्तित हो जाए।

सामुदायिक आधारित एजेंसियों में विशेष समूह कार्यकर्त्ता का कार्य वृद्धों को निम्नलिखित सेवाएँ उपलब्ध कराना है:

i) वृद्ध समूह की आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न प्रकार के समूहों के लिए कार्यक्रम का पूर्वाकलन करना।

ii) वृद्धों के कुछ समूहों के साथ प्रत्यक्ष कार्य करना विशेषकर जिनकी वर्तमान संबंधों के साथ समस्याएँ पैदा हुई हैं।

iii) सभी समूह कार्य में समूह से बाहर व्यैक्तिक संपर्क स्थापित करना, परन्तु विशेष आयु वर्ग में और अधिक तेजी के साथ सम्पर्क हो।

iv) स्वयंसेवकों या वृद्धों के लिए अंशकालिक कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण, संयोजन और पर्यवेक्षण करना।

v) यदि निवेदन किया जाता है तो अपने व्यैक्तिक रूप समाज कार्य के संबंध में वृद्ध नागरिकों की समितियों को परामर्श देना।

वृद्ध लोगों के लिए बनी संस्थाओं में समाज समूह कार्यकर्त्ता के निम्नलिखित कार्य हैं:

i) जो लोग संस्थान के समूह जीवन में आसानी से प्रवेश नहीं कर सकते उनकी विशेष सहायता के लिए निर्मित समूह के साथ प्रत्यक्ष कार्य करना।

ii) संस्थान में उत्तम और विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने की जिम्मेदारी निभाते हुए व्यैक्तिक आवश्यकताओं को पूरा करने तथा जो संस्थान में शामिल हो गए हैं उनके लिए समुदाय से अलग होने की भावनाओं को प्रभावविहीन करने का कार्य करना। इस कार्य का निष्पादन आमतौर पर चाहे परामर्श से एक या अनेक संस्थानों के कर्मचारियों से कराया जाए।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) चिकित्सीय स्थापना में समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 सारांश

इस इकाई का उद्देश्य आपको समाज समूह कार्यकर्त्ताओं की भूमिका के संबंध में जानकारी प्रदान कराना था। अब आप समूह कार्य स्थिति में समूह कार्यकर्त्ता की हैसियत और समाज समूह कार्य में उसकी प्राथमिक भूमिका से परिचित हो गए हैं। अब आप जान गए हैं कि समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका, समूह लक्ष्य की प्रकृति, जिस स्थापन में संचालन कार्य करता है, एजेंसी का प्रकृति, उसका हित लाभ, आवश्यकताएँ, क्षमताएँ तथा समूह सदस्यों की सीमाओं की विभिन्नताओं इत्यादि पर निर्भर करता है। आप समूह कार्य प्रक्रिया में किस प्रकार से समूह कार्यकर्त्ता अपनी भूमिका निभाता है, उसका वर्णन करने में समर्थ होंगे। समाज समूह कार्य अभ्यास अधिकतर क्षेत्र स्थापनाओं में ही संभव होता है। हम कुछ महत्त्वपूर्ण स्थापनाओं में समाज समूह कार्यकर्त्ताओं की भूमिकाओं के संबंध में चर्चा कर चुके हैं। अब आप विभिन्न स्थापनाओं में समूह कार्यकर्त्ताओं की भूमिकाओं के विभिन्न विविधताओं का ज्ञान और उसकी जानकारी प्राप्त कर चुके हैं तथा उसके विभेदों के ज्ञान से लैस हो गए हैं।

3.6 शब्दावली

समूह कार्यकर्त्ता : ज्ञान, कौशल और मूल्यों से लैस सहायक व्यक्ति।

भूमिका : कार्यों को पूरा करते समय व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला कार्य।

समूह प्रक्रिया : समूह जीवन में पैदा होने वाले समूह के सम्पूर्ण अंतःकार्य, विकास और परिवर्तन के कार्यकलाप।

क्षेत्र स्थापना : आसपास का वातावरण या पर्यावरण तथा स्थितियाँ जिसमें व्यक्ति समाज कार्यसेवाएँ उपलब्ध कराता है।

संस्थान : एक संगठन या स्थापना जो विशेष कार्यों या कार्यक्रमों को बढ़ावा व प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ट्रिकर हरलिग बी.(1970), सोशल ग्रुप वर्कः प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिसज, एसोसिएशन प्रेस, न्यूयार्क।

डौगल्स टॉम (1979), ग्रुप प्रोसेसज इन सोशल वर्क, जोहन विले एंड संस चिकेस्टर।

कोनोप्का, गिसेला (1963), सोशल ग्रुप वर्कः ए हैल्पिंग प्रोसेस, पेंटिस हाल, इंक, एंगलवुड क्लिफस, एन. जे.।

कोनोप्का, गिसेला (1954), ग्रुप वर्क इन दि इंस्टीट्यूशन, एसोसिएशन प्रेस, न्यूयार्क।

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) समाज समूह कार्यकर्त्ता की भूमिका उस समूह और स्थितियों पर निर्भर करती है जिसमें वह कार्य करता है। कार्यकर्त्ताओं की भूमिका को प्रभावित करने वाले प्राथमिक घटक निम्न प्रकार हैं:

i) समुदाय स्थापन

ii) अभिकरण की प्रकृति, उसके कार्यक्रम और क्षेत्र

iii) अभिकरण के द्वारा दी जाने वाली सुविधाएँ और कार्यक्रम

iv) समूह का प्रकार जिसमें वह काम कर रहा है।

v) व्यक्तिगत सदस्य के हित लाभ, आवश्यकताएँ, योग्यताएँ और सीमाएँ।

vi) कार्यकर्त्ता का कौशल और उसकी सक्षमता तथा

vii) समूह कितनी सहायता चाहता है उसकी मात्रा और कितनी सहायता लेने की इच्छा है जो उसे एक कार्यकर्त्ता से लेनी है।

उपर्युक्त ये घटक प्रत्येक समूह की स्थिति में संचालित होते हैं। इसके अतिरिक्त कार्यकर्त्ता अलग से इन घटकों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करता है और जब वह अपनी भूमिका के मुख्य बिन्दु पर निर्णय लेता है तब इन संबंधों को एक–दूसरे से तुलना करते हुए उनसे वह प्रभावित होगा।

बोध प्रश्न II

1) समाज समूह कार्यकर्त्ता समूह प्रक्रिया में विभिन्न भूमिकाएं निभाता है। समर्थन कर्त्ता इस भूमिका में, समूह कार्यकर्त्ता समूह के साथ सहायक अथवा समर्थनकर्त्ता के रूप में उपस्थिति रहता है। वह अपना कार्य समूह में, समूह से बाहर अथवा समूह के साथ करता है। उसका प्रभाव प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष होता है, वह व्यैक्तिक या समूहों, उनकी आवश्यकताओं के साथ स्पष्ट रूप से संबद्ध हो जाता है, उनकी समस्याओं को स्पष्ट करता है और उनकी पहचान करता है। वह कार्यनीतियों का निर्माण करता है उन्हें चयन करके लागू करता है। एक समर्थनकर्त्ता के रूप में कार्यकर्त्ता सदस्यों को उत्साहित और संगठित करता है तथा उनकी अपनी शक्ति और

संसाधनों को इतना सशक्त बना देता है कि वे अपनी कठिन समस्याओं को स्वयं सुलझाने में समर्थ हो जाएँ।

बोध प्रश्न III

1) इस चिकित्सीय स्थापन में समाज कार्यकर्त्ता समूह कार्य और अन्य भूमिकाओं का निष्पादन कर सकता है, जैसे कि:

   i) समान समस्या वाले रोगी को एक साथ करना और उन्हें अपनी समस्याओं से निपटने के लिए उसका अकेलापन कम करना।

   ii) संबंध बनाने की भावना पैदा करना और समुदाय का हिस्सा बनाकर उन्हें साहस और विश्वास जगाना तथा समुदाय के बाहर व्यापक संयोजन करना।

   iii) आपसी स्वीकार्य और सहमति के वातावरण में समस्याओं के साथ कार्य करना।

   iv) आपसी भागीदारी की प्रक्रिया के माध्यम से व्यवहारात्मक परिवर्तन और भावनाओं के विकास के लिए चिकित्सीय कार्य करना।